A Descriptive Catalogue OF Sanskrit Manuscripts of Orissa

VOLUME V.

TANTRA MANUSCRIPTS.

Sri Mahesh Prasad Dash.

A
DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF
SANSKRIT MANUSCRIPTS OF ORISSA

IN THE COLLECTION
OF
THE ORISSA STATE MUSEUM
BHUBANESWAR.

VOLUME V.

TANTRA MANUSCRIPTS

Compiled by :

Sri Mahesh Prasad Dash, M. A.
CURATOR,
Orissa State Museum, Bhubaneswar-1.

Published by :

The Assistant Director,
ORISSA STATE MUSEUM,
BHUBANESWAR-1
1965.

PRICE Rs.10/-

Contents

S. No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/souree	Page.
1	T/1	आगम संक्षिप्तसार:	द्विजानन्द	1
2	T/79	आचारसारतन्त्रम् and others	... ...	3
3	T/3	आनन्द लहरी	शङ्कराचार्य्य	4
4	T/12	उग्रतारा पद्धति: or महोग्रतारासपर्य्याविधि:	दामोदरानन्द	5
5	T/57 (c)	उग्रतारा पद्धति:	दामोदरानन्द	6
6	T/39 (a)	उग्रतारा पूजा	... ...	7
7	T/58	उड्डामरेश्वर तन्त्रम्	... ...	7
8	T/4 (a)	उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्	... ...	8
9	T/45	उड्डीश तन्त्रम्	... ...	9
10	T/20 (a)	उड्डुभास्वर तन्त्रम् or उड्डामरेश्वर महाकोष:	... ...	10
11	T/15 (c)	उत्तर तन्त्रम्	... ...	12
12	T/41	एकजटा स्तोत्रराज: and others	... ...	13
13	T/56	कात्यायनीतन्त्रोक्तप्रयोग: and others	... ...	15
14	T/44 (b)	कालीकवचम्	... ...	15
15	T/15 (a)	कालीतन्त्रम्	... ...	16
16	T/23	कालीस्वरूपसहस्रनाम	आदिनाथ	18
17	B.S/46 (b)	कालीसहस्रनाम	आदिनाथ	19

S. No.	Cat. No.	Name of the Manuscript.	Name of the author/source	Page
18	T/33	कुमार तन्त्रम	रावण	20
19	T/9 (b)	कुमारी तन्त्रम्	... ...	21
20	T/15 (b)	-do-	... ...	23
21	T/57 (c)	-do-	... ...	24
22	T/29 (a)	कुलसर्वस्वम्	कविशेखर	24
23	T/48 (g)	कुलसर्वस्व सहस्रनाम	According to तारकुलसर्वस्व	29
24	T/9 (e)	कुलार्ण्णव महारहस्यम्	... ...	30
25	T/6	कृत्यपल्लव दीपिका or षट्कर्म दीपिका	कृष्णविद्या वागीश भट्टाचार्य्य	32
26	T/76	गौतमीय महातन्त्रम्	... ...	33
27	T/19	चण्डीप्रयोग: & others	... ...	36
28	B.S/46 (a)	चण्डीपाठ विधानम् and others	According to मारीचकल्प	37
29	T/26	छिन्नमस्ता यन्त्रम् & others	...	37
30	T/74	तन्त्रतत्त्वसार:	दीननाथभूसुर	38
31	T/54 (b)	तन्त्ररन्त्रम्	... ...	39
32	T/25	तन्त्रसार:	महामहोपाध्याय कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य	40
33	T/50	-do-	-do-	41
34	T/65	-do-	-do-	43
35	T/69	-do-	-do-	44
36	T/71	-do-	-do-	45
37	T/70	-do-	-do-	46
38	T/72	-do-	-do-	47
39	H/14	-do-	-do-	48
40	T/64	तन्त्रोक्त पूजा and others	According to कालीकुल सर्वस्वम	48

S. No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page
41	T/66	तन्त्रोक्तस्तव कवचम् & others	... ...	49
42	T/67 (a)	तन्त्रोक्तस्तोत्रकवचम्	... ...	50
43	T/35 (a)	तारार्च्चन तरङ्गिणी	राम	51
44	T/44 (c)	ताराकर्पूरम् & others	... ...	53
45	T/68	तारापूजा विधिः & others	...	53
46	T/37 (b)	तारा रहस्यम्	शङ्कराचार्य्य	54
47	T/48 (b)	-do-	,,	55
48	T/7	तारासपर्य्या विधिः	... ...	55
49	T/37 (a)	तारासहस्रनाम	According to तारकुलसर्वस्व	56
50	T/48 (a)	-do-	... ...	57
51	T/15 (d)	त्रिपुरासार समुच्चयः	नागभट्ट	57
52	T/42	दक्षिणकालिकामंत्रम् & others	... ...	58
53	T/17	दक्षिणकालिका अर्च्चाविधिः	... ...	60
54	T/38	दक्षिणकालिका पूजा	... ...	60
55	T/40	-do-	... ...	61
56	T/43	-do-	... ...	62
57	T/46	-do-	... ...	62
58	T/53	-do-	... ...	63
59	T/55	-do-	according to श्यामारहस्य कविशेखर	63
60	T/32	दक्षिणकालिका स्वपर्य्याविधिः	... ...	64
61	H/10	-do-	and others	65
62	T/29 (b)	दक्षिणकालिका सहस्रनाम	आदिनाथ	65
63	T/48 (c)	दशमहाविद्या मन्त्रयन्त्रोद्धारः	According to मन्त्रचिन्तामणिः	66

S No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page.
64	Sms/37	दीक्षाविधिः	According to परमानन्द तन्त्रम	66
65	T/5	दुर्गायजनदीपिका	जगन्नाथ आचार्य्य	68
66	T/51	दुर्गोत्सवचन्द्रिका	भारतीभूषण वर्द्धनाचार्य्य महापात्र	70
67	T/81	दुर्गोत्सवचन्द्रिका	वर्द्धन महापात्र	72
68	T/74	देवीपूजा	...	74
69	T/24	देवीमाहात्म्यम् & other stotras	...	75
70	T/29 (c)	निरुत्तर तन्त्रम्	...	76
71	T/35 (c)	-do-	...	77
72	T/57 (b)	-do-	...	77
73	T/44 (d)	नीलसूक्तम्	...	78
74	Sms/38	पाशुपत तन्त्रम्	...	78
75	T/31	पुरश्चरण दीपिका	चन्द्रशेखर	81
76	H/9	प्रत्यङ्गिरसकल्पः	मान्त्रिकप्रवर भूसुर	83
77	T/77	प्रपञ्चसार तन्त्रम्	...	85
78	B.S./5	प्राणतोषिणी तन्त्रम्	रामतोषण	88
79	T/48 (d)	भुवनेश्वरी पूजा	...	88
80	T/52	-do-	According to तन्त्रसारः	89
81	T/9 (f)	भुवनेश्वरी प्रकाशः	वासुदेव रथ	90
82	T/49	-do-	-do-	90
83	T/8 (a)	मुण्डमाला तन्त्रम्	...	92
84	T/9 (a)	-do-	...	94
85	Sms/36	मृड़ानी तन्त्रम्	...	94
86	T/4 (d)	यन्त्रचिन्तामणिः	शिव योगीश्वर	95

S. No.	Cat. No.	Name of the Manuscript.	Name of the author/source	Page
87	T/20 (d)	यन्त्रचूड़ामणि:	...	95
88	T/2 (b)	योगसर्वस्वम्	...	96
89	T/9 (c)	योगिनी तन्त्रम्	...	97
90	T/35 (b)	योनि तन्त्रम्	...	99
91	T/34	रसरत्नाकर:	पार्वतीपुत्र नित्यनाथ	101
92	T/48 (e)	वक्रतुण्ड महाकल्प:	according to आङ्गिरसकल्प:	102
93	T/60	वन्दीमोक्षण स्तोत्रम् & others	According to सनत्कुमार तन्त्रम्	103
94	T/30	विद्यापद्धति:	कृष्णमिश्र	104
95	T/48 (f)	विनायक महामन्त्रम्	...	104
96	T/4 (b)	शल्यतन्त्रम्	...	104
97	T/11	शारदा तिलकम् with मन्त्रयन्त्र प्रकाशिका टीका	लक्ष्मण देशिक शिरपाणि	105
98	T/14	शारदा तिलकम्	लक्ष्मण देशिक	107
99	T/62	-do-	-do-	108
100	T/13	शारदाशरदर्च्चन पद्धति:	गोदावर महापात्र	109
101	T/27	-do-	-do-	110
102	T/36	-do-	-do-	111
103	T/4 (c)	शावरोत्तरम्	...	111
104	T/59	श्यामा अर्गलम् & others	According to भैरवीकल्प: & others	112
105	T/10	श्यामार्च्चन पद्धति:	वासुदेव रथ	113
106	T/9 (d)	श्यामा तन्त्रम् or असिता तन्त्रम् or काली तन्त्रम्	...	114
107	T/28	श्यामार्च्चन तरङ्गिणी	विश्वेश्वर सोमयाजी	116
108	T/18	-do-	-do-	117

S. No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page
109	T/67 (b)	श्यामार्च न तरङ्गिणी	विश्वेश्वर सोमयाजी	119
110	T/75	-do-	-do-	120
111	T/9 (g)	श्यामारहस्यम्	परमहंस पूर्णानन्द गिरि	120
112	T/44 (a)	-do-	...	121
113	T/54 (a)	-do-	परमहस पूर्णानन्द यती	121
114	T/57 (a)	-do-	पूर्णानन्द परमहंस	123
115	T/63	-do-	-do-	123
116	T/73	-do-	पूर्णानन्द गिरि	124
117	T/8 (c)	सनत्कुमारसंहिता	...	124
118	T/61	सांख्यायनतन्त्रम्	...	125
119	T/78	-do- & others	...	128
120	T/8 (b)	सारोद्धार: and others	...	130
121	T/2 (a)	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगी	131
122	T/80	ज्ञानवल्ली तन्त्रम्	लक्ष्मेश्वर S/o गङ्गाधर विप्र	131
123	H/12	ज्ञानार्णव तन्त्रम्	...	134

SUPPLEMENT

1	BS/68	आनन्द पटल:	...	136
2	BS/57	आनन्द लहरी	By शङ्कराचार्य्य	136
3	T/111 (a)	उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्	...	137
4	T/84	उड्डीश तन्त्रम् or उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्	...	137
5	BS/73	उत्तरतन्त्रम्	...	138
6	BS/75	कामधेनु तन्त्रम्	...	138

S No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page.
7	T/107 (b)	काम्यरत्नम्	श्रीनाथ	138
8	BS/72	काल्लीतन्त्रम्	...	139
9	T/86	कालीसपर्य्याविधिः	...	139
10	T/102	-do-	...	139
11	BS/56	कालीस्वरूप सहस्रनाम	आदिनाथ	140
12	T/107 (b)	कौतुकचिन्तामणिः	...	140
13	BS/71	गुप्तसाधनतन्त्रम्	...	140
14	T/109 (a)	-do-	...	141
15	BS/59	गोपालपूजाप्रयोग-विधानम्	According to सनत्कुमारतन्त्रम्	141
16	BS/69	ग्रहपुरश्चरणविधिः	According to साधुसङ्कलिनीतन्त्रम्	141
17	BS/84	तन्त्रदीपिका	गोपालतर्कपञ्चानन	142
18	T/104	तन्त्ररत्नम्	हरिहर मिश्र	142
19	BS/79	तन्त्रसारः	कृष्णानन्द आगमवागीश	143
20	T/83	-do-	कृष्णानन्द	144
21	T/108	-do-	-do-	144
22	T/99	तन्त्रोक्तदेवीपूजा	...	144
23	BS/86	तन्त्रोक्तपूजा	...	145
24	T/96	तारिणीकुलसुधातरङ्गिणी	रामचन्द्र उद्गाता	145
25	BS/62	बोड़लतन्त्रम्	...	146
26	T/109 (b)	-do-	...	147
27	T/88	दशमहाविद्यापूजा & others	...	147
28	T/89	दशमहाविद्या मन्त्रयन्त्रोद्धारः	...	148
29	T/112	दत्तात्रेयसंहिता	...	148
30	T/91	दक्षिणकालिका पूजा	...	148

S. No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page.
31	T/115	दक्षिणकालिका पूजा	...	149
32	T/106	दक्षिणकालिका वामाचारपूजा	...	149
33	T/101	दीक्षासारतन्त्रम्	चन्द्रशेखर	149
34	T/103	दुर्गापूजाविधिः	...	150
35	T/117	दुर्गापूजाविधिः	...	150
36	T/118	-do-	...	151
37	T/82	दुर्गोत्सवचन्द्रिका & others	रामचन्द्र गजपति	151
38	T/100	दुर्गोत्सवपूजा	...	152
39	BS/64	निरुत्तरतन्त्रम्	...	152
40	BS/83	निबन्धतन्त्रम्	...	152
41	BS/63	पुरश्चरणरसोल्लासतन्त्रम्	...	153
42	BS/61	बृहत् गौतमीयतन्त्रम्	...	153
43	BS/77	महानिर्वाणतन्त्रम्	...	153
44	BS/67	महानीलतन्त्रम्	...	154
45	BS/58	मत्स्यसूक्तम्	हलायुध	154
46	BS/65	माथातन्त्रम्	...	154
47	T/116	मुण्डमालातन्त्रम्	...	155
48	BS/85	मेरुतन्त्रम्	...	155
49	T/114	यन्त्रचिन्तामणिः & others	...	155
50	BS/74	राधातन्त्रम्	...	156
51	T/95	रामार्च्चनचन्द्रिका	आनन्दवन	156
52	BS/82	रुद्रयामलम्	...	157
53	T/90	ललितासहस्रनाम	...	157
54	BS/54	लिङ्गार्च्चनतन्त्रम्	...	157
55	T/110	वनदुर्गाकल्पम्	...	158
56	T/97	वनदुर्गापूजा	रघुनाथ दास	158
57	T/111 (b)	वनस्पतितन्त्रम्	...	159

S. No.	Cat. No.	Name of the manuscript.	Name of the author/source	Page
58	BS/60	वर्णभैरवतन्त्रम्	...	159
59	BS/78	विश्वसारतन्त्रम्	...	159
60	BS/66	वीरतन्त्रम्	...	160
61	T/94	शक्तिप्रतिमाप्रतिष्ठा & others	...	160
62	BS/55 (a)	शक्तिसङ्गमतन्त्रम्	...	161
63	T/93	शारदा तिलकम् with यन्त्रमन्त्रप्रकाशिका टीका	लक्ष्मणदेशिक जगद्धर	161
64	T/92	शारदाशरदर्च्चनपद्धतिः	गोदावर मिश्र	161
65	BS/80	शाक्तानन्दतरङ्गिणी	...	162
66	T/98	शीतलापूजा	According to मुण्डमालातन्त्रम्	162
67	T/87	श्यामारहस्यम्	पूर्णानन्द गिरि	162
68	T/113	-do-	-do-	163
69	BS/55 (b)	षट्शास्त्ररहस्यम्	...	163
70	BS/70	सदाशिवतन्त्रम्	...	163
71	BS/81	सर्वोल्लासतन्त्रम्	सर्वानन्द नाथ	164
72	T/85	स्तोत्रकवचम्	...	164
73	BS/76	ज्ञानार्णवमहारहस्यम्	...	164

Preface

The present volume gives an account of nearly two hundred manuscripts now in the collection of the Orissa State Museum. These manuscripts deal about the subject of Tantra or Mantra Sāstra, which form an important branch of both Buddhistic and Brahmanical religious and ritualistic literature. The collection of the Orissa State Museum made from different parts of Orissa, is fairly extensive. What is more important is that the doctrines and rituals described in these manuscripts were current in Orissa and are current to some extent now a days also. Oriya works, i.e. works composed by Oriya Tāntric scholars are really interesting for study on the subjects which are discussed in their proper places.

The scripts used in the manuscripts is generally Oriya and in many cases the name of the scribe is mentioned. There are a few manuscripts in Bengali and Nāgari scripts also.

The material on which the manuscripts are written in Orissa is palm leaf which was easily available. It may also be noted in this connection that scarcely any palm leaf manuscript of Bengali Language is known. Similarly very few manuscripts in Oriya on any thing but palm leaf are available. The rarity of palm leaf manuscripts was noticed in 1876, whereas a large number of palm leaf manuscripts of this age are in the collection of the Orissa State Museum.

The number of old works and manuscripts is very few in this volume. Most of them were copied in the last part of the 18th or the 19th century, whereas there are a few which were copied in the beginning of the present century.

This volume is a continuation of the series of the "Descriptive Catalogues of Sanskrit Manuscripts," four volumes of which compiled and edited by Sri K. N. Mahapatra, my predecessor in this Museum have already been published and have gained the appreciation of the scholars. The present volume is being compiled and edited by me under his guidance. We propose to produce subsequent volumes gradually in the coming years.

My hearty thanks are due to Sri B. V. Raman, I.A.S., Secretary and Director, Department of Cultural Affairs who has evinced keen interest in the study of Tantra in Orissa and encouraged me to take up this work.

I am also thankful to my Assistant, Pandit Sri Nilamani Misra, B. O. L., Sahityacharya who has prepared the texts of the present volume.

Mahesh Prasad Dash
Curator,
Orissa State Museum.

Bhubaneswar
The 6th, February, '65.

Introduction

It is very difficult to define the word Tantra which is generally derived from the root 'tan' which means to spread. The famous commentator Kulluka Bhaṭṭa asserts that there are only two kinds of Śrutis namely Vaidika and Tāntrika.[1] Tantra is also widely regarded as the scriptural authority for the present age the Kaliyuga. On that account, it is sometimes classed as the fifth Veda. But in a restricted sense, Tantra denotes a religious system connected with the Śakti worship having its own doctrinal theories and religious usages based on a large mass of literary treatise [2] So as a cult of Śakti worship Tantracism can not be connected with the Vedas, where Goddesses in general play an insignificant part, taking no share in the Government of the world".[3]

The time of the origin of Tantra is very difficult to assign. But the actual origin of Tantra may be ascribed to a very late period in the sense that the cult of Śakti worship was not established in the Vedic age. The origin of the Tantra can not possibly be ascribed to a particular time when Taranath[4] says that Tantricism was handed down by secret means from the time of Asanga until the time of Dharmakīrti. He seems to have suggested to us its gradual evolution and development in course of several centuries. Full fledged Tantrism may be said to have been established by the seventh century A. D., by which time many Tantric texts connected with Śakti worship were composed or compiled.

---

1. H H. Wilson, "Essays and lectures on the religion of the Hindus," i, 248, ER. E. XII, P. 193 a.
2. Dr. N. K, Sahoo – 'Buddhism in Orissa', P. 122.
3. E. R E. XII, 'Vedic Goddesses' – P. 607 a.
4. 'Taranatha', P. 201.

Tantricism held its sway over the people of Orissa atleast from the beginning of the 6th century A D. which marks the decline of traditional Buddhism. Many Puranas, Tantras and religious codes devoted to the worship of Śaktis were composed or compiled during this period. There are some shrines dedicated solely to the worship of Śaktis, where the Devī or the presiding deity is worshipped according to the Śākta, rituals.

Mention may be made in this connection of the temples of Mohinī, Kapālinī (Vaital), Gourī at Bhubaneswar, Vimalā at Puri, Kichakeśvarī at Khiching, Durgā (Virajā) at Jājpur, Mangalā at Kakatpur, Charchikā at Banki, Harachandī near Puri, Vārāhī at Chaurasi, Sāralā at Jhankaḍa, Bhadrakālī at Bhadrak, Samaleśvarī at Sambalpur, which are mainly Śākta temples and dedicated solely to the worship of Śaktis in their various forms. Apart from this, the worship of Saptamātṛkās and Yoginīs was very much popular in Orissa which I have already discussed in a paper published in the Orissa Historical Research Journal (Vol. XI, No. 2).

The earliest existing temple dedicated to the worship of Durgā is found on the top of a small hill near Patiakila, which may definitely be assigned to the Gupta period. Here the deity is carved in a single stone, which forms the back wall of the temple.

The religious history of Orissa is very interesting in the sense that it is cosmopolitan in nature. Here all the Pancha Devatās, namely Vishṇu, Śiva, Sūrya, Gaṇapati and Śakti worshipped in their traditional five piṭhas in Puri, Bhubaneswar, Koṇārak, Mahāvinayaka and Jājpur throw ample light about the popularity of Pancha Devatā upāsanā and their relationship in the past ages. So it seems that the worship of Śaktis went side by side with the worship of other Devas as discussed below.

The earliest epigraphic evidence regarding the Śakti worship in Orissa is found in a copper-plate grant of Tustikara Deva[5a] who perhaps flourished about the 5th or 6th century A. D. and was a

5(a) J K.H.R.S , Vol. II No 2, pp 107-110, E.I Vol XXX, P. 274-278.

worshipper of goddess Stambhesvarī.[5b] Dr. D. C. Sarkar[6] is of the opinion that Stambhesvarī was the family deity of the Śulkis and she was represented in the form a Pillar indicating Śiva and Śakti. The same goddess is also mentioned in the copperplate grants of the Bhañjas[7] and the Tuñgas[8] who ruled over different parts of Orissa from the 8th to the 11th century A. D. There is a Pillar of Stambhesvarī at Sonepur and a temple of the goddess at Aska in Ganjam. The practice of worshipping wodden pillars continues in many villages of the hill tribes, who worship this Goddess with wine and meat, which has got some Tantric affiliation.

TANTRIC PITHAS IN ORISSA.

Some of the early Tantras refer to four Pīṭhas. This *Chatus Pīṭha* conception may have been associated with the Sahajayana School of the Buddhists according to which one can rise to eternal bliss from sexual pleasure. This chatus pīṭha conception may have some relation with Chtuspiṭha Parvata near Jajpur in Orissa, the great Tantric centre. These four hills i. e. Udayagiri, Ratnagiri, Lalitagiri and Alatigiri are regarded as representing the four great pīṭhas inside Orissa. Obviously, Orissa was a land of primary importance in the Tantric world, and out of these four piṭhas mentioned in the Tantric texts, two of them namely Oḍḍiyana and Pūrnagiri may be located in Orissa.

The Buddhist Tantric text like 'Hevajra Tantra' the compilation of which may be fixed at 7th century A.D. mentions the names of four Piṭhas including Oḍḍiyana, which can convincingly be located in Orissa. Oḍḍiyana Pīṭha was a place of great importance and was the fountain head of all Tantric knowledge. Unfortunately scholars are divided among themselves, about the proper identification and location

---

5b. स्तम्भेश्वरी पादउक्त माधपितृ पादानुध्यात श्रीमहाराज दुष्टिकरः

6. E.I. Vol. XXVIII. No. 2, pp. 107-114.
7. O.H.R.J. Vol. II. No. 3, p. 158.
8. J.A.S.B. N.S. 1916 Vol. XIII pp. 291-295.

of it as available materials on it are quite shifting and unsatisfactory. There are four schools of opinion regarding the identification and location of Oḍḍiyana. Mr. H.P. Sastri and following him Dr. Binayatosh Bhattachārya are of the opinion that Uḍḍiyāna is same as Orissa.[9] Prof. Winternitz also accepts the same view with a question mark. Mr. R. M. Nath identifies the place with Hojai in the district of Assam[10] According to Mr. N. N. Das Gupta Uḍḍyana should be located with the Chittagang region of Bengal.[11] But Mr. M. Levi and Dr. P. C. Bagchi and many other profound scholars identify Uddyāna with the Wu-tah-ang-na of Yuanchawang and locate it in the Swat valley of Kabul on the North west of India.[12] Out of these four schools of opinion, the first is acceptable and Dr. N.K. Sahu with many convincing arguments has suggested the probability of the location of Oḍyāna in Orissa.[13]

This early work mentioned the following four pīṭhas (1) Jālandhra, (2) Oḍiyāna (3) Pūrṇagiri and (4) Kāmarūpa. In the Kālikā Pūrāṇa the same tradition is followed and the following piṭhas are mentioned viz, (1) Oḍra, (2) Jālaśaila (3) Pūrṇa or Pūrṇa Śaila (Pūrṇagiri) (4) Kāmarūpa. Oḍra in the list is a substitute for Oḍḍyāna. This Oḍra was probably a vishaya or district in the Uttara Toṣāli located in the Yamagarttamaṇḍala which comprised the areas of Dhenkanal and Talcher.[14] In a copper plate grant Janmejaya-I is credited with the victory over a king[15] of Orḍa. According to some scholars the county of Oḍra is identical with Utkal or present Orissa. Referring to this inscription, Dr. K. C. Panigrahi says that "In plain words it means that Janmejaya assumed the sovereignty of Orissa after

---

9. Dr. N.K. Sahoo - 'Buddhism in Orissa', pp. 142-147.
10. J.A.R.S. Vol. V, No. 1-2, 14-57.
11. I.H.Q. Vol. XI, p. 142.
12. I.H.Q. Vol. VI, p. 576.
13. Buddhism in Orissa, p. 142-147.
14. Inscriptions of Orissa, Vol IV, p. 365.
15. Inscriptions of Orissa, Vol. IV; Inscription No. 39 Line-3

killing its king with Kunta.[16] Again from two copper plate grants of the Tuṅga kings of Yamagartta-Maṇḍala we came accross the name of the same Oḍra viṣhaya, Yamagarta Maṇḍala being a province covered by the present subdivisions of Dhenkanal and Talcher from which these plates were discovered. The first plate belongs to a king called Gayāḍa Tuṅga who granted some lands to a Brāhmaṇa, who migrated from Ahichhatra and settled in Oḍra viṣaya.[17] The second plate belongs to the same king who issued another charter to a Brāhmaṇa who migrated from Vārendramaṇḍala and settled in the same Oḍra viṣaya.[18] On the authority of above epigraphs, we may perhaps accept the view of Sri S. N. Rajguru that Oḍra was only a viṣaya or district in Uttara - Toṣhali located in Yamagartta maṇḍala which comprised the regions of Dhenkanal and Talcher. The list of Pīṭhas given in the Kālikāpurāna[19] includes Oḍra, which stands for Uḍḍyāna. This is clear from the other section of the same purāṇa.[20] Some of the South Indian inscriptions belonging to the 15th century, refers to Orissa as Oḍḍiyāna.[21] In another inscription dated during the reign of Sāluva Narasimha.[22] "Uḍḍyāna Galabi" finds mention which supports the view that Oḍḍyāna is no other than Orissa.

On the basis of all these additional evidences we may accept the view of Dr. N. K. Sahoo as certain about the identification of Oḍḍyāna with Orissa.

Pūrṇagiri.

It has been already pointed out that many tāntric texts both Hindu and Buddhist mention the names of four Tāntric pīṭhas, of

---

16. Chronology of Bhaumakara and Somavamsi Kings of Orissa P. 6
17. J.P.A.S.B. Vol. V P. 348
18. Arch. Sur. of Mayurbhanja, Vol. I P. 152 and J.P.A.S.B. Vol XII, pp, 292 ff.
19. K. P. Ch 64 V. 43-45
20. Ibid Ch. 18 V. 42-44 and 49-51
21. Annual report on Epigraphy 1906 No. 93
22. Ibid 1905- No. 1

which Pūrṇagiri is one. But proper identification of this place is very difficult as the available materials are quite shifting and unsatisfactory. Its identification with modern Poona as pointed out by some scholars appears very doubtful.[23] The Tantrasāra while describing these four piṭhas in two chapters on 'Pīṭhatattvanyāsa'[24] mentions Pūrṇagiri Pīṭha in each case as 'Uḍḍisa-ñathātmaka' implying thereby intimate association of this piṭha with Jagannātha of Orissa. This suggests us that Pūrṇagiri was very near to Jagannātha (Puri). It is interesting to note that in a stone inscription, found in the temple of Simachalaṁ, there is a mention of the name Purnakoti[25] referring to Śrī Kūrma in the Srikakulaṁ District of Āndhra Pradesh which was in Kaliṅga under the imperial Gaṅgas of Orissa. It is interesting to note that near the Almorā hill in the Himalayan range there is a mountain called Kumaun formerly known as Kūrmāchala. According to tradition it is believed that the कूर्म अवतार of Viṣṇu was taken in that locality. In 1849 Major Madden of Bengal Artellery's touring report was published in J.A.S.B. Vol. XVII where in at page-580 he refers to the Koormāchal (कूर्माचल) with quotations from the स्कन्दपुराण । According to Major Madden the name of Koormas was derived from Kūruma and it was identified with modern मन्दारगिरि । In this connection Nandalal De says that "the celebrated temple of पूर्णादेवी or अन्नपूर्णा at Pūrṇagiri visited by the pilgrims from all parts of the country, is situated in Kūrman".[26] Here also we find the God Kūrma Svāmī at the place named पूर्णकोटी-पूर्णगिरि was a centre of Tantric cult. On the basis of the above evidences the identification of पूर्णगिरि with पूर्णकोटी does not seem to be improbable.

So out of the four pīṭhas mentioned in the early Tāntric texts the identification and location of Uḍḍyāna with Orissa may be accepted as certain and location of Pūrṇagiri in Orissa may be accepted with a question mark as the available materials on this are shifting and unsatisfactory. More literary & epigraphical evidences in this respect are eagerly awaited.

---

23. Sadhana Mala (P. XXXVII)
24. Tarānath, pp. 419-20, 451-52
25. S. N. Rajguru, Inscriptions of Orissa, Vol. III part I, No. 227, P. 255
26. Vide Hist. Geog. P. 196

YOGINĪ PITHAS IN ORISSA

The cult was prevalent prior to the 10th century A. D. References to Mahāyoginīs in the Somadeva's 'Yaśatilaka'[26] composed in 959 A. D. support the prevalence of this cult prior to the 10th century A.D.

It is gathered from the works on Tantric literature that the number of pīṭhas which were only four to start with, varied according to different versions and attained the maximum of one hundred and eight[27] which is a conventional figure.

Epigraphic evidence of the cult of Yogīnis are not found in Orissa; But such evidences are found in other parts of India. For instance an inscription from Ankalgi in the Jath taluk of the South Satara District of Maharastra dated 1174 A. D. refers to the village Ankulage as the abode of Mahāyogesvarī Ugrachāmuṇḍa, the presiding deity of the sixtyfour Yoga Pīṭhas.[28] Mahāsāmanta Chamuṇḍarasa a subordinate of the Western Chalukya king Vikramāditya-VI is described as "one who had obtained the gracious boon of the sixtyfour Yoginīs." In an epigraph from Halagondi[29] in the Hadajalli taluk of the Bellary District, now in the Andhra State which is assignable to 1093 A. D. The expression "sixtyfour Yoga pīṭhas" is, of frequent occurance in the Praśasti of the great mercantile corporation Ayyavale five hundred figuring in the inscriptions of Karṇātaka[30]

Yoginīs are especially the Mother Goddesses, who are worshipped at the beginning of every Sānskara.[31] The principal yoginīs are seven or eight but their number is at times raised to sixtyfour.[32]

---

26. K K. Handiqui, 'Yasastilaka and India culture',Jivaraja Jain Granthamala, 1949 pp. 204 and 396
27. Dr. D.C. Sarkar, 'Sakta pīṭhas', J R.A.S B. 1948 p. 11 ff.
28. Bombay-Karnatak collection No 93 of 1940-41.
29. 'South Indian Inscriptions', Vol. IX Part–I No. 163.
30. 'South Indian Inscriptions',Vol. IX Pl. I No.139 Vol. XI, Pt. II, No.148 etc.
31. 'Soḍaśa Ratnamālā', p. 18.
32. I.H.Q. Vol. XXXI p. 367.

The principal seven or eight are called Mātṛs or Mother goddesses[33] MārkaṇḍeyaPurāṇa informs us that the Mother Goddesses came into being to suck the blood of the demon Raktabīja to death when Chāmundā and Kālarātri drank the blood of the demon the mothers danced around in a circle.[34]

Temple of yoginī cult are found at two places in Orissa, namely at Hirāpur (near Bhubaneswar) and at Ranipur Jhariah (Balangir District) Mr. V. Karambelkar[35] has discussed in his paper 'Matsyendranātha and his yoginī cult' about a yoginī temple at Suruḍa, a place in the south Orissa. Curiously enough no trace of a third temple was to be found there,which needs further investigation. Subsequently a report by Major General John Campbell has come to our notice, which is given below :—

"A personal narrative of thirteen years of service amongst the wild Tribes Khondistan for the superssion of human sacrifice by Major General John Campbell, London 1864.

ORISSA

Kalahandy of Nagpore

Tooamool hill Principality, tributary of Kalahandy. Patna Zamundari :— Khond country — vast plains, now but partially cultivated, yet bearing the marks of former extensive cultivation in numerous remains of tanks and rice embankments. At some distance from a village called SOORADA remarkable collection of Pagados 120, limit of cut stone, without cement, and most of them are in a state of dilapidation on the largest temple is some writing in the Devi nagari character, but now illegible. In the centre of this group of Pagados was a circle of two hundred and ten feet in circumference, surrounded by a wall of cut stone, twelve feet high, with sixty five nitches on the inner side containing sixty figures of goddess in a variety of attitudes, and in the centre of circle, placed on a raised

33. ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्तमातर

34. 'Prabodhchandrodaya 'P. I.

35. I.H.Q. XXXI pp. 362-374.

platform, sat a remarkable figure tolerably carved as were also others, in stone; Few of these deities were recognised by my people, though among them were two Brahmins.

The traditions here is that these temples were built by magicians, and the guide, who pointed out the way, would not go within two miles of them.[36]"

The description of Major General Campbell who visited this area during the year 1864, answers the description of Rānīpur Jhariāl, where there is a circular Yoginī temple and not less than fifty temples in various stages of dilapidation. More over there is a small village named Suruḍā near the site, on the basis of which we may conclude that there were only two Yoginī pīṭhas in Orissa, one at Hīrāpur and other at Rānipur Jhariāl (Suruda). There was no other Yoginī pīṭha at Suruḍā in the Ganjam district and Mr. Karambelkar might have confused Suraḍā near Rānīpur Jhariāl with a place of the same name in Ganjam.

The Yoginī pīṭhas in Orissa were probably established when Brahminical Tāntric religion, became popular in the country and began to vie., with the Vajrayāna cult of the Buddhists, which originated in Uḍḍiyāna in the 6th/7th century A.D.

The temple of Hīrāpur, which stands not far from the south bank of the river Bhārgavī, on which runs the wellknown Jagannāth road to Puri, was first discovered by Sri K. N. Mahapatra in the year 1953.[37] In the circular wall round the enclosed space there are sixty nitches for holding the images of sixty Yoginīs. All these images carved in black chlorite are in standing posture. In the central platform there are four nitches to contain four images out

---

36 The report was obtained through Mr. P.Z. Pattaviramin of French Institute of Indology, Pandichery.

37 K. N. Mahapatra – 'A note on the Hypaethral temple of sixtyfour Yoginis at Hirapur' O H.R.J. Vol. II No. 2 p. 23–40.

of which one is missing. There are nine female deities set in nine nitches on the outer surface of the enclosure. This was an important Yoginī pīṭha in Orissa in the past ages.

There is a similar temple of sixtyfour Yoginīs at Rānīpur Jhariāl in the Titlāgarh Sub division of the Balangir District. The dimension of this piṭha is bigger than that of Hīrāpur. Here, there is a small Maṇḍapa on four pillars in the middle of the enclosure, enshrining the image of a three headed eight armed Śiva in the pose of Tāṇḍava dance. There are 64 niches in the wall of the enclosure for containing the images of 64 Yoginīs, of which only 48 are existing now.

If we make a comparative study of the style and iconography of these two temples in Orissa, namely Hīrāpur and Rānīpur Jhariāl, the former seems to be little earlier. The predominance of the standing as well as the two armed figures in the temple of Hīrāpur is a sure sign of its antiquity and as such it may be taken to be earlier than that of Rānīpur Jhariāl. Sri K. N. Mahapatra has assigned this temple to the eighth or early ninth century of the Christian era when Brahminical Tantric religion became predominant in Orissa and most of the famous Tantric temples of the coastal region raised their heads.[38]

Oḍra pīṭha being the first Tantric Pīṭha in India according to Kālikā Purāṇa, which is taken as an authority on Hindu Tantra, it can legitimately be assumed that the Yoginī cult which originated in the costal region of Orissa, somewhere near Puri, gradually spread in the adjoining hilly tracts of Orissa and Madhya Pradesa having its centres first at Rānīpur - Jhariāl, which is also another small city of temples, like Bhubaneswar and then to Bheraghat, near which are seen the monuments of different ages.[39]

---

38 K. N. Mahapatra :— 'A note on the Hypaethral temple of sixtyfour Yoginīs at Hīrāpur, O.H.R.J. Vol. II No. 2 p. 23-40.

39 Ibid

Literary and epigraphical references about these Yoginī pīṭhas are unfortunately not found. Intensive exploration may bring to light the existance of such references which are eagerly awaited for scholarly investigation.

It has already been discussed that early Tantric texts mentioned the names of four pīṭhas, out of which two namely. Oḍḍyāna and Purṇagiri had close association with Orissa The names of other Tantric centres are also mentioned in the Tantric texts and a few of such references are given below in order to prove the popularity of Tantric cult in Orissa in the past ages.

'Rudrayāmala Tantra' which seems to have been composed considerably earlier than 1052 A.D. mentions ten holy places as the Principal pīṭhas out of which Oḍḍiyāna (Uḍḍyāna) was one. The language of the Rudrayāmala suggests that its author had knowledge of some other Pīṭhas of lesser importance. A passage from this work quotated in the 'Kulārnva Tantra'[40] actually speaks of 18 pīṭhas where Uḍḍyāna and Kalinga are included. A passage of the Jnānārnava Tantra,[41] which was composed considerably earlier than the middle of the sixteenth century[42] also mentions the name of Uḍḍyāna as one of the eight pīṭhas.

There is a small interesting work entitled Astādaśa Pīṭha (eighteen pīthas) which is said to have been written by one Sambhunāth Kar of Calcutta in Samvat 1803-1806 A.D. from the dictation of an Utkala Brāhmaṇa who was the inhabitant of Jahajapura (Jajapur) on the Vaitarani. "इति शङ्कराचार्य्यविरचितम् अष्टादशपीठं सम्पूर्णम् । इति श्री शम्भुनाथ कर (करेण) उत्कलदेशस्य ब्राह्मण - वेलं पुरीकर - जहाजपुरीय - वैतरणीय -

---

40 'Des. cat. Sans. MSS' R.A.S B. VIII pp. 110-11

41 Anandāśrama ed. Patala V, Verses 66-67

42 The Jñānarnava is largely quoted by the Tantrāchārya Brahmānanda and Purnānanda in the sixteenth century A.D.

ब्राह्मणाच्छुत्वा लिखितं । संवत १८३३ पौष कृष्णैकादश्याः शुक्रे लिखितं कलिकताख्य पट्टने। शुभमस्तु सर्वजगतम् ।"[43] In this work Utkala has been included where Virajā was the celebrated deity.[44]

Another Tantric text entitled 'Kubjikā Tnatra', usually supposed to be a fairly early work contains the names of many Siddha-piṭhas. In this work the names of Virajā and Uḍḍyāna are mentioned.

It is interesting to note that different sections of the 'Jnānarnava Tantra' gives the recognised number of pīṭhas as fifty only.[45] Out of these fifty pīṭhas the names of *Ekāmra (Bhubaneswar)* Virajā, Uddisa (from Prakrit Oḍḍavisa, Oddaisa Sanskrit Oḍravisaya, i. e. Orissa) Jaleśwar (a town in the Balasore District) and Oḍḍyāna are mentioned which can convincingly be located in Orissa.[46]

The above discussion on the Tantric pīṭhas testifies to the popularity of Tantric cult in Orissa in the past ages. The cult was prevalent in almost all parts of Orissa, but the important centres of Tantric cult were mainly at Jajpur, Bhubaneswar and Puri about which discussion is made below.

---

43 MS No. 5913 in the Library of the Royal Asiatic Society of Bengal.

44 उत्कले विरजा देवी माणिक्यां (?) चक्रकोटिली ॥

45 Anandāśrama ed Patala XIV Verse 112

46 (a) अषाढ़केश्वरं पीठं मेकाम्रश्च ततःपरम्
X X X

(b) अट्टहासञ्च विरजं राजगृहमथा परम्
X X X

(c) हस्तिनापुर पीठञ्च (V. I. पुरकंपीठम्) उडिशश्च प्रयागकम्
X X X

(d) विन्ध्यश्चैव महापीठं मायापुर जलेश्वरौ
X X X

(e) महालक्ष्मीमयं (V. I. पुरं) पीठ मुड्डीयान मतःपरम्

Jājpur.

Jājpur, situated on the bank of the river Vaitaraṇi was an old and prominent seat of Tāntric cult. Its history is traceable since the days of the Mahābhārata[47] when it was a sacred place of pilgrimage. The Gayāsura episode of the Viṣḥṇu Purāṇa calls it Nāvi Gayā. The Brahma purāṇa[48] and Kapila Saṁhitā[49] also point out its sanctity as a centre of religious activities. Virajā is mentioned as one of the forty two Siddha pīṭhas in 'Kubjikā Tāntra'[50] and as one of the fifty pīṭhas of Jñānarnava Tantra[51] It is also mentioned as a Śākta Pīṭhas in 'Brhama Nīla Tantra', Astādaśa pīṭhas' of Śankarāchārya and Pīṭhanirnaya.[52]

In Epigraphy, Virajā is fint mentioned in the Parlakhimedi copper plate of Prthvī Mahārāja[53] who flourished towards the close of the 6th century A.D. The copper plate of Bhanu Datta[54](7th century A. D.) also refers to Virajā. Unmatta keśarī[55] who ruled about the middle of the 7th century A. D. had his capital at Virajā. An inscription of Bhaumakara king Santikara Deva mentions an inhabitant of Virajā[56] Under the Bhauma kara, Guhadeve Pataka or Guheśvar Pātaka becaime the capital of Utkala and it was the "name applied by Bhaumakaras either to Virajā or to a new city built by them in its vicinity."[57] The earlier kings of this dynasty were Buddhists, but

---

47. ततो वैतरणीं गत्वा सर्वपापप्रमोचनीम्
विरजातीर्थमासाद्य विराजति यथा शशी
(Mahābhārata, Vana Parva Ch. XXCV. 6)
48. B. P. XIII I
49. K. S. VII 2
50. J.R.A.S.B. Letters, Vol. XIV No. 2948 D.C. Sarkar S.P.P. 19
51. Ibid
52. Ibid p. 45
53. 'Inscriptions of Orissa' Vol. I Part-II pp. 54-56.
54. E. I. XXIII pp. 203 04
55. I.H.Q. XII p. 492
56. E.I. Vol. XIX pp. 263 64
57. E.I. XXVIII No. 32, pp. 179 185 J. K. H. R. S. Vol. II p. 103. B. Misra, 'Orissa under the Bhaumas',p. 87.

the later rulers were liberal in their faith. Tribhuvan Mahādevī[58] of this family compares herself with Kātyāyinī at the time of her accession. An inscribed image of Chāmuṇḍā from Jājpur[59] refers to it as the Kirtti of queen Vatsadevī, who was probably the wife of one of the early Bhaumakara kings. The Bhaumakaras were followed by the Somavamsi kings and during the reign of yayāti II Mahasiva Gupta, their capital was shifted from Yayatinagara of Kosala to Guhesvara Pātaka which was renamed as Abhinava Yayāti Nagara. The Muslim chronicles like Tabaquat - i - Nasiri, Tarikh-i-Firozsahi called Yayāti nagara as Jājnagar and subsequently the suffix 'nagara' was substituted by 'Pur' and the place became Jājpur.

During the medieval period Jājpur was a flourishing centre of the cult of mother Goddess and Virajā was the presiding deity of the place. She is said to have emerged from the fire altar[60] of Brahma when the ten horse sacrifice was perfomed by the divinity. The image of Virajā is always covered with a piece of cloth, but from the descriptions it is known that it is a form of Durgā She is a two armed deity and rides on a lion to kill the buffalo demon with her śūla.

R. P. Chanda has suggested it to be the earliest form of the Goddess conceived by her votaries and Virajā presents the earliest phase of the cult of the goddess.[61] He assigns it to the pre-Gupta period.[62]

The story regarding Durgā and seven mothers is given in the Devī Mahātmya section of the Mārkaṇḍeya Purāṇa. The Varāha Purāṇa[63] gives a different story about the origin and connects them with the killing of Asura Andhaka by Śiva. The Bihar Stone inscrip-

---

58. J.B O.R.S. Vol. II pp. 419-27
59. E I. XXVIII pp. 184-185
60. R.L. Mitra- 'Antiquities of Orissa', Vol. II, Indian studies Cal. pp. 257-288
61. R. P. Chanda, Memoirs of Archaeological Survey of India', No.44-p.5
62. Ibid p. 4
63. V. P. Ch. 27, 28-43

tion of Skanda Gupta[64] in line nine mentions the divine mothers who are regarded as the mothers or nurses of Kārtikeya. The Gangadhar stone inscription of Viśvavarman in line 35 mentions that his minister Mayūrāksha built a temple for the divine mothers 'who utter loud and tremendous shouts in joy and who stir up the oceans with the mighty wind rising from the magic rites of their religion.'[65] The Kadambas of the Deccan[66] were worshippers of Sapta Mātṛikās and the Chālukya kings are also described as being nourished by the "seven mothers of mankind.[67]

Jājpur was also at one time the seat of Vajrayāna form of Tantric Buddhism, A large number of deities like different kinds of Tārā, Heruka, Kurukullā and Aparājitā are found near Jājpur and from Udayagiri, Ratnagiri and Lalitagiri.[68]

The popularity of Jājpur as a focal point of Śakti worship continued in later times and there are references to it in Kapila samhitā,[69] the Mahābhārata of Sāralā Dās[70] (15th century) and in Bata Abakasha.[71] Lord Gouranga also prayed to Virajā when he passed through Jājpur in the 16th century A. D.[72] on his way to Puruṣottama kshetra.

---

64. Fleet, C.I.I, Vol. III, p. 48
65. Ibid p. 78
66. Indian Antiquary, Vol. VI, p. 26
67. सप्तलोकमातृभिः - सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां (Indian Antiquary, Vol. VI, p.76.)
68. N.K. Sahoo, Buddhism in Orissa, Ch. XI pp. 181-199
69. तत्र श्री विरजादेवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी
साधकानां हितार्थाय विरजा उत्कलेस्थिता।
'Kapila Samhita', Dutta Press, Cuttack pp. 29.
70. 'Mahābhārata' (oriya) by Sarala Das, Drona Parva.
71. 'Bata Abakash', Prashi Edition by Balaram Das p. 19.
72. 'Chaitanya Mangala', Lochana Das, Madhya Khanda.

PURI

It is interesting to note that many Tāntric texts recognise Puri as one of the Pīṭha sthāna where Bhairava is Jagannātha and Bhairavī is Vimalā.[73] In this Piṭha-sthāna of Śāktas, Vimalā was installed as *Kṣetṛsakti.*[74]

The central figure of the holy Traid that is worshipped in the temple of Jagannātha is known as Subhadrā. It is not very difficult to prove that she is no other than Ekānaṁsā, one of the manifestations of Durgā or Kātyāyanī. Before coming to the problem as to how and when the name of Ekānaṁsā was changed into Subhadrā, an attempt is made to discuss briefly on the cult of Ekānaṁsā.

The earliest literary reference to Goddess Ekānaṁsā is found in the Mahābhārata where it has been said that Kuhu the daughter of Aṅgirāsa was otherwise called as Ekānaṁsā.[75] The next early mention of the name of Ekānaṁsā is found in Harivaṁsa in connection with the birth of Viṣṇu as Kṛṣṇa. It is said in Harivaṁsa that Viṣṇu being approached by Gods to relieve the earth from the demon Kaṁsa and his followers, promised to be born in the womb of Devakī, wife of Vāsudeva, Viṣṇu bade the Goddess Nidrā (the Māyā of Viṣṇu) to take her birth as the daughter of Yasodā, wife of Nanda Gopa[76] and while Kāṁsa with a view to kill her would throw her on stone she would escape to the sky, and would assume four arms holding trident, sword, wine cup and lotus in them. People will recite Aryāstava in her praise.[77] In another chapter of Harivaṁsa, it

---

73 उत्कले यभिदेषश्च विरजा क्षेत्रउच्यते
विमला मा महादेवी जगन्नाथस्तुभैरव:

74 छायायां मङ्गलाप्रोक्ता विमला पुरुषोत्तमे ।
(Devi Bhagavata)

75 एकानंशेतिताम् प्राहु: कुहु: - अङ्गिरस: सुतम
Vanaparva, Ch 213, V, 118.

76 यशोदागर्भसम्भुतां – नन्दगोपकुलजाताम
(Harivaṁśa)

77 Refer Harivaṁśa Ch 58.

is said that Ekānamsā was born from the aṁsa of Prajāpati (Brahmā) in order to protect Keśava (Kṛṣna).[78] The Goddess Ekānaṁsā is here addressed as Sarvagā and Trailokyachāriṇi.[79] The 'Trikaṇḍasesha' of Purusottama a lexicon of the 9th century A.D. describes Ekānaṁsā as a Yādavī and also as an aṁsa of Prajāpati. Purusottama, the author of the lexicon has been wrongly identified by some scholars[80] with Purusottamadev (1466-97 A.D.) the famous Suryavaṁśi Gajapati king of Orissa. Scholars of Bengal on the other hand have tried to prove that this lexicographer was a contemporary of the king Lakshmana Sena of Bengal.[81] Shri K. N. Mahapatra who has assigned the date of lexicon to the 9th Century A.D.[82] is more accurate and we may safely accept the view of Sri Mahapatra that the lexicographer cannot be identified with Purusottamadeva, the famous Gajapati king of Orissa. In this work of Purusottama, Ekānaṁsā is described as a Yādavī and as daughter of Dakshya Prajāpati. The line runs thus :—

वारालकैकानंशा च शिवदुतीयमम्बसा
कोटवी वाभ्रवी, कैटरी कैटभा यादवी कर्वरीचेश्वरी चेश्वरा
भ्रामरी दक्षकन्या च वर्हिध्वजी नलपुत्री च मारिच कालिञ्जरी
गौतमी तापसी षष्ठी जयन्ती शुलिधृक सती
सिंहस्थस्या मनस्थाल शखौ च विजया जये[83]

---

78 विद्यैश्चैनां अथउत्पनाम अंशाद प्रजापतिः
एकनांशां योगकन्या रक्षार्थ केशभ्यश्च

79 Harivaṁśa Ch. 58.

80 (a) Mukura Vol. VII 1913, No. 2, p. 31-44, (b) Utkal Itihasa by Late K. S. Misra, p. 138. (c) Orissa Itihasa by Dr. H. K. Mahtab.

81 (a) Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the collection of the Asiatic Society of Bengal Vol. VI, p. 294.

(b) Indian Culture, Vol. II pp. 262-263.

82 O.H.R.J. Vol. II No. 4, pp. 64-67

83 Trikandasesa (Nirnya Sagar Edition) (Prathama Khanda Savarg-vraga 53).

Though Ekānaṁsā has been described here as Yādavī, the Yādavas worshipped her as their tribal guardian and invoked her aid in times of difficulty. Probably Ekānaṁsā was originally a Yādavī later on defied for her miraculous power viz, protecting Kṛṣṇa from the hands of Kaṁsa.[84]

In the Khilaharivaṁśaparva of Mahābharāta Ekānaṁsā is described as the daughter of Nanda Gopa as well as sister of Balarāma and Kṛṣṇa [85]

From the above Puranic sources it is clear that Ekānaṁsā is a part of Prajāpatibrahma, sister of Kṛṣṇa, Balarāma, as well as daughter of Naṇdagopa. In the Haṛivaṁsa, Ekānaṁsā is found in association with Devī Durgā where it has been said that Ekānaṁsa shou'd be worshipped on the nineth day of bright fortnight of Aśvina with animal sacrifice, wine and offerings [86] In a later purānic work like Skanda Purāṇa it is said that the Goddess Subhadrā should be worshipped according to the hymns of Devī-śakta. In this purāṇa an attempt has been made to identify Ekānaṁsā with Subhadrā. From the study of the Mabābharata, Haṛivaṁsa and other works it is clear that Ekānaṁsā was an aspect of Durgā. In Katha Sarit Sāgara of Somadeva the compilation of which may be tentatively assigned to the 11th century A.D. Ekānaṁsā is given the name of Durga.[87]

In the Brahma Purāṇa, Ekānaṁsā is identified with Kātyāyinī.[88] In Purusottama Māhatmya of the Skandapurāṇa, Subhadrā has been identified with Kātyāyinī. The lines run thus :—

---

84 Harivamsa Ch. 160

85 भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया
आवास सर्वभूतानां निष्ठा च परमागति ॥
नन्दगोपसुताचैव देवानां विजया वशा
X X X

86 कृतभानु यात्रा भुतैतं सुरामांसबलिप्रिया

87 Refer 'Kathasaritasāgara' (Towney & Penze's Edn) IV LIII p. 78

88 B. Purana Ch. 57. V 57

"कैवल्यमुक्तिदे भद्रे त्वां नमामि मुरारणिम्
देविस्त्वं विष्णुमायासि मोहयन्ति चराचरम् ।
त्वं पद्मासनसंस्थ्यासि विष्णुभावानुसारिणी
त्वमेव लक्ष्मी गौरी च शची कात्यायनी तथा ।"

So we may conclude that Ekānaṁsā and Subhadrā are the same deity, and they are manifestations of Durgā

In Purusottama Rahasya of the Skanda Purāṇa, Subhadrā has been described as the Śakti of Viṣṇukṛṣṇa, as well as the sister of Kṛṣna.[89] In this connection it is interesting to note that Ambikā an aspect of Durgā appears first as Rudra's sister[90] and consort [91] So there is some similarity between the cult of Durgā and the cult of Subhadrā.

By the time of 8th century A.D. the indntification of Ekānaṁsā Durgā with Subhadrā was complete. In ancient and early mediaval days Yogamāyā was described as both the Śaktī as well as the sister of Kṛṣṇa.

In another work namely 'Kaumudi Mahostsva' we find the mention of the name of Ekāngā (Ekānaṁsā) as the tribal deity of the Yādavas. Here the Goddess has been shown in her dual capacity namely as Vindhyāvāsinī Durgā and the tribal of the Yādavas.[92] In order to solve the problem as to how and when Subhdra came to be identified with Ekānaṁsā Durgā, we may further quote the work of Mr. J. C Ghosh,[93] where he has suggested that the Yādavas in order to save the lives of their favourite Kṛṣṇa and Baladeva took her as their house-hold deity Ekānamsā.

---

89 'तस्य शक्ति स्वरूपेयं भगिनी स्त्री प्रवर्त्तिका'
(Purusottama Rahasaya, Ch. 19 V. 17)

90 (a) 'Vaja Saneyi Samhita', III 57
(b) 'Taittiriya Brahmana', 16, 6, 10, 4, 5

91 'Taittiriya Aranyaka', X, p. 18

92 'Indian Culture', p 212, Vol. IV

93 'J.R.A.S.B.', Letters Vol. II, 1636, p, 41

So the attempt which was made to identify Ekānamsā with Yādavī (tribal deity of Yādavas) first in the Harivaṁsa was further made in the Kaumudī Mahotsava, which is probably a work of C. 7th or 8th century A.D.[94]

After identifying Subhadrā with Ekānamsā we should come to Puri temple where the deity is known as Subhadrā. The Brahma Purāṇa mentions the central figure of the shrine of Jagannātha as Subhadrā, and cites the following as her Namaskāra Mantr :—

"नमस्ते सर्वगे देवी नमस्ते शुभसौख्यदे
त्राहि मां पद्मपत्राक्षि कात्यायनि नमोस्तुते
एवं प्रासाद्य तां देवीं जगद्धात्रीं जगज्जिताम्
बलदेवस्यभगिनीं सुभद्रां वरदां शिवाम् ।"

Here she has been described as the sister of Balarāma.

It is said in the Brahma Purāṇa, that King Indradyuma who built the temple of Purusoṭṭama Jagannātha at Puri and introduced the worship of Lord Jagannātha with its other associates, used to worship the Lord in Pancharātra mode. The purana runs thus :—

"पञ्चरात्रविधानेन संपुज्य पुरुषोत्तमम्[95]
चिन्ताविष्टो महीपाल सन्तोतु मुपचक्रमे ।"

But in the Utkala Khaṇḍa of the Skandapurāṇa it is said that Subhadrā should be worshipped according to the hymns of the Devī Sukta. Now as Ekānaṁsā was a Śākta deity, she required to be worshipped according to the Śākta rituals. As this was repugnant to the followers of Pancharatr system, they had to take recourse to change the name of Ekānaṁsā, who having been born as the daughter of Yasodā, was a sister to him.

---

94. Refer Sakuntanla Rao and Edn of 'Kaumadi Mchatsva'.
95. 'Brahma Purāna', Ch. 78 V. 12.

It is known from the Brahmapurāṇa that Śrikshetra Puri, the holy place of Jagannātha was known as Nilāchala in ancient times. In the 'अनघराघव नाटकम्' of Murari written in the 9th century A. D. this place is called नीलाचल e. g. "नीलाचल मौलिमन्डन महानीलमणीः पुरुषोत्तमस्य यात्रायां" (First Act) Many purāṇas of the Mediaeval time deal extenssively with Purusottama Kshetra, which was completely Vaisnavised by the 10th century A.D.

Due to the influence of Vaiṣṇavism over Śaktism the name of Ekānaṁsā was changed into Subhadrā. By replacing Ekānaṁsā by Subhadrā the Vaiṣṇavas seemed to have assimilated all traces of Śaktism, that prevailed in the temple of Jagannātha. But traces of Śaktism can still be found in the compound of the temple of Jagannātha, where we find two subsidiary shines dedicated to the worship of Vimalā and Arnapurṇā respectively. The Śāktas consider Vimalā as the presiding deity of the temple and she is worshipped according to the Śākta rituals. It may be concluded that when Vaiṣṇavism became a popular religon in Orissa and super imposed Śāktism, the Goddess Ekānamsā was worshipped in two different shrines, one with Jagannātha and Balabhadra as the Vaisnavite aspect and in another shrine she was worshipped as vimālā as the Śākta aspect of Ekānamsā. It may be observed here that by the time of the composition of Utkala Khaṇḍ of the Skanda purāṇa i.e. by the time of 12th century A.D. the Śākta deity Ekānamsā, became Vaiṣṇavised and was identified with Subhadrā.

The influence of Tāntic cult is clearly visible in the mode of daily worship of Lord Jagannāth, which is party Vedic and party Tāntric. The tantric tradition evolved various nyāsas such as Saḍaṅga nyāsa, Keśvādinyāsa, Śrusti-sthithisamhāra nyāsa, Mātrukā nyāsa, etc, Yantras such as Śrī and Bhubanesvarī, Kriyās (Mudrā) and Vīja Mantra. It is also interesting to note that the Yogic trantric system of imparting the Satcakras (Satchakra bheda) of the body is also given an important place in the daily mode of the worship of Lord Jagannātha.

The conception of Jagannāth, Balabhadra and Subhadrā as well as Sudarśana seem to have orginated from the Yogic tāntric system which gradually developed in to the Purānic and Vaiṣṇavite settings The three images are treated as one and that is why the priests simultaneourly perform the rites according to the tradition.

According to Parśurāma Kalyasūtra and Śrīmad Bhāgavata, the worshfp should be performed in three different ways[96] namely Vedic, Tāntric and Misra mode. It is mentioned in the Bhāgavata that those who are desirous of attaining moksha should worship the Lord in both ways Vedic and Tāntric.[97]

Another interesting feature seen in the ritualistic worship in the Jagannāth'ha temple is the Tāntric Pañcamal āra, where fish is substituted by green vegetables mixed with Hingu, meat by Adapachedi (ginger), wine by green coconut water offered in bel'metal posts, grain by kanti a preparation of flour and sugar and Mi'huna by the dance of Devadāsīs and the offering of Aparājita fiower and sugar.

Tāntric mode of wodship is also prevalent in the temple of Vimalā,, where animal sacrifice is made during the Mahāṣṭamī tithi. She is also offered fish from the Mahāsaptamī tithi up to Navamī, as she is conceived as Durgā.

That the Tāntric cult was prevalent in the temple of Jagannātha is evident by the fact that the builder of the temple Chodagaṅga Deva is described in the Mādalā Pāñji[98] as wellversed in Mantras and Tantras. More over the glory of Lord Jagannātha is described at two places of Rudrayāmala tantra, the date of which has not yet been fiked by the scholars. Perhaps it was completed some time before 950, as the name of this Tantra finds mention in the

---

96. 'Bhāgavata' Ch. XI p. 27

97. Ibid Ch. VIII

98. 'Mādalā Pānji' (oriya) Prachi Edn pp. 22-23.

Brahmayāmala tantra which was copied out in 1052 A. D.[99] The above date of Rudrayāmala is further corroborated by the fact that a portion of this was commented upon by Mahāmāheśvara Cārya Abhinava Gupta who lived in the latter half of the 10th century A.D.[100]

In 'Bata Abakāśa' by the saintly poet Balarāma Dāsa (16th century A.D.) Lord Jagannātha is described as being attended upon by sixty four Yoginīs, Kātyāyīnīs, Sapta Mātrikās, Vimalā and Virajā. The work also mentions seventy six mother goddesses like Śākāmbarī, Durgesvarī, Kālī, Rāmachaṇḍī, Kothesvarī Bhagavatī, Vaselī, Hadimai, Kotama Chaṇḍi, Brahmanī, Sāvitrī, Sāralā Chaṇḍī, Aparājitā, Pingalā, Sarakāma, Marakāma, Hengula, Kalapati, Kālijāi, Kālarātrī, Kālikā, Pateli, Kalāsuni, Charchikā, Chhāyā Māyā, Vijayā, Chandaghantā, Kālaghantā, Kālamukhi, TrutiKhai, Hemaṛānti, Sarpamukhī, Jāgulaī, Hādabai, Samalāi, Mangalā, Karunai, Barunai, Tarasunī, Tarenī, Jarenī, Marenī, Sapanachetī and Kanakesvarī[101] etc. The Prāchī Mahātmyama of Divija Trilochan also mentions deities like Chanda ghantā, Ramachandi, Bhagavatī etc. While describing the Arka kshetra Sāralā Dasa[102] similarly mentions Ugra tārā, Chachesvarī, Bāselī, Māhesvarī, Kālikā, Konkali, Ahimukhī, Jambukī etc. along with his chosen deity Sāralā.

BHUBANESWAR

Bhubaneswar is known as Ekāmra kshetra in several Sanskrit works like Ekāmra Purāṇa, Svarnādri Mahodaya, Ekāmra chandrikā, Kapila saṃhitā and Tirtha chintāmaṇi of Vachaspati Misra. It is

---

99. 'Report on the search of Sanskrit M.S.S.' (9906-1911) by H. P. Shastri p. 3.
100. 'Paratri shika, Laghu Vritti and Vivriti' The Kashmir series of texts and studies No. 68, 69.
101. 'Bata Abakāśa' (Oriya) by
Balaram Das, Prashi Edn p. 17, 19, 20-21.
102. 'Mahābhārata' (Oriya) by
Sāralā Das, Drona parva.

also mentioned as a Śākta pīṭha in Nāmostottaraśata and Brahma Nila Tantra, which indicate the prevelance of Tāntric cult at Bhubaneswar in the past ages. Moreover relics of Tāntric cult are profusely found in and around Bhubaneswar in their various stages of preservation, which also indicate the popularity of this cult in olden days.

The influence and evolution of Śakti worship in Bhubaneswar can be studied from the sculptures of the various temples. The most notable group of sculptures is that of Sapta Mātrukās, which are represented in the temples of Bhubaneswar from the early period. I shall discuss on सप्तमातृका at its proper place.

The temple of Vaitāl or Kapālinī which was built in C. 8th century A.D. contains on its inner wall several Tāntric sculptures, the presiding deity being a terific Chāmuṇḍā. Dr. K. C, Panigrahi[103] thinks that it is during this time the Śaktī worship made its first appearance in Bhubaneswar as no other temple preceeding it has any image of Śaktī cult as the presiding deity. According to him the Vaitāla is derived from the word vetāla or spirit who are invoked by the Tāntrikas and Kāpālikas to attain siddhi. The temple wall contains the figures of Ardhanārīśvara and Mahisasuramardinī, where as we find a group of Saptamātrikas with other Devis on the inner wall of the Vimāna or Sanctum.

During later times a few other Śakti shrines raised their heads in Bhubaneswar, the Gourī temple contains a Śakti image as its presiding deity and in the Ananta Vāsudeva temple of the 13th century A.D., Ekānaṁsā is worshipped along with Balarāma and Kṛishṇa Vāsudeva. The images of Mahīsāsuramardinī are found on the walls of the Vaitāla, Śiśiresvara, Mārkaṇḍesvara, Dvāravāsini Uttaresvara and Mohinī temple on the west, north and south sides of the Vindusarovara.[104] The Rāmāyanī and Dakshinachaṇḍi worshipped in two modern temples are two old deities of Mahisāsuramardinī. In some of the images the demon is shown as a human figure with the head of a buffalo,

---

103. K. C. Panigrahi 'Archaeological remains at Bhubaneswar' pp. 2 2-233.
104. K. C. Panigrahi, 'Archaeological remains at Bhubaneswar', p. 236.

while in others the human figure comes out of the beheaded body of the buffalo. All these indicate the popularity of Śaivism and Śaktism in Bhubaneswar and their inter relationship in the past ages. According to Dr. K. C. Panigrahi[105] the puzzling erotic sculptures on the temple walls are partly due to the influence of the Tāntrikas and Kāpālikas who profess curious philosophies about sex.

WORSHIP OF SAPTA MĀTṚKĀS AND THEIR REPRESENTATION IN ORISSAN TEMPLES.

That the worship of Sapta Mātṛkās was once very popular in Orissa is clearly indicated by the existence of a large number of Sapta Mātṛkā images in their various stages of preservation. Apart from the famous group of temples of Sapta Mātṛkās at Jājpur and the Markaṇḍeśvara temple at Puri the figures of Sapta Mātṛkās are found to be represented in the Saiva temples of Bhubaneswar. In recent years the images of these Mātṛakās have been discovered at Belkhandi in Kalandi district, near Titilagarh in Balangir district, at Kundesvara and Dharmasala in the district of Cuttack. There was once a separate temple at Bhubaneswar dedicated to Sapta Matṛkās which has now gone out of existence.[106] All these archaeological remains clearly testify to the popularity of this cult in ancient and medieval Orissa. Intensive exploration may bring to light the existence of this group in some other place of Orissa.

The mythological and Purānic origin of Sapta Mātṛkās is not unknown to scholars but when and how they appeared in sculptures is a problem before us and for this we feel it safe to depend on archaeological sources rather than on Purāṇic or traditional accounts. The worship of female spirit in some form or other can be traced to a very remote period viz: the Mother Goddess in the Indus valley culture and

---

105. The Rāmāyaṇi and Dakshinachaṇḍi worshipped in two modern turples are two old deities of Mahisamardiṇi.

106. Refer O. H. R. Journal, Vol. X, No. 4, p. 74.

the Divine energy in Rig vedic age[107] Their names appear in the Purāṇas and the Mārkaṇḍeya-informs us that the Mother Goddess came in to being to suck the blood of the demon Rakta-bija to death, When Chāmundā and Kālarātri drank the blood of the demon, the mothers danced in a circle.[108] The Mother Goddesses are principally seven or eight and they are known as Mātris or Sapta Matṛkās.[109] These Mother Goddesses though originally were seven or eight were at times raised to sixty-four when they assume the name of Yoginis.[110]

We don't find mention of the names of Sapta Matṛkās in नामलिङ्गानुसाशनम् of the celebrated lexicographer Amar Singh[111] which is generally assigned to the 4th century A.D. This indicates that the conception of Sapta Mātṛkā developed after the compilation of this work. The description of Sapta Matṛkā is found in the Devī Mahātmya which is the "Principal sacred text of the worshippers of Durgā in Northern India.[112] The compilation of Devī Māhātmya or the Saptasati Chaṇḍī is an important land mark in the history of Devī worship in ancient India. This work probably was composed in the 6th Century A.D. and was later on incorporated in the Mārkaṇḍeya Purāṇa.[113] We also find the names of Sapta Matṛkās in other Purāṇas like Varāha, Vāmana and others.

The Gaṅgādhāra stone inscription of the time of Kurmāra Gupta I, does not mention the exact number, nor does it contain their respective names. The preamble of the inscriptions of the early Calukya kings does not mention the respective names of these mother,

---

107. Cf. Devi sūkta RV. X, 125.
108. For description of Kalaratri, see 'Probodha Chandrodaya-41.
109. ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा
वाराहीच तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः
110. Refer I.H.Q. Vol. XXXI p. 367.
111. 'Amarkosa' Edited by Dr. H. D. Sharma and D. M. G. Sardasai.
112. 'Religions of India' p. 197.
113. I. H. Q. Vol. XXXV No. 3.

but simply describes them as the decendants of Hāriti[114] and nurtured by the seven mothers. Varāhamihira is silent about the number and names of these Goddesses. He simply says that 'Mothers are to be represented with cognisances of the Gods corresponding to their names.[115] While commenting on this passage, Utpala, names them as Brahmāṇī, Vaiṣṇavī, Raudrī, (Māheśvarī), Kaumārī, Aindrī, Yāmī, Vāruṇī and Kauberī in the first instance; then says that there are other Mātṛgaṇas like Nārasiṁhī, Vārāhī and Vaināyakī which are to be understood.[116] In subsequent Hindu rituals the names of the sixteen Mātṛkās with Gourī in the beginning are mentioned. The Purāṇas and Āgamas mention Sapta Mātṛkās to be seven in number, but Varāha Purāṇa states that these Mother Goddesses are eight in number and they represent eight mental qualities which are morally bad. According to Varāha Purāṇa Yogeśvarī represents Kāma or desire, Māheśvarī, Krodha or anger, Vaiṣṇavī lobha or coveteousness, Brahmāṇī-Mada or pride, Kaumārī-Moha or illusion, Indrāṇī, mātsarya or fault finding, Yāmī or Chāmuṇḍā Paisunya that is tale bearing, and Vārāhī Asūyā or Envy. In the Suprabhedāgama it is said that these seven Mātṛkās namely Brāhmāṇī Māheśvarī, Vaiṣṇavī Vārāhī, Indrāṇī, and Chāmuṇḍā were created by Brahma for the purpose of killing Nirrita. The āgama gives briefly the general description of these Goddesses in the following manner-Brāhmaṇī should be sculptured like Brahmā, Māheśvarī like Maheśvara, Vaiṣṇav like Vishṇu, Vārāhī as short woman bearing a plough as her weapon, Indrāṇī like Indra and Chāmuṇḍā as a terrific woman. This last Goddess having her hair in dishevelled condition should possess a dark complexion and have four hands. She should wield the Triśūla in one of her hands and carry a Kapāla in another. All the Mātṛkās are to be seated images and should have two of their hands held in the Varada and Abhaya poses, while the other two hands should carry weapons approximate to the male counterpart of the female powers. They are shown seated upon Padmāsanas in the sculptures.[117]

---

114. हारती पुत्राणां सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानाम्
115. 'Brhatsamhita.' Ch. 57 V. 56.
116. एवमन्यासां नारसिंही-वारही-वैनायकी नामाष्युह्यम्।
117. T.A. Gopinath Rao-'*Elements of Hindu Iconography*' Vol. I Part-II, p. 383.

As regards their representation on stones the earliest images of Sapta Mātṛkās are found, carved in the projecting rock about 30′ long and about 5′ in height near the village Ghoral in the Titilagarh Subdivision of the Bolangir District. Mr. Beglar who visited this area during the year 1874-75 and 1875-76, had wrongly identified these figures with the Navagrahas.[118] The figures were identified with the figures of Sapta Mātṛkās with their two associates Gaṇeśa and Virabhadra in the 1953 by Sri K.N. Mahapatra, now the Assistant Director of Archaeology. The figures were rudely carved and have been mostly obliterated due to weathering effect. They may be tentatively asigned to the 7th Century A,D.

There was a very old temple of Sapta Mātṛkās at Bhubaneśwar, not very far away from the main gate of the Lingarāja temple. This was noticed by Late M.M Ganguly who has mentioned the temple as follows. On the Kumbha of the Jungha it may be noted is seen a dori or bead, similarly met with in the temple of Sapta Mātṛkās near the temple of Liṅgarāja.'[119] But during the course of the last 50 years this monument dedicated solely to the worship of Sapta-Mātṛkās has gone out of existence due to reckless dismentaling of old structures.

The next early representations of Sapta Mātṛkās are to be found, in the lowest panel of the Bāḍa of the Jagamohana of the temple of Paraśurāmeśvar, which is slightly recessed and divided into compartments by decorated pilasters. Within these compartments along with other deities of the Brāhminical Pantheon the Mātṛkā Goddesses have also been represented with their two associates Virabhadra and Gaṇeśa Gaṇeśa has got no mount here and presents an unique feature in his having a human visage with trunk of an elephant attached to the chin. Next to Gaṇeśa we find Chāmuṇḍā in her most terrific form. In the upper right hands she holds a lily and a vijapuraka, where as she holds a long trident and a vase respectively in her left hands. The drooping

---

118. *"Archaeological Survey of India"*, Vol. XIII, p. 138.

119. M. M. Ganguly *"Orissa and her remains"*, p-237.

breast, sunken belly and on the whole its emaciated body are the noteworthy features of its representation. The representation of this figure differs in many respects from the later representations of Chāmuṇḍā. First we do not find a snake over the head of the mother which is invariably found in the later group of its representation. Secondly in the pedestal we find an owl, but not a corpse eaten by jackels Mātṛkā Vārāhī occupies the next compartment and has been represented with a lotus and a fish in the right hands and a Kuṭhāra and a vase in the left. The next Mātṛkā Indṛāṇī of the Parśurāmeśvara temple is being represented with its usual mount elephant and it holds a Vajra in the left and vase in the right. The figures of Vaiṣṇavī has been represented with the usual attribute of Viṣhnu and Kaumārī holds a Vijapuraka in the right hand and a gadā and a Padma in the left hands. The next figure may be identified with the figure of Brāhmaṇī and it holds an Akshamālā and Vijapuraka in the right hands and a flower and a vase in the left.

After Parśurāmeśvara, we find the representation of Mātṛkā images in the temple of Vaitāl which may be asigned to C. 8th century A.D. A group of Sapta Mātṛkā headed by Vīreśvara begins in the eastern wall and ends in the centre of the western wall. The presiding deity enshrined in the central niche is an eight armed Chāmuṇḍā who has been depicted in her most terrific aspect, which is suggested by her sunken eyes, the hood of a snake on her head and a corpse under her feet with a jackel dragging it. Since the deity is always covered with a piece of cloth her other terrific aspects cannot be studied. All the Mātṛkās including Vīreśvara and excepting the presiding deity Chāmuṇḍā have certain characteristics common to them all. They are all seated in Yogāsana on full blown lotus, and at their top we find two flying Gandharvas. A halo surrounds the head of each deity. The Sapta Mātṛkās headed by Vīreśvara which begins in the eastern wall have been arranged in the following order :— namely, Vīreśvara, Brahmāṇī, Māheśvarī, Kaumārī, Narāyaṇī, Vārāhī, Indrāṇī and Chāmuṇḍā. From Chāmuṇḍā another row of seven deities begin from the middle of the western wall, the first of which is a female deity holding a trident and a lily in the right and left hands

respectively. The image may be identified with Sivadutī, who is invoked in association with the Mātṛkās in the Mārkandeya Chaṇḍi. The next niche is being occupied by Gaṇeśa, which has been represented hear with other attributes, but no mount is found below the pedestal. The remaining deities occupying the other niches of the temple do not come under the scope of our discussion. No peculiarity is to be noted in the representation of the Mātṛkā deities of Vaitāl temple except in the representation of Narāyaṇī or Vaiṣṇavī, that has no Garuḍa in tha pedestal but we find a human figure with her left hand upraised. The other attributes of Nārāyaṇī namely Śaṅkha, Chakra and Gadā are found in her hands.

Next in order of chronology may be placed the Sapta Mātṛkā figures of Belkhaṇḍi in the Kalahāṇḍi district. The excavation at Belkhaṇḍi, conducted by Sri K. N. Mahāpātra, the then Archaeologist of Ex-Kalāhāndi State brought to view the lower portion of a temple of Sapta Mātṛkā at Belkhaṇḍi or Rājāpadar, standing on the confluence of the Utai and the Tel rivers in the district of Kalāhāṇḍi The Mātṛkās have been arranged near the western wall in the following order:— Kaumārī, Māheśvarī, Brahmāṇī Vaiṣṇavī, Vārāhī and Chāmuṇḍā. The deity Vireśvara is found to the south-west corner of the temple. This is the only temple discovered so far in the valley of Tel-Mahānadi river. Mr. Beglar who surveyed this area during the year 1874-75 and 1875-76 made no mention of this temple. The group resembles in every respect, the well known Sapta Mātṛkā statues standing on the Dasāśvamedha ghāṭ of the river Vaitaraṇī at Jājpur and those on the Mārkaṇḍeśvara tank at Puri in Orissa. On the basis of its style Sri K. N. Mahapatra believes that the Chaṇḍī temple at Belkhaṇḍi was built by the renowned Somavaṁśi kings to whose glorious rule the construction of the Sapta-Mātṛkā temples of Puri and Jājpur is also attributed.[120] This new discovery of Sapta Mātṛkā temple in this un-explored valley of the Tel river throws a flood of new light on the cultural and religious history of this region known as Kośala and helps us in tracing the missing link in the history of Kośala and Utkala.

---

120. J. K. H. R. S. Vol. II, p. 168.

Belonging to the same period of the Chaṇḍi temple at Belkhaṇḍi, the temple of Mukteśvara at Bhubaneśwar, contains the figures of Sapta Mātṛkās in its cusped and coffered ceiling. Considerable ingenuity and artistic skill have been displayed in the arrangement of Sapta Motṛkās in an eight petalled lotus at the centre, each petal being occupied by a deity. The main characteristic of the representation of the Matṛkās is that all the Mātṛkās except Chāmuṇḍā hold babies in their arms, which in this respect agree to their counter parts discovered at Jājpur and Purī and illustrated by R. P. Chanda,[121] R. D. Banerjee[122] and Dr. H. K. Mahtab.[123] The representation of Sapta Mātṛkās along with Vīreśvara differ from their early representation and Vīreśvara here holds a sword, but not a trident. The other associate Gaṇeśa has been omitted here and Dr. K. C. Panigrahi believes that this omission might have been necessiated by the lack of space in the lotus which contains eight petals for carving eight figures only.[124] This might just be possible, as the association of Gaṇeśa is found in this group of Mātṛkā figures and mention may be made of Mātṛkā figures of Mārkaṇḍeśvara group at Puri.

Two sets of Sapta Mātṛkā figures now survive at Jajpur. All these figures have been carved out of chlorite stone. Mr. R.P. Chanda remarks "The most remarkable feature about these Jajpur images of the mothers is that they disclose keen sense of solid masses a group of three dimensional? relations on the part of their authors."[125] Mr. Chanda has asigned these images to the 8th century A.D.[126] But the association of babies with the figures of Matṛkas appears to be a later iconographic feature, which probably appeared for the first time in the temple of Mukteśvara, which may be asigned to the beginning of the Soma Vaṁśi rule.

---

121. '*Memories of the Archaeological Survey of India*' No. 44 Plate-I, VI, VII & IX
122. '*History of Orissa*'. Vol, II pl. between pp. 400-401, 404-405, 416-417.
123. Ibid. Pl. between pp. 30-31
124. '*Archaeological remains of Bhubaneswar,*' p. 136
125. '*Journal of the Royal Society of Art,*' Agu. 17, 1934, p. 1016
126. '*Memo Arch, S.I.,*' No. 44 p. 14

Mātṛkā worship received a great impetus during the period of the Somavaṁśi kings and it is just probable that this new conception of association of babies in the arms of the mothers might have been initiated during their period.

A similar set of Mother Goddesses is found on the bank of the sacred tank at Puri known as Mārkaṇḍeya Sarovara and five of these images have been illustrated by Dr. J. N. Banerjee.[127] The mothers made of the chlorite stone very much resemble the Jajpur mothers in type. The faces of the Jajpur mothers show natural expression, but the Puri mothers while holding and caressing the child with their right lower hands in exactly the same manner as their sisters of Jajpur, are themselves lost in meditation [128] On the basis of the distinctive trait that characterizes the Mātṛkā images of these places, they may be assigned to the same period of Somavamsi rule.

In Mādalā Pāñji, we get the mention of a name of a king known as Bhima Keśari who installed seven sisters on the eastern side of the Mārkaṇḍesvara tank, The Pāñji says: – That the king was a great worshipper of Devī. He installed seven sisters, on the eastern side of the Mārkaṇḍesvara tank.[129] So it is quite clear that the Sapta Mātṛkās, still existing on the eastern side of the Mārkaṇḍesvar tank, Puri, and noticed by the scholars like R. P. Chand, R. D. Banerjee and others, are being referred to in the Pāñji as the seven sisters (Sāta Bhauni) installed by Bhima Keśhari. This Bhima Keshari has been identified with the famous Soma Vamsi ruler Bhimaratha. These facts, together with other iconographic features of the images of this group as discussed above help us in assigning the images of this group to the glorious rule of Somavamsi kings.

There was a temple of Sapta Mātṛkā near the Alakā river in the village of Sanlapur under the Jagatsinghpur Police station in the Cuttack district of which only the lower portion up to a height of 3" is

---

127. '*Development of Hindu Iconography*', Plates XLIII Fig. 1 3 5 Plate—XLIV Fig. 3 & 4.
128. '*Journal of Royal Society of Arts*', Aug. 17, 1934 p. 1016.
129. '*Madala Panji*' (Prachi edition) p. 19.

found underground, its upper portion being broken during the course of years. All the images are found in sitting posture holding a child on their laps. Thus they resemble the images found in the Vaitaranī valley and Markaṇḍeśvara group of Puri. The images have been arranged in the following manner :— Vireśvara, Kaumārī, Brahmāṇī, Māheśvarī, Nārasinghī, Vārāhī, Indrāṇī, Vaiṣṇavī, Chāmuṇḍā and Ganeśa. All the images are here in a good state of preservation, except the figure of Vaiṣṇavī, the head of which is missing The figures are of real objects of art. The several ornaments have been beautifully displayed and the introspective look on the face of the figures have been beautifully shown by the artists.

Belonging to the same group, the figures of Sapta Mātṛkās from Dharmsālā, which have now found place in the Orissa State Museum are worthy to note. Only four of the Mātṛkā figures namely Vaiṣṇavī, Vārāhi, Indrāṇī and Chāmuṇḍā were brought to the State Museum. The figures measure roughly $2\frac{1}{2}' \times 7\frac{1}{2}'$. The several ornaments, including the beautiful crown of the figures are artistically displayed. All the figures except Chāmuṇḍā with babies in their arms are lost in meditation, and in this respect they very much resemble the figures of Mārkaṇḍeśvara tank at Puri. It is very probable that both the groups are contemporary of each other.

In a temple at Shergarh in the district of Balasore there is a unique plaque of Hara-Pārvati carved in chlorite stone over the lintel of the temple containing the figure of Gaja-Lakshmi. In the lower panel of that plaque, below Hara-Pārvati we find the following images in the order given below :— Chāmuṇḍā, Vārāhī, Kaumārī, Māhesvarī, image not identified may be Virabhadra, Brahāmaṇī, Vaiṣṇavī, Pārvati and Gaṇeśa. This temple can tentatively be assigned to the 1st part of the 13th Century A.D.

In the Mohini temple of Bhubaneswar, on the south bank of Bindu-sarovara the presiding deity is Chāmuṇḍā (one of the Sapta Mātṛkās) who has been represented in her most terrific form. Except Chāmuṇḍā, no other Mātṛkā deities are to be found here, and this ten armed Chāmuṇḍā is terrific to behold.

Besides the temples of Mohinī and Vaitāl, Chāmuṇḍā is also worshipped in the sanctum of the Chitrakārini temple at Bhubaneswar. Chāmuṇḍā is also the presiding deity, in another temple at Khiching in the Mayurbhañj district. Since the image is always covered with a piece of cloth, it is not possible to study the outer anatomical features of the figure. In the same temple of Khiching, there is also a figure of a four armed Vaiṣṇavī with Garuḍa beneath her seat which is a real object of art. The Goddess gracefully holds the Chakra and Saṅkha in her back hands, has her front right hand in the abhaya pose and claps the child with her front left. The several ornaments, including the artistic crown are tastefully displayed and the mellow introspective look on her face has been beautifully shown by the artist.

In the Prachi valley, there is a temple of Vārāhī at Chaurasi near the village of Tulasipur. The special feature of the temple is that its Jagamohana resembles that of Parsurameśvara temple at Bhubaneswar where as the main temple is a replica of the Gourī temple of Bhubaneswar. The presiding deity Vārāhī is a two handed beautiful image with a fish in one hand and a kapāla in the other hand. This temple can be definitely assigned to the Bhauma cultural age.

There was also a separate temple of Vārāhī at Bhubaneswar on the northern limit of Ekāmra Kshetra, which was perhaps destroyed at the time of the beginning of construction of the New Capital. We find the mention of this Vārāhī temple in a verse quoted below demarcating the area of the Ekāmra Kshetra in the past ages :—

"खण्डाचलात् सामासाद्य यत्रास्ते कुण्डेलश्वरः।
आसाद्य वाराहीं देवीं वहिरङ्के श्वरावधि ॥"

From the above discussion on Saptamātṛikās it may be observed that the figures of Vārāhī are always associated with fish in their hands which perhaps suggest some Tāntric affiliation as fish is one of the five 'Ma's i.e., Panchamakāra.

Regarding *matsya* (a fish) as one of the Āyudhas of the Goddess Vārāhī Dr. J.N. Banerjee remarks that *matsya* being one of

the 5 makāras, it was probably a Tāntric feature,[130] though literary evidence in this respect is still awaited with eagerness. It may be remarked in this connection that fish as one of the two or four weapons of the boar-faced Vārāhī, have been discovered in Orissa from the 7th century A.D. [131]

The depiction of Vārāhī with a fish suggests some Tāntric affiliation. In a Buddhist literary text entitled the Dharma-dhātu-vāgīśvara-Maṇḍala of the Nishpanna-yogāvatī wherein the boar faced Vārāhī, holds a *Rohita* fish and a skull (*Kapala*) in two hands and the remaining ones are placed in the *añjali* pose, the vehicle being an owl.[132]

It is regretted that no literature reference regarding association of a fish with Vārāhī has yet been traced in the Brahmanical literature.

In some Vārāhī images we find the Goddess seated on a human corpse.[133] There is a similar image in the Jagannāth temple on mount Abu [134] Literary evidences are available from the Devī Bhāgavata[135] regarding such image "बाराही शूकराकारा प्रौढ़प्रेतासानामता"।

We have not noticed such figures of Vārāhī seated on human corpse in Orissa. Future explorations may throw some light in this direction.

---

130 *Development of Hindu Iconography*, P. 50.

131 In the temple of Parāsurameśvara.

132. वाराही कृष्णपेचकारूढ़ा चतुर्भुजा सव्यावामाभ्यां
रोहित मत्स्य कपालधारय द्वाभ्यां कृताञ्जलीः।
Parisad Patrika, Hindu quarterly, Vol. IV (3) P. 50.

133. R. C. Agarwalla, Ambika temple at Jagat, *Arts Asiatique, Paris*, X (i) 1964, pp. 43-66.

134. '*Bulletin of Baroda Museum*' XIII by Fig. 8 P. 13

135. '*Devi Bhagavata*' Venkateśvara press, 1982 V. S. Skanda 5, Chapter 28, page 24.

XXXVIII

SAKTI-WORSHIP IN THE PRĀCHI VALLEY.

There are many unexplored parts in Orissa where Tāntric cult had a dominant influence over the religious life of the people. During the year 1954-56 the Prāchi Valley exploration which was undertaken under the auspicious of the Utkal University, brought to light many unexplored areas which is really interesting to the scholars.

Though religious activities in the valley were cosmopolitan in nature, I have confined my discussion only on the extent of Tāntric cult in these areas. Tāntric images in large number and variety are found in many places of this valley. Among such images, those of *Mahisāsura Mardini* with two, four, six, eight, ten, twelve and sixteen arms are worthy to note for their style and technique.

The earliest figure of *Mahisāsura Mardinī* so far found in the Prāchi Valley is a two-armed figure which measures roughly 5" × 3". The Goddess is depicted in her usual demon-killing pose with her right foot placed upon the head of the buffalo which lies kneeling on the ground The Goddess pierces with her right hand with a long spear in to the neck of the animal, whereas in her right hand she holds up the tail of the animal. The noteworthy feature of this figure is that the *Vāhāna*, lion is absent. She wears a *sārī* on her loin and the scarf on her shoulder. The head-dress is in the *Jatāmukuta* style which is interesting to the students of Orissan iconography.

This two armed variety of Durgā is very rare in India. The Dhyāna Mantrā of Vīrajā at Jajpur indicates that the Goddess is of two armed variety, but this image being always concealed under the clothes, it can not yet be verified That is why this two armed *Mahisāsura Mardinī* is unique in nature and we have not yet been able to find such type of figure anywhere else in Orissa.

The four armed images found in Madhava and Muttian are artistically carved out of black chlorite stone. The images of Madhava known as *Durgāmādhava* have been preserved inside the

sanctum of the temple of Madhavananda. These two images represent an ideological synthesis between Saktism and Vaiṣhṇavism. The image of Durgā, though small measuring only 8"×6" exhibits a remarkable quality of plastic treatment. The Goddess is represented in her demon-killing attitude. She stands on the lotus throne with her left foot on the lion and her right foot on the buffalo. The severed head of the buffalo rolls down the lotus throne. The demon is depicted in the human form. The Goddess brandishes a sword with the upper right hand round her head and rings a bell with the upper left, while with her lower right and lower left hands she pierces a heavy trident in to the heart of the demon. She wears a sāri and a scarf on her shoulder, which is found fluttering in the wind.

The Durgā figure at Muttian enshrined within a brick temple is brilliantly represented. The Goddess holds a discus and conch shell in her two upper hands while with her two lower hands she pierces the trident in to the heart of the demon. On iconographic consideration she may be regarded as a variety of Jaya Durgā, because it answers the characteristics of Jaya Durgā to some extent as given by Pandit Gopinath Rao (Vide *T A. Gopinath Rao, Elements of Hindu Iconography*, Vol. I, Part-II, P. 344).

A six armed variety of Durgā which is rarely found was brought to light at Astaranga during the exploration in the Prāchī Valley. It is made of sand-stone and measures 44"×17". The Goddess represented in her usual demon killing pose pierces a heavy trident on the back of the demon with one of her right hands and pressing tightly his mouth with another. In another two right hands she holds a sword and the arrow and carries the shield and the bow in the two other left hands. The demon though in the human form, has been represented with the head and tail of a buffalo. He carries a sword in the right and a shield in the left and tightens a belt on the waist to which a small dagger is attached. The significant feature of the figure is that her *vāhāna* lion is absent. This image may be assigned to c. 5th or 6th century A.D.

Images of eight armed variety of Durgā are widely found in Orissa. Such images are found from Mayurbhanj in the north to Ganjam in the south. In the Prāchi Valley such images are found at Amarkuda near Niali, in the temple of Rameśvara at Rameswargarh and also at Maṅgalpur near Kakatpur. The eight armed image at Amarkuda is placed to the left of the famous twelve armed Durgā. The image is not in a proper state of preservation. She holds a discus and a trident in two of the right hands, of which the other two have been damaged. In her left hands she holds a lotus, bow and snake, the remaining one being placed on the face of the demon. A devotee is depicted to the right side of the Goddess.

There is another eight armed image of Durgā to the right side of the main entrance of the temple of Rameśvara at Rameśvargarh. The image measures 27"×14½". The image is badly mutilated and only a bow is seen in one of her left hands while only three weapons viz. the sword, the quiver and the trident piercing the head of the demon are seen in her right hands

The eight armed Durgā at Maṅgalpur, only half a mile to the south of Kakatpur is in a very bad state of preservation. The lower most hands of the Goddess carries a severed head (छिन्न मस्तक) Her other āyudhas are not distinctly visible. The priests worship the Goddess as Bana-Durgā, though iconographic characteristics of Vana Durgā are not found here. The Goddess has been represented here as a Tāntric deity.

The worship of ten-armed Mahisāsura Mardinī Durgā was popular in Orissa and her representation was more widely prevalent. Such images are found at Lataharan and at Ambapada near Chaurasi in the Prāchi valley.

The Goddess at Lataharan carries the sword, arrow from the quiver, trident piercing the forehead of the demon, dagger and discus in her five right hands and the shield, stringed bow, bell, snake, noose encircling the head of the demon, in the four of her left

hands, while with the remaining left hands, she presses the chest of the demon. The head of the buffalo is cut off and the demon in the human form is coming out of the severed body of the buffalo.

The image of Ambapada measuring 29"×14" is in a good state of preservation. It is chiselled out of black chlorite. The Goddess is represented gracefully in *Tribhṅga* pose. Her right foot is placed on the hind part of the buffalo, which is lying dead with its severed head. The left foot of the goddess is placed on the back of her *Vāhāna* lion which is ferociously attacking the demon. The Goddess carries in her five right hands the sword, an arrow drawn from the quiver, trident pierced in to the head of the demon, discus and Sakti stuck to his back while in her five left hands she holds the battle axe, stringed bow, dagger, shield and snake that surrounds the head of the demon.

A small inscription is found engraved at the pedestal of the image which runs as follows :—

युवराकेन अस्य भट्टारिका उत्कीर्णा।

The image of this Bhaṭṭarika is carved out by the scupltor Yuvaraka. Palaeographically the image may be assigned to the 8th century A.D.

There is a life size image of Mahisamardinī Durgā enshrined inside a thatched temple at Amarakuda near Niali The Goddess carries in the five left hands shields, mace, bow, bell and snake; the remaining hand being placed on the face of the demon. In her five right hands she carries a sword, *Kartri*, club, trident and arrow; the remaining one being in the *Varada* Pose.

An image of Chāmuṇḍā is represented with Durgā. Chāmuṇḍā is represented invariably in association with Durgā because she is said to have rendered valuable help to Durgā in her fight against the demon Raktabīja to death. In the Prāchi valley we have almost as many numbers and varieties of Chāmuṇḍā as of the images of Durgā.

The four armed variety of Chāmuṇḍā is found in the temple of Aṅgeśvara at Pitapada, in the temple of Durgā at Mottian and in the temple of Grameśvara Siva at Lataharan. The six armed variety has been enshrined at Kapileśvarapur and near Tulsipur. Two images of eight armed Chāmuṇḍā are found in the temple of Somanath near Kakatpur. In a niche of the northern wall of the Maṅgalā temple at Kakatpur is seen a ten armed variety of Chāmuṇḍā, which is being worshipped as the village deity (*Gramdevati*) of Chaurasi and is called by the local people as Jagulai. The twelve armed representation of this Goddess is found at Niali Nuagaon, close to the temple of Sobhaneśvara and here she is known as *Chandaghanta* and sometimes as Katyāyini. The Goddess is referred to by the Prāchi Mahatmya as a fearful Goddess to be propitiated with blood and wine (P. M. Ch. VI).

The four armed image at Aṅgeśvara and Mottian are dancing with intoxicated fury on corpses. They carry sword, *damaru*, skull cup and either *trisula* or *khatāvaṅga* in their hands. The image of six armed Chachakei at Kapileśvarapur, sits in *ardhaparyanka* attitude on a double lotus placed above the dead body. The Goddess is represented in her most terrific aspects with sunken belley, ribbed chests wearing a garland of skulls. In the three right hands she carries the sword, *damaru* and the skull cup and in the three left she carries lotus bud with rosary, *khatāvaṅga* and Vajra.

Among the eight armed varieties the image at Someśvara is worthy of note. The Goddess carved out of greenish chlorite measures 20"×11". She is represented in the dancing pose holding in the right hands *damaru*, skull cup, and a dagger while the remaining hand bestows a boon to the worshipper depicted below. In her four left hands, she carries *khatāvaṅga* on which lies a dead body, rosary, another Khatāvaṅga and human head. She wears a garland of skulls and a serpent belt surrounds her waist. Her head dress is terrifically represented with a small garland of skulls flanked by two human hands which is surmounted with the hood of a cobra. Flames of fires are rising upward reprsenting her hair knot. Inspite of all these terrific aspects, the Goddess looks calm and peaceful with half closed eyes expressing deep meditation.

There is a ten armed Chāmuṇḍā at Chaurasi locally known as Jagulai. She sits in Ardhaparayanka attitude on a dead body which is lying prostrate on a double lotus. On either side of the lotus stalk two jackels are seen feeding on the dead body. An important feature of the image is that a human head is visible inside her belly. The Goddess puts on her loin an elephant skin and the head of this elephant is depicted in low relief above the head of the figure. The Goddess carries in four of her right hands *damaru*, sword, skull-cup and a dagger, her remainnig hand being in the *abhaya* mudra. She carries a rosary in the upper most left hand while the remaining left hands carry a heavy *Khatāvaṅga* and a trident with the next hand she holds *Chhinna mastaka* and exhibits Varada pose with the remaining one.

There is a twelve armed Chāmuṇḍā called Chandaghantā at Niali Nuagaon. The image is carved out of black chlorite stone and has been badly weather beaten. As the image is not in a good state of preservation it is not possible to distinguish the *āyudhas* in her hands. The Goddess sits in *ardhaparyanka* pose but the dead body below is not visible at present

Mahisamardinī Durgā is generally represented not only in the company of Chāmuṇḍā but also with seven Māṭṛikās. But in the Prāchī valley, where a large number and varieties of these images of Mahisamardinī and Chāmuṇḍā are being worshipped, no māṭṛikā images are found there, in the company of those deities. This in fact is a strange feature and my uncle late Prof. G. S. Das, who surveyed this area during the year 1954-56, was of the opinion that the Śākta cult, that developed there appears to have drawn inspiration from a very different source.

Another important image in the Prāchī Valley is that of Maṅgalā of Kākatpur, which is enshrined in a huge temple, built recently. The temple was rebuilt on the ruins of an older shrine. The Goddess carved out of black chlorite stone, gracefully sits in

Lalita pose on the lotus pedestal, below which are depicted eight *Upasikas* with *Upacharas* of worship. The Goddess is four armed and holds the full moon in the upper most right hand, the lotus flower in the upper left. She carries a rosary consisting of 27 beads which perhaps represents 27 *Nakshatras* in the lower right hand, her lower left being exhibited in the counting pose. The image under discussion reached a very high stage of plastic art and is full of life and rhythm.

Mangalā is a very popular Goddess in Orissa. It is believed traditionally that the image of Mangalā was brought to Kakatpur on the river Prāchi by a merchant of Ceylon. We can not say at present as to how far this tradition is true due to lack of materials. There is a bronze bell inside the Jagamohan of the temple which ofcourse is worthy to note. The bell contains an inscription "Grace — 15th May, 1527". The bell originally belonged to a Roman Catholic Church and very likely of the Portuguese people. It is quite reasonable to think that the Portuguese might have made an incursion on this part of coastal region where the Goddess was installed and on their being defeated it was won as a trophy.

The Tantric cult had a very long and popular career in Orissa which gave an impetus to the development of Art and Architecture in different parts of the State.

TĀNTRIC AUTHORS OF ORISSA

In recent times, we have discovered about 7 works which were really written by the Oriya Tantrics. All these seven works, the manuscripts of which are in the collection of the Orissa State Museum have been included in this catalogue. Two of these works namely 'Durgāyajana Dīpikā' & 'Tāriṇīkulasudhātaraṇginī' have been discussed by me[135] in the Orissa Historical Research Journal. A brief

135. O.H.R.J. Vol-XII No 1 P. 51-56.

discussion on these two works along with other five works in our collection is given below. Intensive exploration may bring to light the existence of some more works of Oriya tāntrikas, for which efforts are being made.

The first work under discussion is 'Durgāyajana Dīpikā, which was written by Jagannātha Achārya, who was an Oriya Tāntrika of the 18th century. He was born in the Purusottamkṣhetra of Utkal Desa which is known from the following verses of his work quoted below :

"देशेशे उत्कले चास्ते क्षेत्रेशे पुरुषोत्तमे
तीर्थेशस्योदधेस्तीरे देवेशो जगदीश्वरः ।
तत्रास्ते देवदेवेशी कवीनां जननीपुरा
तस्याः पुत्रनरेशोर्वलये धमाद्ध वर्द्धनः ?
वस्य गोत्रे समुत्पन्नो भवान्या भृत्यवंशजः
तत्राचार्य्यो जगन्नाथ आरमे यजनावलिम् ।
पूजावाक्यं गुरुः कल्पं वर्णनं वाचनं तथा
दुर्गापूजाङ्ग देवांश्च दुर्गामन्त्राधिकारिणः ।
प्रणवस्य विधिचैव मन्ताणां च निरूपणं ।
आगमेभ्य पुराणेभ्य श्रुतिभ्यः स्मृतिमार्गतः
कथ्यते सारमुद्धृत्य दुर्गायजनदीपिका ॥"

The work is dedicated to the worship of Durgā and begins with the following lines :—

श्री गणेशाय नमः

दक्षिणा मूर्त्ति नादेन ततो विन्दुश्च मूर्त्तिना (?)
शिवेन विन्दुना मूर्त्तिः दुर्गाया मुक्तयेस्तुव ।

The manuscript of this work was copied by Sri Māguṇi Mohāpātra during the 8th Aṅka year of Divyasimha Deva. The lines run thus :—

ग्रन्थकर्त्ता स्वयं व्यासो लेखकस्तु विनायकः
तयोर्विचलिता बुद्धिमनुष्याणां च का कथा ।
मागुणिरायगुरू महापात्रेणलिखित मिदं पुस्तकम् ।
दिव्यसिंह देवक ८ अङ्के इदं पुस्तकम् लिखितम् ।

On the basis of the scripts of the manuscript it may be assigned to the 17th century A.D. It may be presumed that the manuscript was copied by Sri Maguni Mahāpātra during the 8th Aṅka year of Divyasimha Deva-I, i.e, in 1695 A.D. So the author may be assigned to the 17th century A.D. This is further corraborated by the fact that the author has quoted (सम्वत्सर प्रदीप) which is a dated work of Harihara Bhattāchārya of Bengal, who flourished in the middle of the 16th century.

The second work of an Oriya Tantric author is Tāriṇikulasudhā-taraṇginī. The author of the work, Sri Rāmachandra Udgātā was probably an Oriya Tantrika, because in the Maṅgalā charaṇa verses he has offered his respects to Liṅgarāja of EKĀMRA KSHETRA. The lines run thus—

श्री लिङ्गराज शरणं

"नम द्देवराज सुहृद्राजराजं
शिरोराजराजं सुरेन्द्राधिराजम्
समन्ताद्विराजं नभः सत् समाजं
सदैकाम्रभाजं भजेल्लिङ्गराजम् ।"

As the author has offered his worship to Lord Liṅgarāja in the beginning of this work as well as at the end, and Lord Liṅgarāja being the celebrated deity of Bhubaneswar we may safely say that the author of the work Sri Rāmachandra Udgātā was an Oriya Tāntrika. But unfortunately we have not come across any other work by him and we cannot say as to which part of Orissa he belonged.

From the colophon we know that the manuscript of the work was copied by Sri Keśava Rath. In the same stanza we know the date on which the copy of the manuscript was completed by him. The lines run thus :—

"श्री वीरकेशरी नृपस्य
गुणषु अङ्के मासाश्विने विधुदिने
महानवम्यां श्रीतारिणीकुल्लसुधातरङ्गिणी
पुस्तक श्री केशवाख्य रथ शक्रसुत:।"

In the above colophon, Guṇa and Iśu stand for 3 and 5 respectively. So the Aṅka year i.e. 35 when calculated from the left to right becomes 53. Of all the Virakesari Devas, only Virakesari Deva I (1736-1793) had 53 Aṅka years during his reign, which corresponds to 1779 A. D. The exact tithī, bāra on which the copy of the manuscript was completed by the scribe is equivalent to *18th Octo. 1779,*[136] *Monday Mahānavamī in the lunar month of Āsvina.* On the basis of the date of the scribe, the date of the author may be tentatively fixed in the 17th century A.D.[137]

The third work is शारदाशारदर्च्चनपद्धति'[138] by Godāvara Miśra, who flourished during the reign of Gājapati Pratāparudra Deva (1497 to 1534 A. D). There are three palmleaf manuscripts of this unpublished work. From some verses given in the manuscript, it is clear that the author was a great scholar, and the son of a talented Pandita named Balabhadra Miśra born in the famous Kautsa family, and his mother's name was Annapūrṇā. He was a great devotee of Ambikā or Durgā and the prime minister of Pratāparudra Deva. The author Śrī Godāvara Mohapātra has been identified with कविपुङ्गव पण्डितराज. Godāvara Miśra,[139] the Rajaguru of Gajapāti Pratāparudra Deva of Orissa, whose work 'Yogachintāmaṇi' was first brought to the notice of learned society by the eminent scholar Dr. P.K. Gode[140]. Aprat from many other Sanskrit works Śrī Godāvara

---

136. Indian EPH Vol. VI, R. 361.
137. O.H.R.J. Vol. XII No.-I, P. 55
138. O.H.R.J. Vol. III No. 4, P. 186-96
139. Ibid.
140. The Poona Orientalist, Vol. IX No. 1 and 2 Pages 11, 19 (1944)

Miśra was also an author of another tāntric work[141] namely तन्त्र-चिन्तामणि which has been referred to at different verses of his work 'Hari Hara Chaturaṅga' which are quoted below :—

तन्त्रचिन्तामणौ तच्च प्रोक्तं शालादिलक्षणं
अस्मतकृते वेदितव्यं तस्मादत्र न कथ्यते
तन्त्रचिन्तामणौ यन्त्रमणिमन्त्रौषधादिकं
अस्मत् कृते तु द्रष्टव्य मभियुक्तेन तत्र च ।"

Gcdāvara was a devotee of Jagannātha in his younger days, but gradually became a Śākta or devotee of Durgā in the later part of his life.

The cause of this change of Godāvara might be due to the popularity of Durgāpujā which had been steadily gaining prominence as the greatest national festival of Orissa during the time of the later imperial Gaṅgas. In an inscription in the Śikhareśvara temple on the Kapilāsa hill in the Dhenkanal District, the Gaṅga king[142] Pratāpa Narasimgha Deva calls himself दुर्गापुत्र अपि पुरुषोत्तम(पु) त्र Sāralā Das the famous Oriya poet of the time of Gajapāti Kapileśvara Deva (1435-1465 A.D) who was a great Śākta, has sung the praise of Durgā, Sāralā Chaṇḍī and other Śākta deities in glowing terms in his Mahābhārata, the Chāṇḍipurāṇa and the Vilaṇkā Rāmāyaṇa. The writing of Sāralā Das which were and are very popular in Orissa even to day, contributed a lot towards the revival of Śakti worship in Orissa.

Gajapati Purusottama Deva (1466-1496) was a devotee of Durgā, which is known from a copper plate inscription issued by him to Poteśvara Bhatta in 1471 A. D. In this grant he begins with salutation to Jayadurgā viz. श्री जयदुर्गायै नमः[143]. In another

---

141. For details of his work, refer article by Sri K. N. Mahapatra, O. H. R. J. Vol. III No. 4 P. 186-96.

142. *Utkal Sahitya* Vol. 44, No.v, 1338 Sal.

143. J.B.O.R.S. Vol. IV P. 363

inscription of the same ruler found in Bezwada it is stated that he was blessed with the son named Pratāparudra [144] through the grace of Durgā दुर्गावरपुत्र. Purusottama Deva is known as the author of a work called दुर्गोत्सव which like the दुर्गोत्सव विवेक of Sulapani of Bengal was regarded as an authority by the later Smṛti writers of Orissa. Another work by this Gajapati is भुवनेश्वरी पूजापल्लव which though small is, historically important. It gives authentic information about the accession of Purusottama Deva through the blessings of the Goddess Bhubaneśvarī at the time of the death of Kapilendra Deva in a fort on the Krishnā river in 1466 A. D; inspite of the fact that he was a minor and not the eldest son of his father. This work was written in praise of Goddess Bhubanesvarī.[145] The steadily increasing popularity of the worship of Durgā in this age, who would vie with Jagannātha, the supreme deity of Orissa, made deep impression on the mind of Godāvara, who became a Śākta in his later days. Godāvara wrote his शारदाशरदर्च्चनपद्धति in order to rectify the defects that had crept in to the procedure of worship of Durgā, before his days. But the largest number of quotations are made from a work named Durgotasava (Folios, 29, 31, 42, 48, 54, 79) which indicates that this work was being regarded as a standard work on दुर्गापूजा in his days. Though the name of the author of the Durgotasva is not any where mentioned in शारदाशरदर्च्चनपद्धति, it may be safely regarded that this was the work Gajapati, Purusottamadeva as he is reported to have written a work bearing that name. The number of works on दुर्गापूजा was not much before his days. As such the importance of शारदाशरदर्च्चनपद्धति an authority on दुर्गापूजा. the greatest national festival of Orissa can be easily established.

The next important work is दुर्गोत्सव चन्द्रिका by Vardhana Mahāpātra, the son of the celebrated Kavidindima Jivadevāchārya. Vardhana flourished during the reign of Rāmachandra Deva-I (1668-1700) of the Bhoi dynasty. In one manuscript it is mentioned that

---

144. Mahtab – *History of Orissa* (Oriya).

145. Des. Cat. of Sans. Mss. Vol II Preface, Page XCII.

Pandit Mahāpātra had written this by the order of the king but in other manuscript the author has written that name of the king was Ramachandra Deva.[146] A verse at the end of the Baripada manuscript quoted below is historically important, as it says that he was the son of famous Rājaguru Kavidindima Jivadevāchārya and became the Guru of the Gajapati Rāmachandra Deva. He wrote this work at behest of his patron :—

श्रीजीवकविडिण्डिमो नृपगुरुः षड्दर्शनीदेशीकः
तस्यायं तनयो नयोत्तमधनः श्रीवर्द्धनस्तादृशः ।
सोऽयं भूपुरुहूतरामनृपते रादेशतः शैलजा-
पूजाकर्मकृते सतामभिमतां कांचित् कृतिं निर्ममे ॥

The work भुवनेश्वरीप्रकाश was written by the famous author Vāsudeva Ratha, who has given his identity in the introductory and concluding verses of the work as follows :—

भुवनेशीं नमस्कृत्य तत्प्रसादावलम्बनात्
भुवनेशीप्रकाशेऽयं वासुदेवन उच्यते ।

X X X

काशीनाथ रथो योऽभूत् पावकः पृथिवीतले
तस्मात् कुलप्रदीपो यः प्रकाशस्तस्यशोभताम् ॥

I am informed by Sri K. N. Mahapatra that he was a native of Bira Harekṛshnapur Śāsana near Puri and flourished in the 1st quarter of the 18th century. He was a rival of the famous Gadādhara Rājaguru who wrote 18 works on Dharmasastra. To compete with Gadādhara Vasudeva also compiled 18 works one of which is भुवनेश्वरीपूजाप्रकाश । The work प्रकाश is used to indicate his works, such as कालप्रकाश, व्रतप्रकाश etc. etc. This was done as Gadādhara had used the word Sāra like कालसार, आचारसार, शुद्धिसार etc. None of these works of this author has been published. (?)

---

146. O.H.R.J. Vol-XII No. 1 P. 51-56.

The sixth munuscript is विद्यापद्धति[147] by Kṛshna Miśra, who probably flourished in the 18th century A.D.

The seventh manuscript is Banadurgā Pūjā by Ragunātha Dasa who flourished in the 18th century A. D. and was the celebrated author of some of the Sanskrit works of Orissa.[148]

Pandit Dāsa was a native of the village Gadagadā near the Prāchī river in the Sailo circle of Orissa. His first patron was perhaps Chakradhar, a landlord of the area having his residence in the fort of Gangeswara, the ruins of which are still found. Later on, he was helped by a noted Brahmin Zamindar Pitambar Mohapatra having Kasyapa Gotrā. Nothing is known about his other patrons. He seems to be a prolific writer as he continued his literary pursuits for a long period of about forty years (C. 1710-1750) A.D.[149]

Apart from the above works of Oriya Tāntric authors recently a manuscript named ज्ञानवल्ली तन्त्र by Lakshevara has come to our notice. The manuscript is in the collection of Orissa State Museum and the author Sri Lakshevara is believed to be an Oriya Tāntrika, on the basis that the author has offered his worship to Bhubaneswari, the celebrated deity of Odra Deśa.[150] It may be pointed out in this connection that Odra has been identified with Orissa, and Bhubaneswari is the celebrated deity of Bhubaneswar. Unfortunately no other work of Lakshevara has come to our notice, which may be awaited to arrive at a final conclusion.

---

147. ज्ञानार्णवमतनैव कौलिकानां च पुष्टये
मिश्रेण कृष्ण संज्ञेन श्रीविद्यापद्धतिः कृता ।

148. For works of Raghunātha Dāsa, refer to the article by Sri K. N. Mahapatra O.H.R.J. Vol. XI No.2. pp. 73-84.

149. O.H.R.J. Vol. XI No.2 P. 34.

150. कुलदेवीं रथिरुवीना (?) मोड्रदेशनिवासिनीं
जगतः कारिणीं मायां वन्दे तां भुवनेश्वरीम् ।

Discovery of the manuscripts of Tantric works by Orissan authors clearly testify to the popularity of Tantra in Orissa during the past ages. Intensive search in the unexplored regions of this State is expected to bring to light some more manuscripts of Tantra works compiled by the scholars of this land.

The survival of a large number of deities of the Vajrayāna sect of Buddhism in different parts of Orissa bear unmistakable evidence regarding the existence of vast Tantric literature of this sect, which have become very rare during the course of many centuries, but were once very popular in this region, as the propagators of this faith like Indrabhuti, Lakshmīkarā and Padmasambhava are known to have flourished in this land during the rule of the Bhauma Karas. They were the authors of many valuable works, only a few of which have yet been published. So it is proposed to bring out a supplementary volume in future on these Buddhist Tantric works of Orissa, to complete the history of the development of Tantric literature in this area.

The present volume being my first publication on the study of Sanskrit manuscripts of Orissa, it can not be expected to be a very worthy production. Still I hope, it will be appreciated by the Oriental scholars, as a sincere attempt has been made in these few pages to throw some welcome light on a dark chapter of the cultural history of Orissa.

Bhubaneswar
6 - 2 - 65

Mahesh Prasad Dash,
Curator, Orissa State Museum,
Bhubaneswar.

Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts.

1

Catalogue No. T/1

आगम संक्षिप्तसारः

by—द्विजानन्दः

Substance— Palmleaf. No. of folia— 134. Size—14"×1.6" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Scribe—not mentioned. Condition—good. Upto 22nd chapter. Findspot— Sakshigopal, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरुभ्यो नमः। श्री दक्षिणका लकायै नमः। अविघ्नमस्तु।

नमामि कालीं कलिकल्मषापहां
प्रेतासनां चण्डनृमुण्डमालिनीम्।
विशालदंष्ट्रा निवहैर्भयानकां
सदामुदानोऽवतु दक्षिणा परा॥

नत्वा विश्वेश्वरीं देवीं कृत्वा च गुरुवन्दनम्।
साधकानां सुबोधाय कृतं संक्षिप्तसंग्रहम्॥
तन्त्राणां सारमालोच्य संक्षिप्तसारसंग्रहम्।
कृतं तत्सर्वबोधाय न कृतं मम प्रौढ़ये॥
द्विजानन्दकृतं ग्रन्थं गृह्यतां भो जनाः सदा।
ममापराधः क्षन्तव्यः क्रियते सर्वसम्मतम्॥
अथवक्ष्याम्यहं या या महाविद्या महीतले।
दोषजालै नै संस्पृष्टास्तासर्वाहि फलैः सह॥

अस्ति गुह्यतमं ह्येतज्ज्ञानमेकं सनातनम् ।
अतीव.....गोप्यत्वाद् वर्णितुं नैवशक्यते ॥

अतीवमत्प्रियासीति कथयामि तथापि ते ।
शब्दब्रह्म-मयं ह्येतत् संसारे स्थूलसूक्ष्मकम् ॥

प्रकृत्या तु विनानैव संसारे ह्युपपद्यते ।

× × ×

इतिश्री आगमसंक्षिप्तसारे विद्यामाहात्म्यकथनं नाम प्रथमः पटलः ।
इतिश्री ... ... प्रातकृत्यादिकं नाम द्वितीयः पटलः ।
इतिश्री ... ... स्नानादिविधिर्नाम तृतीयः पटलः ।
इतिश्री ... ... पूजादिविधिर्नाम चतुर्थः पटलः ।
इतिश्री ... ... अन्तर्यजनं नाम पञ्चमः पटलः ।
इतिश्री ... ... --- ... द्रव्यशोधनं नाम षष्ठः पटलः ।
इतिश्री ... ... मांसादि शोधनं नाम सप्तमः पटलः ।
इतिश्री ... ... आवरणपूजादिकथनं नामाष्टमः पटलः ।
इतिश्री ... ... उपचारदानादि कथनं नाम नवमः पटलः ।
इतिश्री ... ... होमविधिर्नाम दशमः पटलः ।
इतिश्री ... ... बलिदान-कथनं नामैकादशः पटलः ।
इतिश्री ... ... शक्तिपूजादिकथनं नाम द्वादशः पटलः ।
इतिश्री ... ... द्रव्यस्वीकारविधि र्नाम त्रयोदशः पटलः ।
इतिश्री ... ... स्तोत्रादिकथनं नाम चतुर्दशः पटलः ।
इतिश्री ... ... पुरश्चरणकथनं नाम पञ्चदशः पटलः ।
इतिश्री ... ... महाशक्तिपूजाकथनं नाम षोडशः पटलः ।
इतिश्री ... ... साधनादिकथनं नाम सप्तदशः पटलः ।
इतिश्री ... ... पुरश्चरणादिकथनं नामाष्टादशः पटलः ।
इतिश्री ... ... सामान्यसाधनाप्रकारो नाम ऊनविंशः पटलः ।
इतिश्री ... ... साधनाप्रकारो नाम विंशः पटलः ।
इतिश्री ... ... फलपाकप्रकारादिकथनं नाम एकविंशः पटलः ।
इतिश्री ... ... कालीप्रतिष्ठाविधानं नाम द्वाविंशः पटलः ।

There are some folia containing मालिनी मन्त्रराज, श्री भगवती गीता, दक्षिण कालिका गायत्रीमन्त्र, चित्रपट प्रतिष्ठा, रुद्रयामलोक्त बन्दिमोक्षणस्तोत्र, काली-तन्त्रोक्त रजस्वलास्तोत्र, दशमहाविद्या, वगलाविधान, छिन्नमस्तामन्त्रोद्धार, छिन्नमस्नाकवच, श्रीराम कवच, श्रीरामतारक मन्त्र towards the end of the manuscripts.

'श्रीम॰मालिनीमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।"

× × ×

"इतिश्रीमद्भागवते महापुराणे भगवतोगीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे हिमालय पार्वती सम्बादे ऊनविंशोऽध्यायः ।"

× × ×

"इतिश्री – रुद्रयामले बन्दिमोक्षणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।"

X X X

"इतिश्री कालीतन्त्रे ईश्वर पार्वती सम्बादे रजस्वला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।"

X X X

"काली तारा महाविद्या षोड़शी भुवनेश्वरी ।
भैरवीछिन्नमस्ता च तथा धूमावती परा ॥
वगलासिद्धविद्या च मातङ्गीं दशमीति च ।
एतादश महाविद्या मुण्ड़माले प्रकीर्त्तिता ॥"

X X X

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम् ।
सोऽपि शस्त्रप्रहारेण मृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥

इतिश्री भैरवतन्त्रे भैरवभैरवी सम्बादे त्रैलोक्यविजयं नाम छिन्नमस्ताकवचं सम्पूर्णम् ॥

No colophon.

2

Catalogue No. T/79

आचारसारतन्त्रम्

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—13. Size—15.1"×1.3". Character—

Oriya. Date— C. 18th century. Name of scribe— not mentioned. Incomplete. Condition— good, 4 lines to a page. Findspot—Kākatapur, Dt. Puri.

End— इत्याचारसारतन्त्रे सप्तमः पटलः

X X X

इतिश्री सनत्कुमारसंहितायां द्वितीयखण्डे कलञ्जमाहात्म्यं नाम प्रथमोऽध्यायः ।

× × ×

इतिश्री सनत्कुमारसंहितायां अतिरहस्ये द्वितीयखण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।

× × ×

इतिश्री सनत्कुमारसंहितायां अतिरहस्ये द्वितीय खण्डे कलञ्ज माहात्म्यं नाम तृतीयः पटलः ।

× × ×

इतिश्री स्वच्छन्दमाहेश्वरे महातन्त्रे श्रीपार्वती सम्बादे विजयाकल्पः समाप्तः ।

No colophon.

3

Catalogue No. T/3

आनन्दलहरी

by—शङ्कराचार्य्यः

Substance— Palmleaf. No. of folia—98 Size—12.3″×1.5″. Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century Complete. Condition—some folia are worm eaten. Findspot— Sakshigopal, Dt. Puri.

There are some folia containing गोपालसहस्रनाम, शिवसहस्रनाम, भक्तिरत्नावली by—विष्णुपुरी (a portion only) and स्वरपद्धति (incomplete) towards the end of the manuscript.

Beginning of स्वरपद्धति—

श्री रामचन्द्र शरणम्, श्री गणेशाय नमः ।

यो रामचन्द्र इव भाति पुरामुरारे-
रात्मार्पितैक विभवोऽद्भुत कीर्त्तिराशिः ।

भूमीश्वरानसुरकल्प तुरस्क संघा-
दुर्द्धर्त्तुमैहत बभूव स रामचन्द्रः ॥
ततोऽभवत श्री पुरुषोत्तमाख्यः
विख्यात कीर्त्तिर्वसुधाधिनाथः ।
ततोऽधिजातो बज्रभद्र भूपो
निवारितानेक दुरन्तभूपः ।
तस्मान्मुकुन्दो नृपतिः प्रजातो
बाल्यान्मुकुन्दैक-सखः प्रकीर्त्तिः ।
दुष्टारिनाशार्पितचित्तवृत्तिः
भूमीश्वराराधनचित्तवृत्तिः ॥

तस्य श्रीविजयप्रशस्तिरचनाकर्त्तुं मुरारेः पदे
नत्वा कोऽपि कुतुहलात् कृतितरो होराविदां प्रीतये ।
दृष्ट्वानेक विचित्र वाक्य बहुलान् ग्रन्थान् स्वरज्ञप्तिकान्
भूयोऽल्पै र्वचनै र्विचित्र बहुलै राह स्वरपद्धतिम् ॥

No colophon.

4

Catalogue No. T/12

उग्रतारापद्धतिः

or

महोग्रतारासपर्य्याविधिः

by—दामोदरानन्दः

Substance—Palmleaf. No. of folia—75. Size—12.6"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Conditon—good, Incomplete, upto 5th chapter only. Findspot – Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरवे नमः । श्री परम देवतायै नमः ।

अमन्द मन्दार-कदम्ब सुन्दरं
समग्र बृन्दारकबृन्द वन्दितम् ।
प्रणम्य तारां चरणाब्जयुग्मकं
लिखामि मन्त्रोद्धरणाब्द पुस्तकम् ॥

अविघ्न मस्तु—

नीलपदारविन्दं लब्ध्वाभवसरसिसंभूतम् ।
गुरुगीतौ एकया कोऽपि (?) तारापूजाविधि तनुते ॥

The following authorities quoted in the work are given below:

कल्पद्रुमः, कालीतन्त्रम्, कुलचूडामणिः, कुलार्णवम्, गौतमीय, तन्त्रसारः, ताराकल्पः, तारातन्त्रम्, ताराप्रदीपः, नन्दिकेश्वर संहिता, नीलतन्त्रम्, भैरवीतन्त्रम्, मत्ससूक्तम्, महोग्र-ताराकल्पः, मुण्डमालातन्त्र, योगिनीहृदयम्, रुद्रयामलः, वीरतन्त्रम्, शारदाटीका, श्यामारहस्यम् ।

इतिश्रीमदुग्रतारायां अथर्व वेदोक्ता उपनिषत् समाप्ता ।

X X X

इतिश्री दामोदर कृतौ तारापद्धत्यां प्रथमः परिच्छेदः ।

X X X

इतिश्री दामोदरकृतौ श्रीमदुग्रतारापद्धत्यां मन्त्रार्थनिर्णयो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ।
इतिश्री ... ... दीक्षानिर्णयो नाम तृतीयः परिच्छेदः ।
इतिश्री ... ... मन्त्रमाहात्म्यप्रदर्शनं नाम चतुर्थः परिच्छेदः ।
इतिश्री ... ... पुरश्चरणनिर्णयो नाम पञ्चमः परिच्छेदः ।

There are some folia containing अष्टाक्षर गोपालमन्त्र, षड्क्षर वक्रतुण्ड मन्त्र, पञ्चाक्षर शिवमन्त्र towards the end of the manuscript.

No colophon.

5

Catalogue No. T/37C

उग्रतारापद्धतिः

by—दामोदरानन्दः

Substance—Palmleaf. No. of folia—40. Size—13.1"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—1918. Name of scribe—Govinda Patha Śarmā. Incomplete. Condition—good. Findspot—Khurdha area, Dt. Puri.

Text same as in Cat. No. T/12.

There are following Stotras and others towards the end of the manuscript.

तारिणीकल्पः (इतिश्री रुद्रयामले तारिणीकल्पेऽष्टत्रिंशः पटलः), वक्रतुण्डःकल्पः (इतिश्री ब्रह्मवैवर्त्ते श्वेतप्रणीते वक्रतुण्डकल्पः), वक्रतुण्ड महामनुकल्पः (इत्यङ्गिरसे वक्रतुण्ड महामनुकल्पः समाप्तः), गणेशविग्रहकवचम् (इतिश्री शाम्भवीतन्त्रे देवदेवी सम्बादे गणेशप्रकरणोपाख्याने श्रीगणेशविग्रहकवचं संपूर्णम्), गणेशस्तवराजः (इतिश्री ब्रह्मवैवर्त्ते गणेशस्तवराजः समाप्तः), भुवनेश्वरी पूजा, भुवनेश्वरी कल्पः (इति संमोहन तन्त्रे भुवनेश्वरीकल्पे प्रथमः पटलः), शम्भाः प्रातःस्तवः (इतिश्री शङ्कराचार्य्य विरचितः शम्भोः प्रातःस्तवः समाप्तः), कर्पूरस्तवराजः (इतिश्री फेत्कारीतन्त्रे श्रीमहाकालभैरव विरचितं कर्पूराख्यः स्तवराजः)

Colophon— सन् १९१८ मसिहा गोविन्दरथ शर्मा ब्राह्मणश्यामाकपूरटीद्वा लिखित ।

6

Catalogue No. T/39a

उग्रतारा पूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—152. Size—10.7"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—good. Findspot—Gadamānitri, P.S. Khurda, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः, श्रीमन्नीलसरस्वत्यै नमः । अथ श्रीनीलसरस्वती उग्रतारापूजा लिख्यते ।

प्रणम्य तारकायाश्च पादपद्मद्वयं ततः ।
संलिख्यते मया पूजा भक्तिमार्गप्रदर्शिनी ।

No colophon.

7

Catalogue No. T/58

उड्डामरेश्वर तन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—44. Size—12.1"×1.2". Character—Oriya. Name of the scribe—Not known. Date of the scribe—C. 18th century. 4-5 lines to a page. Condition—good, Incomplete. Findspot—Jagatsimhapur area, Dt. Cuttack.

Beginning— श्री देव्यै नमः। अथ कुलाचारो निरूप्यते। तत्र कालीतन्त्रे :—

अथाचारं प्रवक्ष्यामि यत्कृते मृतमश्नुते।
सर्वभूतहितेयुक्तः समयाचारपालकः॥

X X X

End— इत्युड्डामरेश्वरे महातन्त्रे एकादशः पटलः।

Authorities quoted :—

अन्नपूर्णाकल्प, एकवीराकल्प, कालीतन्त्र, कुलचूडामणि. नीलतन्त्र, फेत्कारिणीतन्त्र, ब्रह्माण्डपुराण, मत्ससूक्त, याज्ञवल्कगीता, वीरतन्त्र, शारदातिलक Etc.

There are the following subjects towards the end of the manuscript.

शिवपूजाविधिः, प्रपञ्चसारोक्तसूर्यपूजा. ताराकुलसहस्रनाम, महोग्रताराकवचम्, उग्रतारास्तुतिः, नीलतन्त्रोक्त तारास्तोत्रम्, लोकनाथानन्दविरचित रङ्गिणीभूजङ्गस्तोत्रम्, आनन्दस्तोत्रम्, वक्रतुण्डकवचम्, कुलुकाकवचम्, भगवतीपुराणोक्त अभयास्तोत्रम्, दशरथ प्रोक्त शनिश्चरस्तोत्रम्, रुद्रचण्डी Etc.

No colophon.

8

Catalogue No. T/4a.

उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्

Substance —Palmleaf. No. of folia —41. Size—14.1"×1.3". Character—Oriya. Name of the scribe-Not mentioned. Date of copy-C.19th century. 4 lines to a page. Condition—good, upto 38th chapter. Findspot—Harekrshnapur, Dt. Puri.

Beginning—

उड्डीशेन समाकीर्णे योऽर्थवृन्द समाकुले।
प्रणम्य शिरसा देवी गौरीपृच्छति शङ्करम्।
देव्युवाच—
भगवन् श्रोतुमिच्छामि लोकनाथ जगत्पते।
प्रसीदं कुरुदेवेश ब्रूहि सर्वार्थसाधनम्॥

वशीकरणमुच्चाटं स्तम्भनं मोहनं तथा।
शान्तिकं पौष्टिकं चाथ कारणानि बहूनि च ॥

X X X

इतिश्री उड्डामरेश्वरे महातन्त्रे हरपार्वती सम्वादे प्रथमः पटलः X X X इतिश्री..... मन्त्रवादे पञ्चमः पटलः X X X इतिश्री.....लम्पटोनामाष्टमः पटलः X X X इतिश्री.....मयूरशिखाकल्पः दशमः पटलः X X X इतिश्री.....औषधिविधाने त्रयोदशः पटलः X X X इतिश्री.....गन्धककल्पे सप्तदशः पटलः। इतिश्री X X X भृङ्गराजकल्पे अष्टादशः पटलः। इतिश्री.....औषधिप्रकरणे हरितकिकल्पे विंशतिपटलः X X इतिश्री..... सिद्धिकल्पो नाम एकविंशः पटलः। X X X इतिश्री.....स्तम्भनविधिश्चतुर्विंशः पटलः। X X X X इत्युड्डामरेश्वर महातन्त्रे हरपार्वती सम्बादे मिश्रकप्रकरणं नाम अष्टाविंशति पटलः।

No colophon.

9

Catalogue No. T/45

उड्डीशतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—44. Size—13.6"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Lines to a page—4. Complete upto 34th Patala and two folia from 35th Patala. Condition—some folia are broken towards the end of the manuscript. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरुभ्यो नमः।

प्रणम्य शिरसा देवी गौरा पृच्छति शङ्करम्।

श्री देव्युवाच—

भगवान् श्रोतुमिच्छामि लोकनाथ जगत्पतेः।
प्रसादं कुरु देवेश ब्रूहि सर्वार्थसाधनम् ॥
मोहनं मारणं चैव वदनोच्चाटनं तथा।
बश्यं स्तम्भं च विद्वेषं आकर्षं कथयानि च ॥

शान्तिकं पौष्टिकं चाथ करणानि बहूनि च ।
X X X
यस्माद्धतोश्च सिध्यन्ति उड्डीश शास्त्रनिश्चयम् ।
X X X
शृणु देवि वरारोहे उड्डीशं शास्त्र निश्चयम् ।
X X X

इतिश्री उड्डीशशास्त्रे ईश्वरपार्वतीसम्वादे ब्रह्मज्ञानसाधनं नाम प्रथमः पटलः । इतिश्री .....षट्कर्मसु ऋतुतिथिवारनक्षत्रयोगनिर्णयं नाम द्वितीयः पटलः । ब्रह्मज्ञान कथनं नाम तृतीयः पटलः । कुहुककरणं नाम चतुर्थः पटलः । शत्रुदर्पहरणं नाम पञ्चमः पटलः । श्वानबले शत्रुसाधनं नाम षष्ठः पटलः । शत्रोरुच्चाटनं नाम सप्तमः पटलः । युद्ध-विद्यायां कुहुककरणं नामाष्टमः पटलः । विद्वेषकरणं नाम नवमः पटलः । रिपुसेना विनाशनं नाम दशमः पटलः । लुताकरणं नाम एकादशः पटलः । षण्ढत्वखञ्जकरणं (?) नाम द्वादशः पटलः । पिशाचकरणं नाम त्रयोदशः पटलः । देवताभूचर खेचराणां भयनिवारण करणं नाम चतुर्दशः पटलः । शस्यरक्षणं नाम पञ्चदशः पटलः । केशानिशुक्लकरणं नाम षोडशः पटलः । वशीकरणं नामं सप्तदशः पटलः । वशीकरणं नामाष्टादशः पटलः । सूर्य्यतेजवदञ्जनकरणं नाम ऊनविंश पटलः । शत्रुत्रासकरणं नाम विंशः पटलः । उच्चाटनकरणं नामैकविंशः पटलः । वशीकरणं नाम द्वाविंशः पटलः । विकृति युद्धकरणं (?) नाम त्रयोविंशः पटलः । वीर्य्यस्तम्भकरणं नाम चतुर्विंशः पटलः । लिङ्ग वृद्धिकरणं नाम पञ्चविंशः पटलः । स्त्रीद्रावणं नाम षड्विंश पटलः । वीर्य्यस्तम्भकरणं नाम सप्तविंश पटलः । स्त्रीवशीकरणं नामाष्टाविंशः पटलः । योनिसंकोचकरणं नाम ऊनत्रिंशः पटलः । बन्ध्यानां गर्भकरणं नाम त्रिंशः पटलः । कल्पौषधि-ज्ञानं नामैकत्रिंशः पटलः । स्त्रीणां पतिवशीकरणं नाम त्रयत्रिंशः पटलः । गजवशकरणं नाम चतुस्त्रिंशः पटलः ।

No colophon.

10

Catalogue No. T/20a

उड्डुभास्वरतन्त्रम्

or

उड्डामरेश्वर महाकोष

Substance—Palmleaf. No. of folia—75. Size—7.7"×1.5". Character—

Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4lines to a page. Complete. Condition good. Findspot—Bāripadā Museum, Dt. Mayurbhanja.

Beginning— श्री विघ्नेश्वराय नमः ।

X X X

अनन्तानन्दकृष्णाय जगन्मङ्गलमूर्त्तये ।
उड्डीशेन समाकीर्णं योगछन्द समाकुले ॥

प्रणम्य शिरसा देवी गौरी पृच्छति शङ्करम् ।
भगवन् श्रोतु मिच्छामि लोकनाथ जगत्पते ।
प्रसादं कुरुदेवेश ब्रूहि सर्वार्थ साधनम् ॥

वशीकरणमुच्चाटं स्तम्भनं मोहनं तथा ।
शान्तिकं पौष्टिकं चाटुकरणानि बहूनि च ॥

इति उड्डभास्वरतन्त्रे प्रथमः पटलः । इति उड्डामरेश्वरमहाकोषे द्वितीयः पटलः ।

इति उड्डामरेश्वरमहातन्त्रे अञ्जनाकार (?) तृतीयः पटलः । इति उड्डभास्वरमहातन्त्रे चतुर्थः पटलः ।

इत्युड्डभास्वरे महातन्त्रे भूतविद्ये पञ्चमः पटलः ॥ इतिश्री उड्डीशे मन्त्रवादे षष्ठः पटलः ।

इत्युड्डामरश्वरे महातन्त्रे पुरुषवशीकरणं नाम सप्तमः पटलः ।

X X X

इत्युड्डामरेश्वरे महातन्त्रे मयूरशिखाकल्पे द्वादशः पटलः ।

There are some 'Prayoga's written in Oriya language towards the end of the manuscript.

अथ नवदाक्षिणी कर्णपिशाची मन्त्र, इन्द्रपदमानीयं स्वाहा । शिवध्याने चन्दन-मण्डलीये करि । घृतजागर धूप दीप नैवेद्य देइ पूजा करिब । अर्द्धरात्रि दिन अमावास्यारे सहस्रे लेखायें जपिब । पक्षके अइले भार्य्या बोलि जाणिमा । पदार्थमान दिअइ ।

No colophon.

11

Catalogue No. T/15c.

उत्तरतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia— 2. Size—12.1" × 1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 4 to 5 lines to a page. Complete upto 3rd Patala. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— ॐ नमस्तस्मैताभ्यां च । श्री शङ्कर उवाच ।

मातर्देवि महामाये भक्तानां ज्ञानदायिनि ।
रहस्यं किञ्चदाचक्ष्व मूढानां मोहनाशनम् ॥

श्री पार्वत्युवाच—

पूजितं परमं ज्ञानं सर्वदेव नमस्कृतम् ।
कथ्यते परमप्रीत्या शृणु पुत्रावधारय ॥
गुरुः सर्वं सुराधीशो गुरुःसाक्षी कृताकृते ।
गुरोराज्ञानुरूपेण सर्वं कार्य्यं प्रयत्नतः ॥
मन्त्रस्य दानकाले च वैधानुष्ठानमादिशेत् ।
यन्मन्त्रे यदनुष्ठानं तन्मन्त्रे तत्समादिशेत् ॥

X X X

इति ते कथितं वत्स रहस्यं मोहनाशनम् ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रहस्यमभिषेचनम् ॥

इत्युत्तरतन्त्रे उत्तरकल्पे प्रथमः पटलः ।

नश्यन्तु विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः ।
अभिषेकेण शाक्तेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः

इत्युत्तरतन्त्रे उत्तरकल्पे देवीश्वरसंम्बादे द्वितीयः पटलः ।

त्वयोक्तानि च तन्त्राणि पञ्चसंख्यानि शङ्कर ।
पूर्वाद्याम्नायनामानि तन्त्रञ्चोत्तर संज्ञकम् ॥
विशेषादुत्तरः कल्पो नाख्येयो यत्रकुत्रचित् ।

इत्युत्तरतन्त्रे उत्तरकल्पे तृतीयः पटलः ।

The author has described the names of five different Chakras at the end.

देव्युवाच—

देवदेव जगन्नाथ सर्वविद्याविशारद ।
कौलिकानां हितार्थाय चक्रभेदं वद प्रभो ।

ईश्वर उवाच—

चक्रं पञ्चविधं प्रोक्तं श्रीतन्त्रे रुद्रयामले ।
विधिना पूजयेच्चक्रं सौख्यं मोक्षफलप्रदम् ॥
राजचक्रं महाचक्रं देवचक्र मथापरम् ।
वीरचक्रं चतुर्थंस्यात् पशुचक्रं च पञ्चमम् ॥

No colophon.

12

Catalogue No. T/41

एकजटा स्तोत्रराजः

and others

Substance—Palmleaf. No. of folia—44. Size—8.9"×1.4" Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4 to 5 lines to a page. Complete. Condition—good. Findspot—Khurdha area, Dt. Puri.

Beginning of Ekajatāstotra.

अस्य श्री ब्रह्मयामलोक्तश्रीमदेकाजटास्तोत्रराजस्य, अक्षोभ्यऋषिः, बृहतीछन्दः, श्री मदेकजटा देवता, श्रीमदेकाजटाप्रीतये स्तोत्रराजपठने विनियोगः । ध्यानं—

प्रत्यालीढ़पदार्पितांघ्रिशवहृद्घोराट्टहासारवा
खड्गेन्दीवर कर्त्री कर्परभुजा हुंकारवीजोद्भवा ।
खर्वा नीलवीशालपिङ्गलजटाजूटोग्रनागैर्युता
जाड्यंन्यस्य (?) कपालके त्रिजगतां हन्त्वुग्रतारास्वयम् ॥

ज्वलदनल स जिह्वानेकरूपाद्विजिह्वा
प्रकटविकटवेशा भीमरूपाट्टहासा ।
शववपुषि विहर्त्ती सर्वसिद्धि प्रदार्त्ती
करतल कृत कर्त्ती कर्परा नः पुनातु: ॥

X X X

इतिश्रीब्रह्मयामले ब्रह्मप्रोक्त श्रीमदेकजटास्तोत्रराज: समाप्त: ।

There are many other stotras and kavachas in the manuscript which are given below.

दक्षिणकालिकाएकाक्षरमन्त्रं—

करालवदनांघोरां मुक्तकेशीचतुर्भुजां ।
दक्षिणां कालिकां दिव्यां मुण्डमालाविभुषिताम् ॥

X X X

इतिश्रीरुद्रयामले श्रीदेव्यापराधभञ्जनस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

X X X

दक्षिणकालिका गायत्री—

अस्यश्री दक्षिणकालिका गायत्रीमन्त्रस्य, भैरव:ऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, श्रीमहाकाल-सहित दक्षिणकालिका देवता, श्रीदक्षिणकालिकाचरणारविन्दप्रीतये गायत्रीजपे विनियोग: ।

X X X

इतिश्री मदुत्तरतन्त्रे कालीष्टकं संपूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री मदुत्तरतन्त्रे श्रीदक्षिणकालिकाकर्पूरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

X X X

इतिश्री भैरवीतन्त्रे श्यामाकवचं संपूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री भैरवकल्पे श्रीदक्षिणकालिकार्गलस्तोत्रम् ॥

इतिश्री कालिका कुलसर्वस्वे भैरवोक्तं दक्षिणकालिकायाः कीलकं संपूर्णम् ।

X X X

इतिश्री महाकालमुखविनिर्गतः महाकालीस्तवः ।

No colophon.

13

Catalogue No. T/56

कात्यायनी तन्त्रोक्तप्रयोगः

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—57. Size—8.4×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4 lines to a page. Condition—good. Findspot—Jagatsimhapur area, Dt. Cuttack.

Beginning— श्री चण्डिकायै नमः । श्री गणेशाय नमः । अविघ्नमस्तु । श्री सरस्वत्यै नमः । अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनीतन्त्रोक्तानि । प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवं जपेत् । अग्रे सर्वत्रश्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणम् ।

There is also Saptaśati Chandī including Phalaśruti and Devī Sūkta towards the end of the manuscript.

Colophon— भीमस्यापिरणे भङ्गो
मुनेरपि मतिभ्रमः ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा
ममदोषो नि विद्यते ।

14

Catalogue No. T/44 (b)

कालीकवचम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—2. Size—14.5"×1.4". Character—

Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4 lines to a page. Complete. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरवेनमः । श्री देव्युवाच—

देव देव महावाहोः भक्तानां सुखवर्द्धनम्

X X X

कालीत्रैलोक्य मोहिनी ॥

तन्मेवद दयापार (?)

साधकाभिष्टसिद्धये ॥

End— इदंकवचमज्ञात्वा

कालीं यो भजते नरः ।

नैवसिद्धि भवेत्तस्य

विघ्न तस्य पदे पदे ॥

इति गान्धर्वतन्त्रे देवदेवी सम्वादे महाकाली कवचं संपूर्णम् ।

Colophon— गुरुचरणसरोजे सर्वदा भक्तिरस्तु ॥

15

Catalogue No. T/15 a

कालीतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—21. Size—12.1"×1.2" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 4 to 5 lines to a page. Complete up to 12th patala. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— अविघ्नमस्तु । नमस्तस्मैताभ्यां च ।

कैलास-शिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुं ।

उवाच पार्वतीदेवी भैरवं परमेश्वरम् ॥

श्रीपार्वत्युवाच—

देव देव महादेव सृष्टिस्थित्यन्तः कारकः ।
किन्तु ब्रह्ममयं श्रीमन् श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।

श्रीभैरव उवाच—

कालिकाथा महाविद्या समस्तभेद संयुता ।
सपर्य्या भेदसंयुक्ता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥
महाविद्या महामाया महायोगेश्वरी परा ।
महामेधा महाराज्ञी सर्वसारस्वतप्रदा ॥

इतिश्री कालीतन्त्रे प्रथमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे द्वितीयः पटलः । इतिश्री कालितन्त्रे नैमित्तिको नाम तृतीयः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे काम्यविधिर्नाम चतुर्थः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे मन्त्रकल्पद्रुमो नाम पञ्चमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे वीरसाधन नाम षष्ठः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे रहस्यपुरश्चरणं नाम सप्तमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे आचारनियमो नामाष्टमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे विद्यामाहात्म्यं नाम नवमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे सिद्धविद्या नाम दशमः पटलः । इतिश्री कालीतन्त्रे सामान्यसाधनं नाम एकादशः पटलः ।

End— चतुष्पथे शून्यगेहे पूजयेद् यस्तुचण्डिकां ।
तस्य (न) दुर्लभं किञ्चित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥
एतत्पूजां महादेवि पुत्रेभ्योऽपि न दर्शयेत् ।
अन्यथा प्रेतराज्यस्य भवनं याति निश्चितम् ॥

इतिश्री कालीतन्त्रे मन्त्रसिद्धि कथनं नाम द्वादशः पटलः ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

There are some folia containg first chapter (Patala) of Mahā Yantra Chintāmaṇi, Vana Durgā Yantra and Abhisheka vidhi at the beginning of the manuscript.

इतिश्री महायन्त्रचिन्तामणौ श्यामादिदशविद्यायन्त्रोद्धारं नाम प्रथमः पटलः ।

No colophon.

16

Catalogue No T/23.

कालीस्वरूप सहस्रनाम

by— आदिनाथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—107. Size—12.6"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—some folia are worm eaten. Findspot—Bāripadā, Dt. Mayurbhanja.

Beginning— श्री दक्षिणकाली शरणम् ।

ॐ कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणैर्वृते ।
नानावृक्षलताकीर्णे नानापक्षीरवैर्युते ॥
चतुर्मण्डलसंयुक्ते शृङ्गारमण्डपस्थितं ।
समाधौ संस्थितं शान्तं क्रीड़न्त योगिनोप्रियम् ॥
तत्र मौनधरद्दृष्ट्वा देवी पप्रच्छ शङ्करम् ॥

X X X

End— इतिश्री मदादिनाथ विरचितायां महाकालसंहितायां कालीकालसम्वादे सुन्दरी-शक्तिदानाख्यं कालीस्वरूपसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

There are some folia containing Kālīsahasra nāma, according to Kālikākula sarvasva; Ānanda stotra, Gāyatrī kavacha, Pārvatyāgni samskāra vidhi, Svapnāvati mantra, Gāyatrī Bhāshya by Saṇkara Bhagavana, Dakshiṇa Kālikā stavarāja, Kālikā Argala; according to Bhairavī kalpa, Kālikā kīlaka; according to Kālikākula sarvasva, Kālī Kavacha; according to Gaṇeśa khanda of Brahma vaivarta Purāṇa, Mātṛkā kavacha; according to Yonimudrā mantraprakāsa Chintāmaṇi tantra, Yonimudrā kavacha; according to Chaitanya Chintāmani tantra, Samsāratāraka stotra according to Bhairavī tantra, towards the end of the manuscript.

इतिश्री कालिकाकुलसर्वस्वे शिवपरशुराम सम्वादे कालीसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री ब्रह्मपुराणे ब्रह्मानारदसम्बादे गायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री शिवपरशुरामसम्बादे श्रीदक्षिणकालिकायाः स्तवराजः समाप्तः ।

× × ×

इतिश्री भैरवीकल्पे श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः अर्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

× × ×

इतिश्री कालिकाकुल सर्वस्वे भैरवेणोक्तं श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः कीलकं सम्पूर्णम् ।

× × ×

इतिश्री ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे गणेशखण्डे कालीकवचं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री योनिमुद्रामन्त्रप्रकाशचिन्तामणितन्त्रे मातृकाकवचं नाम नवमः पटलः ।

X X X

इतिश्री मुद्रामन्त्रचैतन्यचिन्तामणितन्त्रे त्रैलोक्यमङ्गलं योनिमुद्राकवचं नाम द्वितीयः पटलः ।

X X X

इतिश्री भैरवीतन्त्रे कालीकल्पे संसारतारकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

No colophon.

17

Catalogue No. B.S./46 (b)

कालीसहस्रनाम

by—आदिनाथ

Substance—Paper. No. of pages—24. Size—13″×4.1″. Character—Bengali. Date of copy—Śakāvda - 1810 or 1888 A. D. 22nd day of Śrāvana. Name of scribe—Hṛdayānanda Śarmā. Incomplete, first few folia are lost. Condition—good. Findspot—Dharādharapur, P. S. Jagatsimhapur, Dt. Cuttack.

End— इति गदितमशेषं कालिकावर्णरूपं
प्रपठति यदि भक्त्यासर्वसिद्धीश्वरःस्यात् ॥
अभिनव सुखकामं सर्वविद्याभिरामं
भवति सकलसिद्धिः सर्ववीरासमृद्धिः ॥ ?

इति सक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छति ।

इतिश्रीमदादिनाथविरचितायां महाकालसंहितायां श्रीमहाकालकालिकासम्वादे सुन्दरीवर प्रदानाख्यं ककारादिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Colophon— शकावनीपतेः व्योमधरागजेन्दु X X वर्षे नभोद्वाविंशति X X X X सूर्य्यजवासरे श्री हृदयानन्दशर्म्मणा लिखितमिदं पुस्तकम् ।

18

Catalogue No. T/33

कुमार तन्त्रम्

by—रावण

with Oriya prose translation.

Substance—Palmleaf. No. of folia 27. Size—11.3"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Incomplete. Condition—some portions are worm eaten. Findspot - Dharādharapur, P. S. Jagatsimhapur, Dt. Cuttack.

Beginning of the translation.

अथ रावणोक्त कुमारतन्त्र—

याहार देदना होइथिब, ताहारि घर माटिरे पितुला गोटिये करिब शुक्ल धान्य अर्ण्ण फुलचन्दन देइ से पितुलाकु पूजा करिब । ग्रामान्तरे करिब । से पुत्य मालटि देब । से मन्त्रे बलिदेब । गरुड़ ग्रह श्यान्ति होइ । X X X X रक्तफुल माल करिब, रक्त पताका करिब, फुलचन्दन देइ पूजा करिब । विविध भक्तमान बलिदेब । कुकुट (कुक्कुट) स्कन्ध ग्रह श्यान्ति होइ । पितुला गोटिये ये रूपे तिनिरात्र पूजा करिब । रङ्गधान अर्ण्ण (?) यवधान अर्ण्ण (?) नैवेद्य देब । ब्राह्मणठारे गायत्री (त्री) मन्त्रे भडाइब, कुकुट स्कन्ध

ग्रह श्यान्ति होइ । X X X X X द्वादश दिवसरे, द्वादश मासरे, द्वादश बरषरे कामुका नाम मातृका ग्रह क्लेश दिअइ । ज्वर करइ, कान्दुथाइ, काश श्वास करइ, देह कृश होइ । एथिकि बलि देब । बलि देले शुभ हुअइ । नदीतट माटिरे दुध पकाइ चकटि पितुला गोटिये करिब । पूर्व विधिरे रोगीआगे स्थापन करिब । पान चन्दन शुक्ल पुस्य देइ दीप सातगोटि, चकुलीपिठा सातगोटि, पाचला कदली सातगोटि ये रूपे नमो रावणाय मन्त्रे बलिदेब ।

The Sanskrit text given in the manuscript is full of mistakes, so only the translation portion is quoted here.

No colophon.

19

Catalogue No. T/9 (b)

कुमारी तन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—10. Size—14.7"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete upto 9th Patala. Condition—slightly damaged and some folia are worm eaten. 4 lines to a page. Findspot – Puri town.

Beginning— श्री कालिकायै नमः ।

कैलासशिखरासीनं चन्द्रखण्डविभूषितम् ।
पप्रच्छ परयाभक्त्या गौरीनत्वा वृषन्वजम् ॥

श्री देव्युवाच—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थकोविद ।
केनोपायेन च कलौ नरा गच्छन्ति सङ्गतिम् ॥
तन्मेवद महादेव ! यदि तेऽस्ति दयामयि ।

भैरव उवाच—

अस्तिगुह्यतमं ह्येतत् ज्ञानमेकं सनातनम् ।
अतिगौप्यसुगोप्यत्वाद् वर्णितुं नैवशक्यते ॥

अतीव मत्प्रियासीति कथयामि तथापिते ।
शब्दब्रह्ममयं ह्येतत् संसारं स्थूलसूक्ष्मकम् ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे कल्पे विद्योपदेशः प्रथमः पटलः ।

श्री देव्युवाच—

येय त्वया महाविद्या प्रोक्ता देव्याः सुदुर्लभा ।
अस्यास्तु ज्ञानमात्रेण कृतार्थोऽस्मि नसंशयः ॥
किन्त्वस्या यन्त्रतन्त्राणि न ज्ञातानि मयानघ ।
तदेव कथयस्वाद्य यदितेऽस्ति दयामयि ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये अन्तर्यागविधिः द्वितीयः पटलः ।

X X X

ततःस्तुत्वा नमस्कृत्य कुर्य्यात् संभोगमेनया ।
सभोगं च पुरःकृत्वा ततोदेवीं विसृज्य च ॥
कृतकृत्यो भवेन्मन्त्री नात्रकार्य्या विचारणा ।

इति श्री कुमारीतन्त्रे महारहस्ये वहिर्यागः पटलस्तृतीयः ।

X X X

जलं सुवासितं तोयं कुलक्षालन मेवच ।
प्रधानानि निवेद्यानि कथितानि तवानघे ।
यैस्तु संतुष्यते काली किमन्यच्छ्रोतु मर्हसि ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये नैवेद्यनिश्चय. पटलश्चतुर्थः ॥

× × ×

सुन्दरीं यौवनोन्मत्तां नारीमानीय यत्नतः ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा कुलमामन्त्र्य मन्त्रवित् ॥
मैथुनं यःकरोत्येष सर्वत्र सफलं लभेत् ।
विपरीतरता सातु भाविता हृदयोपरि ॥
तन्मखे च मुखं दत्वा सहस्रं मानसं जपेत् ।
स भवेत् सर्वसिद्धीशो नात्र कार्य्या विचारणा ॥

सर्वेषां साधनानां हि श्रेष्ठं स्यात् कुलसाधनं ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन कुर्य्याद्(वै) सु समाहितः ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये पुरश्चरणः पटलः पञ्चमः ।

X X X

ततः स समया (?) ज्ञातः प्रणम्य च यथाविधिः ।
ययौ स्व भुवनं विष्णु रेतत्ते कथितं प्रिये ।

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये कुलाचारः षष्ठः पटलः ।

X X X

एवं य श्चिन्तयेद्देवीं परमानन्दरूपिणीम् ।
स भवेत् सर्वसिद्धीशो नात्रकार्य्या विचारणा ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये पूजास्थलनिर्णयः सप्तमः पटलः ।

× × ×

शिवशक्ति परादेवी नित्यानन्द स्वरूपिणी ।
सारस्वतप्रदादेवी अमिरुद्ध सरस्वती ॥
यां ज्ञात्वा मुक्तिमाप्नोति किमन्यत्कथयामिते ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे महारहस्ये गायत्रीनिर्णयो नामाष्टमः पटलः ।

× × ×

कृष्ण पुष्पैः पूजयित्वा ध्यात्वा च परमेश्वरीं ।
जप्त्वायुतं पितृवने शत्रूणां मारणं चरेत् ॥
कालीकल्पमिदं प्रोक्तं गोपयेन्मातृजारवत् ।
गोप्येन सर्वसिद्धिः स्यात् प्रकाशे मरणं भवेत् ॥

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये नवमः पटलः ।

No colophon.

20

Catalogue No. T/15 (b)

कुमारीतन्त्रम्

Substance—Palmleaf, No, of folia—14. Size—12.1" × 1.2". Character—

Oriya Date of copy—C.18th century. 4 lines on a page. Complete up to 9th Patala. Condition - good. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Text same as in Catalouge No. T/9 (b) discussed previously.

No colophon.

21

Catalogue No. T/57 (c)

कुमारीतन्त्रम्

Substance - Palmleaf. No. of folia—10. Size - 14.8"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 5 lines to a page. Complete up to 9th Patala. Condition— a portion of the manuscript is totally moth eaten, so it is very difficult to decipher the text. Findspot—Gaḍamāṇitri, P. S. Khurdha, Dt. Puri.

Text same as in Catalouge No. T/15 (b) and T/15 (b) except 6th and 8th Patala as there is Gāyatrī Māhātmya in 6th Patala and Āchāravidhi or Kulāchāra in 8th Patala. More over there is no mention of the name of 9th Patala in the previous two manuscripts as we find in this manuscript.

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये षट्कर्मविधिर्नवमः पटलः ॥

No colophon.

22

Catalouge No. T/29 (a)

कुलसर्वस्वम्

by—कविशेखर

Substance - Palmleaf. No. of folia—85. Size— 12.2" 1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 4 lines to a page. Condition—some folia are slightly moth eaten. Findspot— Gadamāṇitri, P. S. Khurdha, Dt. Puri.

Beginning— श्री दक्षिणामूर्त्तये नमः

प्रणम्य परदेवताङ्घ्रि कमलं प्रमोदासवं पुरान्तक मुरान्तकाऽज-मौलिभृङ्गान्वितं ।
प्रकृष्टगुणसौरभं गुरुपदाब्ज सत्साधुना तनोति कविशेखरः कुलमतं परिज्ञापितः ॥

विचार्य्य गुरुणा सदाशिवकृतागमानां मतं
कुलविदां मतं प्रचुरतन्त्रकृत् सम्मतम् ॥
इदं कुलमत मया सकलसत्व पक्षे हितं
क्षमध्व मर्य कौलिका मयिरुषं मनः कथ्यते ॥ (?)
न कुलमर्गात्तिपुरेऽस्तिमार्गः
परो नृणां ज्ञानभवाय सद्यः ।
जीवन्नरोयत्र भवत्यमर्त्त्य—
तुल्यः सुराणामपि दुर्ल्लभोऽयम् ॥

तन्त्रान्तरे—

सर्वेभ्य श्रोत्तमा देवाः
देवेभ्यो वैष्णवं परम् ।
वैष्णवादुत्तमं शैवं
शैवादक्षिणमुत्तमम् ॥
दक्षिणादुत्तमं वामं
वामात् सिद्धान्तमुत्तम् ।
सिद्धान्तादुत्तमं कौलं
कौलात् परतरं नहि ॥
यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षः
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः ।
शिवापदाम्भोजयुगार्च्चकानां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

X X X

कौलाचार मिदं दिव्यं गोप्तव्यं सिद्धिलिप्सुभिः ।
साधकैर्न पशोरग्रे दाम्भिकाय प्रकाशयेत् ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते कौलाचारो नाम प्रथमः पटलः ।

X X X

एवं निर्वाण मीशानि ! यो न जानाति पामरः ।
कल्पकोटि सहस्रैस्तु तस्यसिद्धि र्न जायते ॥
ऋषिछन्दो देवताश्च वीजं शक्तिश्च कीलकं ।
नस्त्वात्सर्वत्र देवेशि ! तत स्तोष्टादिकं जपेत् (?) ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते न्यासविवरणं नाम द्वितीयः पटलः ॥

X X X

कुलद्रव्यविनाकुर्य्यात्
जपपूजादिकं व्रतम् ।
निष्फलं तद्भवेद्देवि !
भस्मनीव चरुर्यथा ॥

मन्त्रपूतं कुलद्रव्यं श्रीगुरुं × × × प्रिये।
ये पिवन्ति जनास्तेषां स्तनपानं न विद्यते ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते सपर्य्याविधिस्तृतीयः पटलः ॥

X X X

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते वालकसंस्कारं नाम चतुर्थः पटलः ॥

X X X

इष्टविद्या प्रदानेतु न कुर्य्याद्गुरुचिन्तनम् !
स्वप्नलब्धे तु कलशे गुरोः प्राणानिवेशयेत् ॥
वटपत्रे कुङ्कुमेन लिखित्वा ग्रहणं शुभं ।
ततःशुद्धि मवाप्नोति अन्यथा विफलं भवेत् ॥

X X X

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते गुरुशिष्यलक्षणंनाम पञ्चमः पटलः ।

X X X

प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ
गुरुं तं देवतात्मकम् ।

तस्य पादाम्बुजद्वन्द्वं
निज मूर्द्धिन् नियोजयेत् ।
शरीरं पञ्चप्राणांश्च
सर्वं तस्मै निवेदयेत् ॥
ततःप्रभृति कुर्वीत
गुरोः प्रियमनन्यधीः ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते दीक्षाविधानं नाम षष्ठः पटलः ॥

X X X

इति यन्त्र प्रतिष्ठेयं तन्त्रसारान्मयोद्धृता ।
विज्ञापनार्थं कौलानां यथोक्तार्च्चनकर्मणि ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते यन्त्रसंस्कारो नाम सप्तमः पटलः ॥

X X X

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते मालासंस्कारो नामाष्टमः पटलः ।

X X X

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते पुरश्चरणं नाम नवमः पटलः ।

X X X

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते वलिदान नाम दशमः पटलः ।

X X X

देवता कालमुद्रादीन् ज्ञात्वा सम्यग् विचक्षणः ।
षट्कर्माणि प्रयुञ्जेत यथोक्त फलसिद्धये ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते षटकर्मविधिरेकादशः पटलः ।

X X X

जपान्ते च वलिं दद्याद् देवतायै यथाविधिः ।
महिषं छागलं वापि गृहीत्वा वरमेवच ॥
गृहं गच्छेच्च सुहृद्भिः सार्द्धं संहृष्टमानसः ।
समाप्य साधनं देव्याः दक्षिणां विभवावधिः ॥
गुरवे गुरुपुत्राय तत्पत्न्यै वा निवेदयेत ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते वीरसाधनं नाम द्वादशः पटलः ॥

X X X

इत्यनेन विधानेन सिद्धिं प्राप्नोति साधकः ।
इह भुक्त्वा वरान् भोगानन्ते याति हरेः पदम् ॥

इतिश्री कविशेखरविरचिते कुलमते शवसाधनं नाम त्रयोदशः पटलः ॥

X X X

वसन्ते साधयेच्छ्रीमान् हविष्याशीजितेन्द्रियः ।
सदाध्यानपरोभूत्वा तद्दर्शन महोत्सवः ॥
उच्चैश्च पर्वते वापि कामरूपे विशेषतः ।
स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साधयेत् साधकोत्तमः ॥
अनेन विधिनासाद्य भवतीति नसंशयः ।
देव्याश्च साधकाः सर्वे पर तत्राधिकारणः ।

इतिश्री कविशेखर विरचिते कुलमते योजनीसाधनं नाम चतुर्दशः पटलः ।

End— यत्र यत्र हि विधेर्नविधानं
तत्र तत्र परमागम विज्ञाः ।
वर्त्तते सकललोकहितार्थाः
शोधयन्तु ममसम्मततन्त्रे ॥

इतिश्री कविशेखर विरचिते कुलमते कुलसर्वस्वं समाप्तम ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

The author Kariśekhara quoted thirty five different Tantric works in his own work 'Kulasarvasra' which are given below.

1—आगम कल्पद्रुम, 2—कालिकापुराण, 3—कालीकुल सद्भाव, 4—कालीतन्त्र, 5—कुमारीकल्प, 6—कुमारीतन्त्र, 7—कुर्वनिकातन्त्र (?), 8—कुलचूड़ामणि, 9—कुलार्णवतन्त्र, 10—कौलतन्त्र, 11—कौलार्णव, 12—क्रियासार, 13—गौतमीय-तन्त्र, 14—तन्त्रसार, 15—दक्षिणामूर्त्तिसंहिता, 16—ब्रह्मयामल, 17—भावचूड़ामणि, 18—भैरवतन्त्र, 19—भैरवीतन्त्र, 20—मत्स्यसुक्त, 21—मुण्डमालातन्त्र, 22—योगिनी-तन्त्र, 23—योगिनीहृदय, 24—रत्नावली, 25—रामार्च्चनचन्द्रिका, 26—रुद्रयामल, 27—लिङ्गागम, 28 वाराहीतन्त्र, 29—विजयाकल्प, 30—विशुद्धेश्वरतन्त्र, 31—विश्वसार,

32—वीरतन्त्र, 33—शारदाटीका (शारदातीलक टीका), 34—श्रीकल्पद्रुम, 35—ज्ञानार्णव ।

No colophon.

23

Catalouge No. T/48 (g)

कुलसर्वस्व सहस्रनाम

(According to ताराकुल सर्वस्व)

Substance—Palmleaf. No. of folia—10. Size—14.1"×1.5". Character—Oriya Date of copy— C. 19th century. 6 lines to a page. Complete. Condition—good. Findspot— Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्रीमदिष्टदेवतायै नमः । श्री गुरवे नमः ।

ॐ कैलास शिखरे रम्ये देवदेवं जगद्गुरुं ।
भवानी रहसि प्रीत्या पप्रच्छ परमेश्वरम् ॥

श्री देव्युवाच—

कथमीशान सर्वज्ञः लभते सिद्धिमुत्तमां ।
साधकाः सर्वदा येन तन्मेकथय हि प्रभो ॥

श्री भगवानुवाच—

विना पूजां विना ध्यानं विना जप्यं विना वलिं ।
लभते येन कल्याणि तन्मे निगदितः शृणु ॥
नाम्नासहस्रं तारायाः कथयिष्याम्यशेषतः ।
शृणुदेवि सदाभक्त्या भक्तानां परमं हितम् ॥
विना पूजोपहारेण विना जाप्येन यत्फलं ।
तत्फलं सकलं देवि कथयिष्यामितच्छृणु ॥

X X X

इतिश्री मन्त्रीलसरस्वतीभक्तकुलसर्वस्वसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।

No colophon.

24

Catalouge No. T/9 (E)

कुलार्णव महारहस्यम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—19 Size—13.9"×1.3". Character—Oriya. Date of copy— C. 19th century. 4 to 5 lines to a page. Complete up to 5th Patala. Condition— some folios are damaged. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री गुरवे नमः

कुलेशाधारपात्राणां द्वितीयानां च लक्षणं ।
कुलद्रव्यस्य निर्माणं भेदं माहात्म्यमेवच ॥
आदधानेन यत्पापं सम्विधानेन यत्फलं ।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि वदमे करुणानिधे ॥

श्री शङ्कर उवाच—

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
तस्य श्रवण मात्रेण त्रिदशैः समतां व्रजेत् ॥
आधारेण विना भ्रष्टा नच तृप्यन्ति देवताः ।
तस्माद्विधिवदाधारं कल्पयेत् कुलनायिके ॥
आधारं त्रिपदं प्राहुः षट्पदं च चतुष्पदं ।
अथवा वर्त्तुलाकारं कुर्य्याद्देविविचक्षणः ॥
अतिसूक्ष्ममति स्थूल पात्रं कुर्य्यान्मनोरमं ।
स्वर्णरौप्यशिलाकूर्मकपालालावुसृण्मयम् ॥

X X X

इतिते कथितं सर्वं कुलद्रव्यादिलक्षणं ।
समासेन कुलेशानि किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्री कुलार्णवे महारहस्ये सारोद्धारे प्रथमः पटलः ॥

X X X

कदल्यादि फलान्यात्र ताम्बुलं च समर्पयेत् ।
इतिते कथितं देव कुलाचारस्य लक्षणम् ॥
द्रव्य-संस्कारपूजादि किमन्यत् श्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्रीकुलार्णवे महारहस्ये सारोद्धारे द्रव्यसंस्कारकथनं नाम द्वितीयः पटलः ॥

X X X

यत्सौख्यं कुलसिद्धानां कुलद्रव्यनिषेवतां ।
धर्मार्थकाममोक्षस्य सत्यमेतद्वरानने ॥
इति ते कथितं देवि वलिदानार्च्चनादिकं ।
समासेन कुलेशानि किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्री कुलार्णवे महारहस्ये सारोद्धारे पूजाविधानकथनं तृतीयः पटलः ॥

X X X

कुलधर्मसमाश्रित्य आचारं यो न पालयेत् ।
यथेष्टाचारिणस्तस्य महापातकिनः प्रिये !
आपदं दुरितं रोगो दारिद्र्यं कलहो भयं ।
योगिनीनां प्रकोपश्च स्खलितानि पदे पदे ॥
आज्ञासिद्धिमवाप्नोति अनाचाराद्विनश्यति ।
आचारपालनात सत्य माज्ञासिद्धिर्भविष्यति ॥
संसारेण विहीनत्वाद् गुरुवाक्यानलङ्घयेत् ।
आचारवर्जनाद् देवि ! कौलिकः पतितो भवेत् ॥
बहुनात्र किमुक्तेन रहस्यं शृणु पार्वति !
वर्णाश्रमाणां सर्वेषां श्रीगुरुसङ्गतिप्रदः ॥

इतिश्री कुलार्णवे महारहस्ये सारोद्धारे कुलाचारविधिर्नाम चतुर्थः पटलः ॥

X X X

End— इतिते कथितं देवि ! लक्षणं गुरुशिष्ययोः ।
समासेन कुलेशानि यतस्त्वं मम वल्लभा ॥

इतिश्री कुलार्णवे महारहस्ये सारोद्धारे पञ्चमः पटलः ।

No colophon.

25

Catalogue No. T,6

कृत्यपल्लव दीपिका

or षट्कर्मदीपिका

by—कृष्णविद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No of folia—45. Size—14.1"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 5 lines to a page. Complete. Condition— almost all folios are worm eaten and first two folios are broken. Findspot—Puri town.

Beginning— श्रीवः शरणं, श्री दुर्गा शरणं ।

कृत्यादेवीं नमस्कृत्य तथा त्रिपुरसुन्दरीं ।
भद्रकालीं च देवे..... ॥
श्रीकृष्णानन्दवागीश भट्टाचार्य्येणधीमता ।
क्रीयते विदुषां प्रीत्यै कृत्यपल्लव दीपिका ॥

X X X

नमः स्वाहाबषट् वौषट्
हुंफड्ताश्चजातयः ।
शान्तौवश्ये स्तथा स्तम्भे
विद्वेषोच्चाटमारणे ॥

इतिश्री कृष्ण विद्यावागीशभट्टाचार्य्यविरचितायां षट्कर्मदीपिकायां सामान्यधर्म कथनं नाम प्रथमोद्देशः

X X X

इतिश्री कृष्णानन्दविद्यागीश भट्टाचार्य्यविरचितायां षट्कर्मदीपिकायां कुण्डादि नियमः द्वितीयोद्देशः ।

X X X

इतिश्री.....नानाप्रकार शान्तिनियमस्तृतीयोद्देशः ।

X X X

इतिश्री····· ·····शान्तिकल्पे वश्यकर्म चतुर्थोद्देशः ।
इतिश्री····· ·····शान्तिकल्पे स्तम्भनकर्मपञ्चमोद्देशः ।
इतिश्री·····शान्तिकल्पे स्तम्भनविधिः षष्ठोद्देशः ।
इतिश्री·····शान्तिकल्पे विद्वेषणं नाम सप्तमोद्देशः ।
इतिश्री·····शान्तिकल्पे विद्वेषणं नामाष्टमोद्देशः ।

End— इतिश्री कृष्णविद्यागीशभट्टाचार्यविरचितायां षट्कर्मदीपिका समाप्ता ॥

समाप्तेयं षट्कर्मदीपिका ।

There are some folios containing Sāmudrikalakshaṇa and other tāntric works (in oriya language) at the end of the manuscript.

The author Kṛshnānanda vidyāvāgīśa has quoted the following works in his Kṛtyapallava Dīpikā.

1—अग्निपुराण, 2 उड्डामरेश्वरतन्त्र, 3—उन्मत्तभैरवीतन्त्र, 4—कालोत्तर, 5—तालशम्बर (?) 6—फेत्कारिणीतन्त्र, 7—भविष्यपुराण, 8—मालिनीतन्त्र, 9—योगिनीतन्त्र, 10—रुद्रयामल, 11—लिङ्गपुराण, 12 वाराहीतन्त्र, 13—शिवधर्मोत्तर, 14—शिवरहस्य, 15—शैवागम, 16—सनत्कुमार संहिता, 17—सिद्धयोगीश्वरतन्त्र Etc.

No colophon.

26

Catalogue No. T/176

गौतमीय महातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia— 33. Size—14.5" × 1.4" Character—Oriya. Date of copy—the Amka year 21st of Divyasimha Deva III, Sana 1283 sāla, or 1866/67 A D. Name of scribe—Ārtatrāṇa Tripathy, village-Bentapur. Complete. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः । अविघ्नमस्तु । श्री गोपालशरणम् ।

सिद्धाश्रमे वसन्धीमान् कदाचिद् गौतममुनिः ।
तपः स्वाध्यायनिरतो भक्तिमान् पुरुषोत्तमः ॥

नमस्यन् शिरसा विष्णु स्तुवन्वाचा जनार्दनं ।
जपन् कराभ्यां यद्वेशं हृदाध्यायन सदाहरम् ॥
समस्त श्रुतितत्वज्ञ इतिहासपुराणवित् ।
मन्त्रोपधिक्रियाचश्य. योगसिद्धान्ततत्ववित् ॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थि नारदं प्रणिपत्य च ।
विनयावनतोभूत्वा पर्य्यपृच्छद्विजोत्तमः ॥

X X X

इतिश्रुत्वा मुनिश्रेष्ठो नत्वा विष्णुमुवाचह ।
साधुपृष्टमयोऽप्येवं पृष्टः प्रोवाच पद्मजः ॥
तथाते कथयिष्यामि यथाप्रोक्तं स्वयंभुवा ।
सर्वेकामाः प्रसिध्यन्ति कृष्णमन्त्र जपाद्विज ॥
सर्वेषुमन्त्रवर्गेषु श्रेष्ठं वैष्णवमुच्यते ।
गाणपत्येषु शैवेषु तथा शाक्तेषु सुव्रत ॥
वैष्णवेषु च सर्वेषु कृष्णमन्त्राः फलाधिका ।

× × ×

इतिश्री गौतमीये सर्वमन्त्रोत्तमे दशाक्षरफलाख्याने प्रथमोऽध्यायः ।

× × ×

अयं पीठः मनुप्रोक्तः सर्वभूतात्मकः परः ।
श्यामलं कोमलं धाम तत्रोपरि च चिन्तयेत् ॥

इतिश्री गौतमीये सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे द्वितीयोऽध्यायः ।

× × ×

एकैकाक्षरमुच्चार्य्य नमोन्तं तु ततः पठेत् ।
परायेति च तत्वानि तदन्ते नमसा सह ॥
मनसा वा न्यसेन्न्यासा अङ्गुष्ठेन तथा मूले ।
अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यां वा त्वन्यथा निष्फलं भवेत् ॥

इतिश्री गौतमीये सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे तृतीयोऽध्यायः ॥

X X X

एवं यश्चिन्तयेन्मन्त्री चेतसा कृष्णमव्ययं ।
संसार सागरं घोरमपि वत्स ! पदायति ॥

इतिश्री गौतमीये ... ... चतुर्थोऽध्यायः ॥

X X X

पितृभ्यः क्षेत्रपालेभ्योवलिं दत्वा प्रकामतः ।
अभितो भक्तिमुद्गस्य कुशपुष्पादिभि यजेत् ॥

इतिश्री गौतमीये ... ... पञ्चमोऽध्यायः ।

X X X

शान्तिक सर्वथा कुर्य्यात् कर्त्तुरिप्सितसिद्धये ।

इतिश्री गौतमीये ... ... षष्ठोऽध्यायः ।

X X X

जनार्दनोपेन्द्रहरिः वैष्णवो द्वादशेरिता ॥

इतिश्री गौतमीये ... ... सप्तमोऽध्यायः ।

X X X

इतिश्री गौतमीये ... ... अष्टमोऽध्यायः ।

X X X

बहुमालां ततो दद्याद्गन्धं च सुमनोहरं ।
हरिमावाहयेत्ततत्र लायायां कल्पशाखिनः ॥

इतिश्री गौतमीये ... ... नवमोऽध्यायः ।

X X X

End— एतत्ते कथितं तन्त्रं सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमं ।
अस्यविज्ञानमात्रेण कृष्णसौख्यं समश्नुते ।
न प्रकाश्यमिदं तन्त्रं न देयं यस्य कस्यचित् ॥
मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति विपदश्च पदे पदे ।
इहलोके च दारिद्र्यं परतः पशुतां व्रजेत् ॥

यद्गृहे विद्यते ग्रन्थः लिखितः यस्यवेश्मनि ।
कमलाऽपि स्थिराभूत्वा कृष्णेन सह मोदते ॥
इत्येवं कथितः ग्रन्थः मयाते मुनिसत्तमः ।
अस्यालोकनमात्रेण कृष्णात्मा संप्रसीदति ॥

इतिश्री गौतमीये महातन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे द्वात्रिंशोऽध्यायः ।

नारद गौतम सम्बादः समाप्तो ग्रन्थनायकः ।

Colophon— आषाढ़स्य शुक्लपक्षे तृतीया शौरिवासरे ।
एकविंशति अङ्केन नृपत्यौ दिव्यसिंहके ॥

बेण्टपुर शासन आर्त्तत्राण त्रिपाठी लिखितमिदं पुस्तकम् । बाणेश्वरदेव रत्नाकरिवे अधम आर्त्तकु । सन् १२८३ लाल ए पोथि बेण्टपुर शासन आरत त्रिपाठीङ्कर ।

27

Catalogue No. T/19

चण्डीप्रयोगः

and others

Substance—Palmleaf. No. of folia—88. Size—7.4"×1.1" Character—Oriya. Date of copy—C. 11th century. Complete. Condition—some folios are broken and a few folios are moth eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Paralakhemundi, Dt. Ganjam.

इतिश्री वाराहीतन्त्रे हरगौरीसम्बादे चण्डीपाठप्रयोगविधानम् । इश्री क्रोटतन्त्रे (?) शतावृत्ति चण्डिविधानम । इतिश्री मारीच कल्पे ब्रह्मागस्त्य सम्बादे सप्तशती प्रयोगः । इतिश्री पार्थिवेश्वरचिन्तामणिकल्पे पार्थिवलिङ्गार्च्चनविधिः । इत्यगस्त्यसहितोक्त श्रीभगवद्-विष्णोः सहस्रनामसंख्याविधानं समाप्तम् । इतिश्री नारदीयपञ्चरात्रे ब्रह्मानारदसम्बादे नृसिंहकवचकल्पः समाप्तः ॥ इतिश्री गौरीनिर्णये हरगौरी सम्बादे योगयात्रा विधानम् । इतिश्री शैवचिन्तामणौ अन्तर्यागादि मुद्रालक्षणान्तकथनं नाम चतुर्थः पटलः । इतिश्री सौर-संहितायां श्रुतकीत्तिशौनकसम्बादे नामत्रयकल्पं समाप्तम् ।

No colophon.

28

Catalogue No. T/46 a

चण्डीपाठ विधानम्

and others.

(according to मारीचकल्प)

Substance—Old paper. No. of pages—17. Size—13" × 4.2". Character—Bengali. Date of scribe—Śakābda 1810 or 1888 A D. 22 day of Śrāvana. Name of the scribe—Hṛdayānanda Sarmā. Complete. Condition—good. Findspot—Dharādharpur area, P. S. Jagatsimhapur, Dt. Cuttack.

Beginning— ॐ नमः परमदेवतायै ।

कैलास शिखरे रम्ये नानादेवगणावृते ।
चतुर्म्मण्डलसयुक्ते शृङ्गारमण्डपे स्थितम् ॥
समाधौ संस्थितं शान्तं क्रीड़न्तं योगिनीप्रियं ।
तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शङ्करम् ।

इतिश्री मारीचकल्पे ब्रह्मागस्त्य सम्बादे चण्डिपाठ विधानं समाप्तम् ।

X X X

इतिश्री क्रोड़तन्त्रे शतावृत्तिचण्डीविधानं समाप्तम् ।

There are some folios containing Saptaśatī Chandī with sanskrit tīkā by Gopāla Chakravartī towards the end of the manuscript.

इति गयघड (?) वन्द्यघाटीकूलोभव श्री गोपालचक्रवर्त्तिविरचितायां तत्वप्रकाशिकायां शुम्भनिशुम्भवधः समाप्तः ।

Colophon same as in catalogue no. B.S. 46 (b).

29

Catalogue No. T/26.

छिन्नमस्तायन्त्रम्

and others

Substance—Palmleaf. No. of folios—137. Size—16.5"×1.4". Character—

Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—some folios are broken and worm eaten. 4 lines to a page. Findspot—Khallikote, Dt. Ganjam.

इति श्री धूमावतीयन्त्रोद्धारः X X X । इति श्री छिन्नमस्तायन्त्रोद्धारः X X X। इतिश्री वगलामुखीयन्त्रोद्धारः X X X । इतिश्री महालक्ष्मीयन्त्रोद्धारः X X X । इतिश्री मन्त्रचिन्तामणौ सर्वतन्त्रसम्मते दशमहाविद्यामन्त्रोद्धारः X X X । इतिश्री मातङ्गीयन्त्रोद्धारः X X X । इतिश्रीविद्या महालक्ष्मीमन्त्रोद्धारः X X X । इतिश्री पद्मपुराणोक्त साधिवास तुलसीविवाहव्रतः समाप्तः X X X । इतिश्री हयशीर्षोक्त-दुर्गाचलप्रतिमाविधिः समाप्तः X X X। इतिश्री प्रतिष्ठाप्रदीपे पार्वतीचलप्रतिमा प्रतिष्ठा विधिः समाप्तः ।

Colophon— महेश्वररथशर्मणः हस्ताक्षरमिदम् । मुहिं अधम बालुत ।

30

Catalogue No. T/74

तन्त्रतत्त्वसारः

by—दीननाथ भूसुर

Substance—Palmleaf. No. of folios—18. Size—13.7×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete up to Japaprakarana. Condition—good. 5 to 7 lines to a page. Findspot—Midnapur district, West Bengal.

Beginning— ॐ नमः श्रीपरदेवतायै ।

नत्वा कालीपदद्वन्द्वं वेधादिसुरवन्दितं ।
गुरुं गणपतिं वाणीं श्रीदीननाथ भूसुरः ॥
नानातन्त्रसमालोच्य पुत्रादीनां हिताय च ।
श्रीतन्त्रतत्त्वसारोऽयं संक्षेपात् सवितन्वते ॥

तत्रादौ गुरुलक्षणं

शान्तोदान्तः कुलीनश्च विनीतः शुद्धवेशवान् ।
शुद्धाचारः शुचिर्दक्षः सुप्रतिष्ठः सुबुद्धिमान् ॥

निग्रानुग्रहे शक्तो गुरुरित्यभिधीयते ॥

X X X

अथ शिष्यलक्षण —

शान्तोविनीतः शुद्धात्मा श्रद्धावान् धारणक्षमः ।
समर्थश्च कुलीनश्च प्राज्ञः सच्चरितो व्रती ॥
एव मादिगुणैर्युक्तः शिष्योभवति नान्यथा ।

There are some folios containing sandhyāvidhi according to Yayurveda, towards the end of the manuscript.

No colophon.

31

Catalogue No. T/54(b)

तन्त्ररत्नम्

Substance—Palmleaf. No. of folios—25. Size—15.5"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete up to 11th patala. Conditon—good. 6 lines to a page. Findspot – Khurdha area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणशाय नमः । अविघ्नमस्तु ।

नमामि कालीं कलिकल्मषापहां
प्रेतासनां चण्डनृमुण्डमालिनीम् ।
विशालदंष्ट्रानिवहैर्भयानकां
सदा मुदा नोऽवतु दक्षिणापराम् ॥

मालिनी हृदये—

अथवक्ष्याम्यहं या या महाविद्या महीतले ।
दोषजालै र्न संसृष्टास्ताः सर्वाहि फलैः सह ॥
कालीनाम महाविद्या त्वरिताछिन्नमस्तका ।
वाग्वादिनी चान्नपूर्णा तथा प्रत्यङ्गिरा पुनः ॥

कामाक्षा वासली वाला मातङ्गी शैलवासिनी ।
इत्याद्या सकला विद्या कलौ पूर्णफलप्रदा ॥

इतिश्री तन्त्ररत्ने प्रथमः पटलः ।

X X X

प्रातःकाले च मध्याह्ने सायं यो नियतं जपेत् ।
येनेकेन प्रकारेण कालीस्तुति परायणः ॥
लभते विविधान् भोगान् अन्ते मोक्षं न संशयः ॥

इतिश्री तन्त्ररत्ने नवमः पटलः ।

X X X

इतिश्री तन्त्ररत्ने दशमः पटलः ।

X X X

इतिश्री तन्त्ररत्ने पूजानुष्ठानक्रम एकादशः पटलः ॥

The following authorities are being quoted in the work.

1—कामाक्षापञ्चशिखा, 2—कालिकाकुलार्णव, 3—कालीकल्प, 4—कालीतन्त्र, 5—कालीहृदय, 6—कुमारीकल्प, 7—कुमारीतन्त्र, 8—कुब्जिकाचूडामणि, 9—तारार्णव, 10—भैरवतन्त्र, 11—भैरवीतन्त्र, 12—मत्ससूक्त, 13—मालिनीहृदय, 14—मुण्डमालातन्त्र, 15—रुद्रयामल, 16—वाराहीतन्त्र, 17—विश्वसारतन्त्र, 18—विष्णुयामल, 19—वीरतन्त्र, 20—स्वच्छन्दसंग्रह, 21—ज्ञानार्णवतन्त्र Etc.

There is only one folia containing Padārthadharmasamgrah at the end of the manuscript.

प्रणम्य हेतुमीश्वरं कणादमुनिमन्यतः ।
पदार्थधर्मसंग्रहः प्रवक्ष्यते महोदयः ॥

No colophon.

32

Catalogue No. T/25

तन्त्रसारः

by—महामहोपाध्याय कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—139. Size—20.5"×1.6". Character—

Oriya. Date of copy—C. 17th century. Incomplete. Condition—most of the folios are damaged and worm eaten, so it is very difficult to decipher the text. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Bāripadā, Dt. Mayurbhanja.

Beginning— X X X देवतायै ।

नत्वा कृष्णपदद्वन्द्वं ब्रह्मादि सुरवन्दितम् ।
गुरुञ्चज्ञानदातारं कृष्णानन्देन धीमता ॥

X X X

X X X तन्त्रसारः प्रतन्यते ।

X X X

गोपाङ्गना केलीविलासमुग्धं
संसारदावानलभङ्गदक्षम् ।
ब्रह्मादि वृन्दारक देवतांघ्रि
वन्दे मुकुन्दं जगदेकनाथम् ॥

इतिश्री महामहोपाध्याय कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य विरचिते तन्त्रसारे प्रथमः परिच्छेदः ।

No colophon.

33

Catalogue No. T/50

तन्त्रसारः

by—महामहोपाध्याय कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—131. Size—16.5"×1.6" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—some folios are moth eaten. 7 lines to a page. Findspot—Khallikote, Dt. Ganjam.

Beginning— अविघ्नमस्तु ।

नत्वा कृष्णपदद्वन्द्वं ब्रह्मादि सुरवन्दितं ।
गुरुं च ज्ञानदातारं कृष्णानन्देन धीमता ॥

तत्तद् ग्रन्थगतान्वाक्यान् भिन्नार्थं प्रतिपद्य च ।
सौकर्य्यार्थं च संक्षेपात् तन्त्रसारः प्रतन्यते ॥
उच्यते प्रथमं तत्र लक्षणं गुरुशिष्ययोः ।
शान्तोदान्तः कुलीनश्च विनीतः शुद्धवेग(श)वान् ॥
शुद्धाचारः सुप्रतिष्ठः शुचिर्दक्षः सुबुद्धिमान् ।
आश्रमी ध्याननिष्ठश्च मन्त्रतन्त्र विशारदः ॥
निग्रहानुग्रहे शक्तः गुरुरित्यभिधीयते ।

विशेषमाह विद्याधराचार्य्यः—

मध्यदेश कुरुक्षेत्र गौड़काङ्कणसम्भवाः ।
अन्तर्वेदि प्रतिष्ठाना अवन्त्याश्च गुरुत्तमाः ॥
लाशः शाल्योद्भवासौरा मागधाः केरलास्तथा ।
कौशलाश्च दशार्णाश्च गुरवः सप्त मध्यमाः ॥
कर्णाटनर्मदाराष्ट्राः कच्छावीरोभ्भवाः स्मृताः ।
कलिङ्गाश्च कदम्बाश्च काम्बोदाश्चाधमामताः ॥

X X X

सिद्धमन्त्रस्तु यः साक्षात् सशिवो नात्र संशयः ।

इतिश्री महामहोपाध्याय श्री कृष्णानन्दविद्यावागीशभट्टाचार्य्य विरचिते बृहत्तन्त्रसारे प्रथमः परिच्छेदः ।

The author Kṛshnānanda Vidyāvāgīśa Bhattāchārya quoted the following authorities in his work.

1—अगस्त्यसंहिता, 2—आगम कल्पद्रुम, 3—आङ्गिरसकल्प, 4—आदियामल, 5—उत्तरतन्त्र, 6—एकवीराकल्प, 7—कल्पायनीकल्प, 8—कालिकापुराण, 9—कालीतन्त्र, 10—कुण्डप्रकरण, 11—कुमारीकल्प, 12—कुमारीतन्त्र, 13—कुलचूड़ामणि, 14—कुलसार, 15 कुलार्णवतन्त्र, 16—कुलामृत, 17—कुलावली, 18—कुलोड्डीशतन्त्र, 19—गन्धर्वतन्त्र, 20—गौतमीयतन्त्र, 21—चामुण्डातन्त्र, 22-तन्त्रप्रदीप, 23-तन्त्रराज, 24—ताराकल्प, 25—ताराखण्ड 26—त्रिशक्तितन्त्र, 27—दशक्षर पटल, 28 - नन्दिकेश्वर-संहिता, 29—नवरत्नेश्वर, 30—नामभट्ट, 31—नारदसंहिता, 32—नारदीयतन्त्र, 33—नारायणकल्प, 34—नीलतन्त्र, 35—नीलसारस्वत, 36—प्रपञ्चसारतन्त्र, 37—पुर-

श्चरणचन्द्रिका, 38—फेत्कारिणीतन्त्र, 39—बृहत्श्रीक्रम, 40—बृहत्स्तवराज, 41--भविष्योत्तर, 42 - भावचूड़ामणि, 43 - भूतभैरवतन्त्र, 44—भैरवतन्त्र, 45-मन्त्रदेव-प्रकाशिका, 46 - मन्त्रराज, 47—मन्त्रराजसंहिता, 48 —मातृकार्णव, 49—मायातन्त्र, 50 —मालिनीतन्त्र, 51—मुण्डमालातन्त्र, 52—योगिनीतन्त्र, 53—योगिनीहृदय, 54—रामार्चनचन्द्रिका, 55 रुद्रयामल, 56 -वाराहीतन्त्र, 57 - विद्याधर, 58 - विद्या-नन्दनिबन्ध. 59 - विश्वसारतन्त्र, 60—वीरतन्त्र, 61—वैष्णवतन्त्र, 62 - शक्तिविषय, 63 —शङ्कराचार्य्य, 64 शारदातीलक, 65—श्री विद्यापद्धति, 66 सनत्कुमार, 67-सनत्-कुमारसंहिता, 68 -सारसमुच्चय, 69- सारसंग्रह, 70 -सिद्धसारस्वत, 71 - संस्कार-सारावली, 72—स्वच्छन्दभैरव, 73—ज्ञानार्णव Etc.

No colophon.

34

Catalogue No. T/65

तन्त्रसारः

by—महामहोपाध्याय कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य ।

Substance—Palmleaf. No. of folia—153. Size—15.3"×1.5". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Incomplete. Condition—good. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Khallikote, Dt. Ganjam.

The following topics are described in the manuscript.

गुरुशिष्यलक्षणं, दीक्षानिरूपणं, कुलाकुलचक्रविचारः, राशिचक्रविचारः, अकथहं (?) चक्रविचारः, कड़म (?) चक्रविचारः, ऋणिधनिचक्रविचारः, दीक्षाकालः, वारनिर्णयः, तिथिनिर्णयः, योगादिनिर्णयः, पक्षनियमः, मालानिर्णयः. मालासंस्कारः कामनाभेदे अङ्गुलिनियमः, भूमिलिपिः (?) पुरश्चरणप्रयोगः, अष्टोत्तरशतगायत्रीजपनियमः, ग्रहणकालपुरश्चरण सङ्कल्पः, कूर्मचक्रविचारः, मन्त्रणां दशसंस्काराः, पीठान्यासः, ऋष्यादि-न्यासः, मन्त्रन्यासः, पञ्चाशत् कलापूजा, कलावतीदीक्षा, पञ्चायतनीदीक्षा, संक्षेपदीक्षा, समान्य पूजापद्धतिः ।

इतिश्री तन्त्रसारे प्रथमः परिच्छेदः ।

गोपालगायत्री, गणेशगायत्री, सूर्य्यगायत्री सम्मोहनगायत्री, शक्तिगायत्री, त्वरिता-गायत्री, हयग्रीवगायत्री, कालभैरवीगायत्री, त्रिपुरसुन्दरी गायत्री, दुर्गागायत्री, महालक्ष्मी-

गायत्री, सरस्वतीगायत्री, छिन्नमस्तागायत्री, श्यामागायत्री, मातृकान्यासः, बाह्यमातृकान्यासः, प्राणायामः।

इतिश्री तन्त्रसारे द्वितीयपरिच्छेदः ।

भुवनेश्वरीमन्त्राः, अन्नपूर्णामन्त्राः, जयदुर्गामन्त्राः, सरस्वतीमन्त्राः, लक्ष्मीमन्त्रा, गणेशमन्त्राः, विष्णुमन्त्राः, श्रीराममन्त्राः, श्रीकृष्णमन्त्राः, वासुदेवमन्त्राः, नृसिंहमन्त्राः, हरिहरमन्त्राः, (रत्यादिन्यासः, मूर्त्तिन्यासः, कराङ्गन्यास, वाण (?) न्यासः, भूषणन्यासः,) सम्पत्प्रदाभैरवीपूजा, चैतन्यभैरवीपूजा, षट्कूटाभैरवीपूजा, भोगमोक्षदाभैरवीपूजा, रुद्रभैरवीपूजा, भुवनेश्वरीभैरवीपूजा, महाषोडशीत्रिपुरसुन्दरीमन्त्राः, (सहारन्यासः, सोढ़ान्यासः, सृष्टिन्यासः, नक्षत्रन्यासः, यागिनीन्यासः, वशिन्यादि (?) न्यास, नवयोनि-न्यासः, पीठतत्त्वन्यासः, पञ्चदशान्यासः, षोड़शीन्यासः, तत्त्वन्यासः, त्रिपुरान्यासः), विद्याप्रकरणं, प्रचण्डचण्डिकामन्त्राः, षोड़शीविद्याप्रशंसा, छिन्नमस्ताप्रकरणं, श्यामाप्रकरणं, (भुवनेश्वरीविद्या, अष्टाक्षरीविद्या, नवाक्षरीविद्या), ताराप्रकरणं, एकजटामन्त्राः and others.

The following authorities are quoted in the manuscript which are not found in the manuscript no. T/50 discussed previously.

क्रमदीपिका, तत्त्वसार, ताराणर्व, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण, ब्रह्मसंहिता, भैरवीतन्त्र, भैरवीविद्या, वशिष्ठ, विशुद्धेश्वरतन्त्र वैशम्पायनसंहिता Etc.

No colophon.

35

Catalogue No. T/69

तन्त्रसारः

by—मः मः कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—179. Size—13.4"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—some folios are worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Haladiā, P.S. Khurdha, Dt. Puri.

The scribe has given a contents of the work at the beginning of the manuscript are given below :

गुरुलक्षणं, शिष्यलक्षणं; गुरुनिषेध लक्षणं, मन्त्रदिक्षाविधिः. राशिचक्रः. मालामन्त्र, कुलाकुलविचारः, नक्षत्रचक्रः, अकथहचक्रः, अकड़मचक्रः, ऋणिधनिचक्रः, दीक्षाकालः, नक्षत्रनिर्ण्णयः, योगविनिर्ण्णयः, लग्ननिर्ण्णयः, पक्षनिर्ण्णयः, मासनिर्ण्णयः, अयननिर्ण्णयः, तिथिनिर्ण्णयः, ग्रहणदीक्षा, परागदीक्षा, मालानिर्ण्णयः, आसनभेदाः, मालासंस्कारः, पुरश्चरणस्थाननिर्ण्णयः, पुरश्चरणभक्षादिनिर्ण्णयः, त्यक्तद्रव्याणां निर्ण्णयः, जपफलनियमः । X X X जपतर्पणहोमादिविधिः, पुरश्चरणप्रयोगः, कूर्मचक्रं, मन्त्राणां दशसंस्कारः, कलावतीदीक्षाप्रयोगः, सर्वतोभद्रमण्डलं, पञ्चाब्जमण्डलं, त्रिलोहीमुद्रा, सामान्यपूजापद्धतिः, सन्ध्याप्रयोगः, स्नानविधिः, आसनशुद्धिः, भूतशुद्धिः, मातृकान्यासः, बाह्यमातृकाध्यानं, सामान्यन्यासे अङ्गुलिनियमः, प्राणायामनिर्ण्णयः, पीठन्यासः. पीठपूजा, भुवनेश्वरीमन्त्राः, आवरणपूजा, अन्नपूर्ण्णामन्त्राः, त्रिपुटामन्त्रा, दुर्गामन्त्राः, वागीश्वरीमन्त्राः, पारिजात सरस्वतीमन्त्राः, गणेशमन्त्राः, हेरम्बमन्त्राः, लक्ष्मीमन्त्राः, सूर्य्यमन्त्राः, विष्णुमन्त्राः, रामचन्द्रमन्त्राः, श्रीकृष्णमन्त्राः, हयग्रीवमन्त्राः, नृसिंहमन्त्राः, हरिहरमन्त्राः, शिवमन्त्राः, बटुकमन्त्राः, भैरवीमन्त्रा, सम्प्रदायभैरवीमन्त्राः, षट्कूटाभैरवीमन्त्राः, रुद्रभैरवीमन्त्राः, भुवनेश्वरी भैरवीमन्त्राः, अन्नपूर्ण्णेश्वरी भैरवीमन्त्राः, श्रीविद्यामन्त्राः Etc.

No colophon

36

Catalogue No. T/71

तन्त्रसारः

by—मः मः कृष्णानन्दविद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—153. Size—13"×1 4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—some folios are broken and some leaves are worm eaten, 4 lines to a page. Findspot—Haladiā, P.S. Khurda, Dt. Puri.

Topics of the work :—

श्रीविद्याविशेषपद्धतिं, तिपुरान्यासः, धूमावतीन्यासः, षोड़शनित्यान्यासः, प्रकट-योगिनान्यासः त्रिपुरसुन्दरीन्यासः, प्रचण्डचण्डिकामन्त्राः, ताराप्रकरणं, वीरसाधनं,

शवसाधनं, विद्याभेदाः, मातङ्गीउपासना, उच्छिष्टचाण्डालीमन्त्राः, धूमावतीमन्त्राः, भद्रकालीमन्त्राः, उच्छिष्टगणेशमन्त्राः, धनदामन्त्राः, श्मशानकालीमन्त्राः, वगलामुखीमन्त्राः, कर्णपिशाचीमन्त्राः, मञ्जुघोषमन्त्राः, तारिणीमन्त्राः, सारस्वतकल्प, कात्यायनीकल्पः, दुर्गामन्त्राः, गौरीमन्त्राः, ब्रह्माणीमन्त्राः, इन्द्रमन्त्राः, गरुड़मन्त्राः, विषहराग्निमन्त्राः, वृश्चिकादि विषहरणमन्त्राः, मूषकविषहरणमन्त्राः, विष्णुमन्त्राः, हनुमत्कल्पः, X X X श्मशान भैरवीमन्त्राः, कालीप्रयोगः, निगड़बन्धनमोक्षणं, त्र्यम्बकमन्त्राः, मृतसंजीवनीमन्त्राः, विद्वेषणं, उच्चाटनविधिः, सुखप्रसवमन्त्राः, अदर्शन प्रकारः, रिपुबलरोधनं, योगिनीसाधना, कामेश्वरी-साधना, बलातिबलाविद्यासाधना, यन्त्रसंस्कारपद्धतिः, यन्त्रप्रयोगः, पूजायांविहितनिषिद्धानि, जपविशेषः, मन्त्रसिद्धेः उपायाः, मन्त्रसिद्धिलक्षणं, मन्त्रिणांदोषानिरूपणं, दोषशान्तिः, होमार्थकुण्डनिर्णयः, श्रुवश्रुच लक्षणं, कुण्डानां विशेषफलानि, नामशिरादिनिर्णयः, होम-प्रयोगः, मूर्त्तिन्यासः and others.

No colophon.

37

Catalogue No. T/70

तन्त्रसारः

by—म: म: कृष्णानन्द विद्यावागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—183. Size—12.8"×1.2". Character—Oriya. Date of scribe— 5th Amka year of the Gajapati king Gopinātha Deva of Khurdhā dynasty, Śakābda 1643 or 1721 A. D. Name of scribe—Ārtatrāṇa Mishra of Haladiā, P.S. Khurdha, Dt. Puri. Incomplete. Condition— some folios are moth eaten. 4 lines to a page. Findspot—Haladiā, P. S. Khurdha, Dt. Puri.

Topics of the votanee—

नित्यहोमविधिं, भूतानां मण्डलानि, त्रैलोक्यमङ्गलकवच, भुवनेश्वरी स्तोत्रं, अन्नपूर्णा कवचं, त्रिपुटाकवचं, त्रिपुटास्तोत्र, दुर्गाकवच, दुर्गाशतनामस्तोत्र, महिष-मर्दिनी कवचं, महिषमर्दिनी स्तोत्रं, लक्ष्मीकवचं, सरस्वतीस्तोत्रं, गणेशस्तोत्रं, गणेशकवच, सूर्य्यकवचं, श्रीरामकवच, श्रीरामचन्द्रशताष्टकं, विष्णुस्तोत्र, कृष्णस्तोत्तं, गोपालस्तवः, कृष्णकवचं, शिवस्तवः, शिवकवचं, भैरवीस्तोत्रं, भैरवीकवचं श्रीविद्यास्तोत्रं, किङ्किणी स्तोत्रं,

श्रीकवचं, महात्रिपुरसुन्दरीकवचं, प्रचण्डचण्डिकास्तोत्रं, श्यामास्तोत्रं, श्यामाकवचं, तारास्तोत्रं, ताराकवचं, त्रैलोक्यमोहनं नाम ताराकवचं, X X X वगलामुखीस्तोत्रं, चतुःषष्ट्युपचाराः, अष्टादशोपचाराः, दशोपचाराः, पञ्चोपचाराः, द्रव्याणां निर्माणकाल-नियमः, रुद्रा(क्ष) माहात्म्यं, रुद्राक्षधारणमन्त्रः, रुद्राक्षमुखमाहात्म्यं, विष्णवाराधनमन्त्राः, योगासनानि, मुद्राप्रकाराः, गोपालयन्त्रं, शिवयन्त्रं, शान्त्युदकस्नानं, सर्वदेवानां नित्यपूजा, नैमित्तिकविधिः, दुर्गासरस्वतीगणेशसूर्य्यादिदेवानां प्रयोगविधिः, रामविषये होमः, कृष्णविषये होमः, दधिवामन होमः, हयग्रीवहोमः, नृसिंहहोमः, वराह होमः, मृत्युञ्जय होमः, दक्षिणामूर्त्ति होमः, भैरवी होमः, सुन्दरी होमः, श्यामादि होमः, तर्पणविधिः, बलिमन्त्राः, कुलाचार निरूपण, कुलपूजा, प्रातःकृत्यं, विजयास्वीकारः, यजनप्रकारः, शक्तिशोधनं, वीराणां पुरश्चरणं, योगिनां मन्त्रस्नानं, योग्नीहोमः, कुमारीपूजा, योगप्रकिया and others.

Colophon— श्री गोपीनाथदेवक्षितिपतितीलकस्यापि पञ्चाङ्के माघे पक्षेकृष्णे कूजाहे गुण युगविषयक्ष्मामिते शकस्ययाते मुक्ते च भानोर्युग X X

मिश्रवंशसमुत्पन्नः आर्त्तत्राण इतिस्मृतः ।
हरिद्राधिवतेः शास्त्रं लिपिशेषं चकारसः ॥

38

Catalogue No. T/72

तन्त्रसारः

by— मः मः कृष्णानन्दवागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—226. Size—16.2"×1.7" Character—Oriya. Date of copy—Śaka 1807 or 1885 A.D. Complete up to 4th patala. Condition— a few folios are slightly worm eaten towards the end of the manuscript. 7 to 8 lines to a page. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

End— श्री कृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य्यस्य संग्रहः ।
दृष्ट्वानधीत शास्त्राणिधीराध्यापयसांप्रतम् ॥

X X X

इति महामहोपाध्यायश्रीकृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य्यविरचिते तन्त्रसारे चतुर्थः पटलः ।
समाप्तमिदं पुस्तकम् ।

Colophon— पार्थिवनामसम्वत्सर फाल्गुनकृष्णाष्टमीशुक्रवारे समाप्तमिदं पुस्तकम् ।
शकाब्द १८०७ ।

39

Catalogue No. H/14

तन्त्रसारः

by—मः मः कृष्णानन्दवागीश भट्टाचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—306 Size—16.5"×1.5". Character—Nāgirī. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition—badly worm eaten. 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

Text is same as in the previous manuscript.

No colophon.

40

Catalogue No. T/64

तन्त्रोक्तपूजा

and others.

Substance —Palmleaf. No. of folia—175. Size—14.3"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C.18th century. Complete. Condition - good, but left corner of some folios are slightly damaged. 5 lines to a page. Findspot— Sāna Khemundi, Dt. Ganjam.

Topics of the manuscript

मुद्रालक्षणं, कालिकासहस्रनाम, देवीपूजा, त्र्यम्बकपूजा, दुर्गाकल्पे अग्निसंस्कारः, मन्त्रदेवप्रकाशिकायां मालादिलक्षणं, कूर्मचक्रं, कालिकापुराणोक्त प्रतिमास्थापनं, विश्वसार-तन्त्रोक्त पूजादिद्रव्यफलं, महादेववचने देवीध्यानं, नारसिंहतापिनीये अग्निलक्षणं, ज्ञानार्णवे मन्त्राक्षरप्रकाशितं, वनदुर्गामन्त्रपूजाविधिः, होमविधिः, कुण्डलक्षणं, त्रिरात्रिविहित-कर्माणि, मण्डपप्रतिष्ठा, यूपादि लक्षण, वरुणसूक्तं, पञ्चकुण्डविधानं, अङ्कुरारोपणं, वारुण-मण्डललक्षणं, वारुणमन्त्रकथनं, हयशीर्षोक्तवास्तुपूजा, शारदातीलके स्थण्डिललक्षणं कुण्ड-

लक्षणं च, सर्वतोभद्रमण्डले देवतास्थापनं, मत्स्यपुराणे गृहवलिनिर्णय, गृहार्घ्यविधिः, गृहप्रवेशविधिः, कूपार्घ्यविधिः, कूपप्रतिष्ठाविधिः, पुष्करशान्तिः, प्रतिग्रहप्रायश्चितं, सप्तधेनु-प्रायश्चित्तं, वृषोत्सर्गः, इन्द्रद्युम्नस्नानविधिः, शिवरात्रिनिर्णयः, प्रवराध्यायः, रिष्टशान्तिः, समुद्रस्नानविधिः, अक्षयतृतीया, शिवरात्रिव्रतलक्षणं, जन्माष्टमीनिर्णयः, गलद्रक्तनिवारणं, वशीकरण and others.

इतिश्री कालिकाकुलसर्वस्वे शिवरामसम्वादे कालिकासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री कात्यायनी तन्त्रोक्त गणरिष्टशान्तिः ।

X X X

इतिश्री देवीपुराणे देवनारदसम्वादे दुर्गाव्रतं समाप्तम् ।

No colophon.

41

Catalogue No. T/66

तन्त्रोक्तस्तवकवचम्

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—118. Size—15.2" × 1.3". Character—Oriya. Date of copy—c. 18th century. Condition—good. Incomplete. 2-9 lines to page. Findspot—Khallikote, Dt. Ganjam.

इतिश्री रुद्रयामले कालिकाकवच सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री फेत्कारिणीतन्त्रे महाकालभैरवविरचितं श्रीदक्षिणकालिकायाः कर्पूरस्तोत्रं समाप्तम् ।

× × ×

इतिश्री महामहोपाध्यायश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्रीपूर्णानन्दगिरिविरचिते श्यामा-रहस्ये सपर्य्याविधिर्नाम तृतीयः परिच्छेदः ।

X X X

इतिश्री भैरवीतन्त्रे कालभैरव भैरवीसम्वादे दक्षिणकालिकायाः अर्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

× × ×

इतिश्री कालभैरवेणोक्तं कालीकीलक समाप्तम् ।

X X X

इतिश्री कालीकुलसर्वस्वे कालिकास्तवराजं सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री सर्वतन्त्रानुसारिणी कालीपूजा समाप्ता ॥

X X X

इतिश्रीमद्गोविन्दभगवत्पादपूज्यपादशिष्य श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य भगवत् वृतिरनन्दलहरीस्तुतिः समाप्ता ।

No colophon.

42

Catalogue No. T/67 (a)

तन्त्रोक्तस्तोत्रकवचम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—24. size—11.1"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—c. 18th century. Incomplete. Condition—left side of the manuscript is broken. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Gadamāṇitrī. P.S. Khurdhā, Dt. Puri.

इतिश्री भैरवीकल्पे वगलामुखी स्तोत्रप्रयोगः ।

X X X

इतिश्री अगस्त्यसहितोक्तविष्णुसहस्रनामप्रयोगः ।

X X X

इतिश्री ब्रह्मास्त्रविद्यावगलामुखी मन्त्रराजः ।

X X X

No colophon.

43

Catalogue No. T/35 (a)

ताराच्चंन तरङ्गिणी

by राम

Substance—Palmleaf. No. of folia—19. size—18.1"×1.3". Character – Oriya. Date of copy—c. 18th century. Complete – Up to 11th Taranga. Condition—a few folios are slightly worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot – Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning – श्री लिङ्गराज शरणं, श्री मन्नीलसरस्वत्यै नमः ।

आनन्दमधुसन्दोहं सन्मनोमधुपाकुलम् ।
तारिणीचरणाम्भोजयुगलं समुपास्महे ॥
श्रीगुरोश्चरणवन्द्य (श्चरणौवन्दे) म (अ)भिवन्द्य मनीषिणाम् ।
क्रियते रामकृतिना ताराच्चंनतरङ्गिणी ॥

X X X

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यां मन्त्रोद्धारो नाम प्रथमस्तरङ्गः ॥

X X X

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यां प्रातःकृत्यादिविधिः द्वितीयस्तरङ्गः ॥

X X X

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यां नित्यपूजाविधिस्तृतीयस्तरङ्गः ॥

X X X

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यांद्रव्यशुद्धिविधानं नाम चतुर्थस्तरङ्गः ॥

X X X

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यां पञ्चमयागप्रतिपादने पञ्चमस्तरङ्गः ॥

× × ×

इतिश्री ताराच्चंनतरङ्गिण्यां X X X षष्ठस्तरङ्गः ॥

X X X

इतिश्री तारार्च्चनतरङ्गिण्यां पुरश्चरणविधिः सप्तमस्तरङ्गः ।

X X X

इतिश्री तारार्च्चनतरङ्गिण्यां नैमित्तिकविधिदिक् प्रदर्शनो नामाष्टमस्तरङ्गः ।

X X X

इतिश्री तारार्च्चनतरङ्गिण्यां कामनिर्ण्णयो नाम नवम स्तरङ्गः ।

X X X

इतिश्री तारार्च्चनतरङ्गिण्यां वीरसाधनादिविधिर्नाम दशम स्तरङ्गः ॥

× × ×

इतिश्री तारार्च्चनतरङ्गिण्यां X X X एकादशस्तरङ्गः ॥

The following authorities are quoted in Tārārchhana Taraṅgiṇī.

1—अगस्त्यसंहिता, 2—अनुकल्पकुलार्ण्णव, 3—अष्टतन्त्र, 4—आगमकेश्वर, 5—उत्तरतन्त्र, 6—कपिलपञ्चरात्र, 7—कालिकापुराण, 8—कालीकल्प, 9—कालीकुलक्रम, 10—कालीतन्त्र, 11—कुब्जिकातन्त्र, 12—कुमारीकल्प, 13—कुमारीतन्त्र, 14—कुलचूड़ामणि, 15—कुलमूलावतार, 16—कुलसंग्रह, 17—कुलामृतदीपिका, 18—कुलार्ण्णवतन्त्र, 19—कुलावतार, 20—कुलोड्डीशतन्त्र, 21—गन्धर्वतन्त्र, 22—गौतमीयतन्त्र, 23—चक्रमुद्रातन्त्र, 24—तत्वसारसंहिता, 25—तन्त्रचूड़ामणि, 26—तन्त्रार्ण्णव, 27—तारातन्त्र, 28—तारार्ण्णव, 29—तारारहस्य, 30—त्रिपुरपद्धति, 31—त्रिशक्तिगम, 32—त्रैलोक्यसंमोहनतन्त्र, 33—नरसिंहपुराण, 34—नीलतन्त्र, 35—पुरश्चरणचन्द्रिका, 36—फेत्कारिणीतन्त्र, 37—फेरवीयतन्त्र, 38—ब्रह्मयामल, 39—ब्रह्मसंहिता, 40—भावचूड़ामणि, 41—भावप्रदीप, 42—भूतभैरवतन्त्र, 43—भैरवतन्त्र, 44—भैरवीतन्त्र, 45—मत्स्यसूक्त, 46—मन्त्रचन्द्रिका, 47—मन्त्रचूड़ामणि, 48—मन्त्रतन्त्रप्रकाश, 49—मन्त्रमुक्तावली 50—महाकालसंहिता, 51—मालिनीतन्त्र, 52—मुण्डमालातन्त्र, 53—योगिनीतन्त्र, 54—योगिनीहृदय, 55—रुद्रयामल, 56—लक्षणसंग्रह, 57—लिङ्गागम, 58—वायवीयसंहिता, 59—विजयाकल्प, 60—विश्वसारतन्त्र, 61—वीरचूड़ामणि, 62—वीरतन्त्र, 63—वैशम्पायन, 64—शारदातिलक, 65—शैवागम, 66—समयाचार, 67—स्वच्छन्दभैरवतन्त्र, 68—सारसग्रह, 69—सिद्धिसारस्वततन्त्र, 70—सोममुज्ज्वला, 71—हंसपारस्वर (?), 72—ज्ञानमाला, 73—ज्ञानार्ण्णव etc.

Colophon— श्रीलिङ्गराजशरणम् ।

44

Catalogue No. T/44 (c)

तारकपूर्रम्

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia— 17. size— 14.5" × 1.4". Character—Oriya. Date of copy—c. 19th century. 4 to 6 lines to a page. complete. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

इतिश्री महाकालप्रोक्तं फेत्कारिणीतन्त्रोक्तं श्रीतारायाः कर्पूरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

X X X

इतिश्री रावणकृतं शिव द्वादशनाम समाप्तम् ।

X X X

इति कालाग्निरुद्रोपनिषत् समाप्ता ।

X X X

इतिश्री भगवतीपुराणे सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री उत्तरतन्त्रे कालिकाष्टकं सम्पूर्णम् ।

X X X

इतिश्री कुलचूड़ामणौ मन्त्रसिद्ध्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

No colophon.

45

Catalogue No. T/68

तारापूजाविधिः

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—147. size—9" × 1.5". Character—Oriya. Date of copy—c. 19th century. Complete. Condition—good. 4 to 7 lines to a page. Findspot—Sāna Khemundi, Dt. Ganjam.

Beginning— अथ तारापूजाविधिलिख्यते, श्री गणेशायनमः । अविघ्नमस्तु ।
ब्राह्ममुहूर्त्तात शयनादुत्थाय बद्धपद्मासनः वृत्तान्नमेत् ॥

End— इतिश्री तारिणीदेव्या यजनक्रमः समाप्तः ।

× × ×

इतिश्री शङ्कराचार्य्यविरचितं श्रीदुर्गाष्टकंसम्पूर्णम् ।

X X X

तारापूजा श्रुतानाथ विद्याश्चसकलास्तथा ।
साम्प्रत श्रोतुमिच्छामि कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥

इतिश्री फेत्कारिणीतन्त्रोक्तं तारायाः कर्पूरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

No colophone.

46

Catalogue No. T/37 (b)

तारारहस्यम्

by शङ्कराचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—44. size—13.1"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— 1918 A. D. Name of scribe— Govinda Ratha Śarmā. Complete— up to 11th Patala. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Khurdha area, Dt. Puri.

इतिश्री गौड़भूमिनिवासि श्रीशङ्कराचार्य्यविरचिते श्रीतारारहस्ये नित्यपूजानिर्णयः प्रथमः पटलः । इतिश्री·····तारारहस्ये दीक्षाविधिनिर्णयोनाम द्वितीयःपटलः । इतिश्री····· पुरश्चरनिर्णय स्तृतीयः पटलः । इतिश्री····· नैमित्तिकविधिर्नाम चतुर्थः पटलः । इतिश्री····· काम्यविधिः पञ्चमः पटलः । इतिश्री·····रहस्यनिर्णयः षष्ठः पटलः । इतिश्री·····पूजन-विधिः सप्तमः पटलः । इतिश्री·····पुरश्चरणनामाष्टमः पटलः । इतिश्री·····मन्त्रोद्धार-विवरणं नाम नवमः पटलः । इतिश्री·····स्तवकवचादि कथनं नाम (?) दशमः पटलः । इतिश्री·····विद्यामाहात्म्यं नाम एकादशः पटलः ।

There are some folios containing Tārābhujangaprayāta by Samkarāchārya at the beginning of the manuscript.

इतिश्री शङ्कराचार्य्यविरचितं ताराभूजङ्गप्रयातं समाप्तम् ।

The following authorities have been quoted in the manuscript.

1—एकवीराकल्प, 2—एकवीरातन्त्र, 3—कुलचूड़ामणि, 4—गन्धर्वतन्त्र, 5—तन्त्रचूड़ामणि 6—तन्त्ररत्न, 7—नीलतन्त्र, 8—फेत्कारिणीतन्त्र, 9—भावचूड़ामणि, 10—मत्स्यसूक्त, 11—मन्त्रचूड़ामणि, 12—महोग्रताराकल्प, 13—रुद्रयामल, 14—विमलातन्त्र, 15—विष्णुसहिता, 16—वीरतन्त्र, 17—शिवदीक्षाटीका, 18—सिद्धसारस्वत Etc.

47

Catalogue No. T/48 (b)

तारारहस्यम्

by शङ्कराचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—37. size—14.1" × 1.5", Character—Oriya. Date of copy—c. 19th century. 6 lines to page. Complete—up to 11th Patala. Conditon-good. Findspot—Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Text same as Catalogue No. T/37 (b).

No colophon.

48

Cataloue No. T/7

तारासपर्य्याविधिः

Substance—Palmleaf. Name of folia—38. size—10.2"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्रीगुरवे नमः । अथ तारासपर्य्याविधिः लिख्यते ।

रात्रेः प्रथमयामश्च मुहूर्त्तो य स्तृतीयकः ।
स ब्राह्म इति विज्ञये जागृयात्तत्र साधकः ॥
साधकः प्रातरुत्थाय कुलवृत्तं प्रणम्य च ।

End— इतिश्री नीलसरस्वती सपर्य्याविधिः ।

Colophon— गुरुचरणसरोजे सर्वदाभक्तिरस्तु ।

यथाबलं यथाश्रद्धा यथाद्रव्यं यथामनः ।
यथाकालं यथादेशः तथापूजा समाचरेत् ॥

There is only one folio containing Tārā stotra according to Yoginī tantra towards the end of the manuscript.

घोररूपे महारावे सर्वशत्रु भयङ्करि ।
भक्तेभ्यो वरदे देवि ! त्राहिमां शरणागतम् ॥
X X X
पीड़ायां वापि संग्रामे जपे दाने तथाभये ।
य इदं पठति स्तात्रं तस्यसिद्धिर्न संशयः ॥

इतिश्री योगिनींतन्त्रे तारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

49

Catalogue No. T/37(a)

तारासहस्रनाम

(According to Tārakulasarvasva)

Substance—Palmleaf. No. of folia—13. Size—13.1"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—1918 A.D. Name of scribe—Govinda Rathaśarmā. Complete. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Khurdhā area, Dt. Puri.

Beginning— श्रीमदिष्टदेवतायै नमः । श्रीगुरवे नमः ।

कैलास शिखरे रम्ये देवदेवं जगद्गुरु ।
भवानी रहसि प्रीत्या पप्रच्छ परमेश्वरम् ।

देव्युवाच—

कथमीशान सर्वज्ञः लभते सिद्धमुत्तमा ।
साधकाः सर्वदा येन तन्मेकथय मे प्रभो !
X X X

नाम्नासहस्रतारायाः कथयिष्याम्यशेषतः ॥

X X X

End इति श्री ताराकुलसर्वस्वे हरगौरीसम्वादे श्रीमन्नीलसरस्वतीभक्तकुलसर्वस्व-सहस्रनामस्तोत्रं संम्पूर्ण्णम् ।

50

Catalogue No. T/48 (a)

तारासहस्रनाम

Substance—Palmleaf. No of folia—10. Size—14.1"×1.5". Character—Oriya Date of copy— C. 19th century. Complete. Condition—good. 6 lines to a page. Findspot— Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Text is same as in Catalogue No. T/37(a).

End— इतिश्री ताराकुलसवस्वे हरगौरोसम्वादे श्रीमन्नीलसरस्वतीभक्तकुलसर्वस्व-सहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्ण्णम् ।

There are some folios containing Ekajatāstostrarāja towards the end of the manuscript.

No colophon.

51

Catalogue No T/15(d)

त्रिपुरासारसमुच्चयः

by—नागभट्ट

Substance—Palmleaf. No. of folia—25. Size—12.1"×1.2". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. 5 lines to a page. Incomplete. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— नमस्तस्मैताभ्यां च ।

प्रह्वप्राचीनवर्हिः प्रमुखसुरवरानीककोटिरकोटि ।
श्लिष्टं स्पष्टेन्द्रनीलामलमणिमधुपश्रेणी जुष्टंकुपाष्टम् ।
श्रीपादाम्भोजयुग्मं नखमणिविलसद् रश्मिकिञ्जल्कपुञ्जं
सिञ्जन्मञ्ज X रहंसी सुखरितमनिशं मङ्गलं वो भवान्याः ॥
भक्त्या गुरोर्भवपयोनिधिसेतुहेतु-
श्रीपादपद्मयुगले-सकले (?) प्रणम्य ।
लम्बोदरं च कथयामिगुरोपदिष्टं
आराधनक्रममहं कुलनायिकायाः ॥

X X X

इतिश्री नागाभट्टविरचिते तिपुरासारसमुच्चये प्रथमः पटलः ॥
इतिश्री नागभट्टविरचिते ... ... द्वितीयः पटलः ॥
इतिश्री ... ... नाड़िविवरण नाम तृतीयः पटलः ॥
इतिश्री ... ... चतुर्थः पटलः ॥
इतिश्री ... ... पञ्चमः पटलः ॥
इतिश्री ... ... षष्ठः पटलः ॥
इतिश्री ... ... सप्तमः पटलः ॥

No colophon.

52

Catalogue No. T/42

दक्षिणकालिकार्गलम्

and others.

Substance— Palmleaf. No. of folia—162. Size - 6.5"×1.3" Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition - good. 4 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्रीमदिष्टदेवतायै नमः । श्रीगुरवेनमः ।

कैलास शिखरे रम्ये देवदेवं जगद्गुरुं ।

X X X

पुनर्वक्ष्यामि देवेशि कालिकायाऽर्गलं (?) शुभं।
स्वर्गद्वारनिरोधस्य कवाटोद्घाटनार्गलम् ॥

इतिश्री भैरवीरूपे श्रीदक्षिणकालियाः अर्गलस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री कालीकुलसर्वस्वे महाकालभैरवेनोक्तं कालिकायाः कीलकं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री कालीतन्त्रे भैरवीभैरवसम्वादे श्रीजगन्मङ्गलकवचं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री कालीतन्त्रे एकाक्षरकवचं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री फेत्कारिणीतन्त्रे कर्पुरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्रीमदादिनाथविरचितायां महाकालसंहितायां कालिकासम्वादे सुन्दरीशक्ति-दानाख्यं मेधासाम्राज्यनामकं कालीस्वरूपं श्रीदक्षिणकालिकायाः सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री देवीपुराणे इन्द्रप्रणीतं इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इतिश्री भैरवकल्पद्रुमे वगलास्तोत्रप्रयोगः समाप्तः ॥

X X X

इतिश्री उड्डामरतन्त्रसारे भवानीपाठः समाप्तः ॥

X X X

इतिश्री रुद्रयामले हरगौरीसम्वादे रुद्रचण्डी समाप्ता ॥

X X X

इतिश्रीमन्त्रचिन्तामणौ दक्षिणकालिकामन्त्रयन्त्रोद्धारः समाप्तः ॥

X X X

इतिश्रीरुद्रयामले ईश्वरगौरीसम्वादे नीलसरस्वतीताराकवचं समाप्तम् ॥

X X X

इतिश्री रुद्रयामले गुरुपादुकापञ्चकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No colophon.

53

Catalogue No. T/17

दक्षिणकालिका अर्च्चाविधिः

Substnce – Palmleaf. No. of folia—82. Size—8.3"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C 19th century. Incomplete. Condition—some folios are worm eaten. 5 lines to page. Findspot— Parlakhimedi, Dt. Ganjam.

Beginning— श्रीगणेशाय नमः। अथ अर्च्चाविधिः लिख्यते।

आदौ द्वारपालपूजा, पूजागृहस्य द्वारे उपविश्य अर्घ्यस्थापनं कुर्य्यात्। स्ववामे विन्दुषट्कोणमध्ये त्रिकोणं वृत्तं X X X लिखित्वा चतुर्दिक्षु पूजयेत्। यथा—ॐडां उड्रियाय नमः। ॐ जां जालन्धराय नम. Etc.

No colophon.

54

Catalouge No. T/38

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—133. Size—9.1"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C.19th century. Complete. Condition-some folios are worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot-Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशायनमः। अविघ्नमस्तु, श्रीष्टदेवतायै नमः।

प्रणम्य कालिकायश्चपादपद्मद्वयं ततः।
संलिख्यते मयापूजा भक्तिमार्गप्रदर्शिनी॥

तत्रादौ ब्राह्ममुहूर्त्तं कृत्यमाह। यथा—

ब्राह्ममुहूर्त्तेचोत्थाय पृथिवीं प्रार्थयेत्ततः।
वहिर्गत्वा शुचिर्भूत्वाध्यायेद्गुरुकुलान्कृती॥

End— यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवाः।
इष्टकर्म प्रदानाय पुनरागमनाय च॥
इष्टदेवताः स्वस्थानं गच्छत।

There are a few folios containing Mahāmṛtyuṅjaya Mantra, Prabhu Kopaśānti Yantra and Vāhyabhūtavali, towards the end of the manuscript.

No colophon.

55

Catalogue No. T/40

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—99. Size—7.9"×1.3". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century Complete. Condition—some folios are moth eaten. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

End— ॐ पुण्याह··· एवमस्तु विज्ञापया मुच्यतां गोब्राह्मणेभ्यः शुभं भवतु राज्ञः प्रजानां शान्तिर्भवतु । अमुकसगोत्रेण श्रीमता अमुकदेवशर्मणा मया अमुकवामार्थं नवाह्नपक्षे प्रतिपदारभ्य त्रिदिनपक्षे सप्तमीमारभ्य महानवमीपर्य्यन्तं प्रतिदिनं आगमशास्त्रोक्तेन विधिना कर्त्तव्येऽस्मिन् आरकूटामयजयदुर्गामूर्त्तौ श्रीदक्षिणकालिकामन्त्रेण X X X X X X श्रीदक्षिणकालिकापूजापूर्वकबलिदानादिकर्मसहितशरत्कालविहितआगमशास्त्रोक्तपूजाकर्मयत्कृतं तत्सुकृतमस्तु । अस्मिश्चकर्मणियन्न्यूनं यच्चातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु । अच्छिद्रमस्तु । शुभं भवतु ।

There are some folios containing Kāli Karpūra with a sanskrit commentary towards the end of the manuscript.

कर्पूरं मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधूत्रिःकृतं ये जपन्ति ।
तेषां गद्यानि पद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्त्येव वाचः
स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्वसिद्धि गतानाम् ॥

No colophon.

56

Catalogue No. T/43

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—153. Size 10.9"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—some folios are moth eaten. 5 lines to a page. Findspot—Godamāṇitri, P.S. Khurdha, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः । अविघ्नमस्तु । श्री दक्षिणकालिकायै नमः ।

प्रणम्य कालिकायाश्च पादपद्मद्वयंततः ।
संलिख्यते मयापूजा भक्तिमार्गप्रदर्शिनी ॥
ब्राह्ममुहूर्त्तेचोत्थाय पृथिवीं प्रार्थयेत्ततः ।
वहिर्गत्वा शुचिर्भूत्वाध्यायेद्गुरुकुलं कृती ।
विश्वम्भरेव सुमति विश्वोत्पादन हेतुके ।
ममापराधः क्षन्तव्यः सूनोः कुक्षिगतस्यते ॥

No colophon

There are a few folios containing Pārvatyāgni Samskāra and Kālikā homa towards end of the manuscript.

57

Catalogue No. T/46

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—96. Size—10.9"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—good. 3 to 4 lines to a page. Findspot—Khurdha area, Dt. Puri.

Text is same as in catalogue no. T/40 & 43.

There are two folios containing a stotra of Kālī at the end of the manuscript.

कदा प्रेतारण्ये ज्वलदनलचित्यामधिवसन्
अहंनग्नोमग्नोनिरवधिसुधानन्दजलधौ ।
अयि श्यामे शम्भूप्रणयिनि मयि प्रेमविनते
प्रसीदेति क्रोशन्निमिषमिव नेष्यामि दिवसान् ॥

No colophon.

58

Catalogue No. T/53

दक्षिणकालिकापूजा

Substance Palmleaf. No. of folia - 73. Size—8.8"×1.4½". Character—Oriya. Date of copy—C.19th century. Complete up to Paśuprokshaṇa vidhi. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Khallikote, Dt. Ganjam.

No colophon.

59

Catalogue No. T/55

दक्षिणकालिकापूजा

(According to श्यामारहस्य)

by कविशेखरः

Substance—Palmleaf. No. of folia—65. Size—6.3"×1.3". Character—Oriya. Date of copy C. 18th century. Complete. Condition—good. 5 lines to a page. Findspot—Sanakhemindi, Dt. Ganjam.

Beginning— श्री हरचण्ड्यै नमः ।

यत् प्रोचतुस्तन्त्रविदां वरिष्ठौ
रहस्यकारः कविशेखरश्च ॥
कालीविधौ ततसकलं कलय्य
विलिख्यते केनचिदत्र किंचित् ॥

End— इतिश्री दक्षिणकालिकायाः श्यामारहस्योक्तपूजा समाप्ता ।

Colophon— श्री भगवती पाहिमां, श्रीदुर्गशरणम् ।

There are seven folios containing Chandikā praśnākshara, according to Vārāhī Tantra towards the end of the manuscript.

श्री दुर्गे शरणम्, नमश्चण्डिकायै—

अकारे विजयं दद्याद्धनमैश्वर्य्यमेव च ।
गोलाभं धनलाभं च नानालाभकरं परम् ॥

X X X

इतिश्री वाराहीतन्त्रे चण्डिकाप्रश्नाक्षरं समाप्तम् ।

60

Catalogue No. T/32

दक्षिणकालिका सपर्य्याविधिः

Substance—Palmleaf. No of folia—65. size - 10.5"×1.3". Character — Oriya. Date of copy—C. 20th century. Incomplete. Condition — good. 3 to 5 lines to a page. Findspot - Jagatsinhapur area, Dt. Cuttack.

There are 31 folios containing Chandiśāstra and Devatā pūjā with Oriya translation towards the end of the manuscript.

Translation portion –

एमन्त होइ समपि होइब । यहि बिपत्ति न पड़िब । सबु देवीङ्कि समर्पिदेब । एठारे बाउतीङ्कि पूजिब ।

अन्धारघर बाउति, बलि बाउति, रक्तचन्दन बाउति, हनुमान बाउति, वीरवर बाउती, याड़मल बाउती, क्षेत्रपाल बाउती, ठिआ बाउती, झटा बाउती, डेङ्गा बाउती, ठेजां बाउती, रणघण्ट बाउती, झजांल बाउती, रण बाउती, बण बाउती, यड़ा बाउति, काल बाउती, महाबल बाउती, सिन्धुआ बाउती, केन्दुआ बाउति, रुणुझुणु बाउती, शून्य बाउती, महाशून्य बाउती, विभ्रगिरि बाउती, हेमगिरि बाउती. बेताल बाउती, भोपाल बाउती, चन्द्रकला बाउती, अग्निकार बाउती, झिलिमिलि बाउती, उग्रतारा बाउती, भण्डा बाउती,

भइरव बाउती, चण्डिआ बाउती, बरगणिआ बाउती. बार बाउती, मुण्डा बाउती, चण्ड बाउती, व्याघ्र बाउती, जटिआ बाउती, खुण्टिआ बाउती, पवना बाउती, मेघा बाउती, रघु ाल बाउती, बारभाइ बाउती— एहाङ्कर पूजाविधि - दुध उआचाउल छेनापणा देब । X X X X एहाङ्क पूजा चाउल तिनिगोटि खाइब । एनक आउ देबता देहरे पाश न पारिबे। मनुष्य मरुड़ि रहइ । ए पूजाविधि कले गाई गोरु मईषि मरुड़िकि ए नानाधि भय उत्पात नाश याए।

No colophon.

61

Catalogue No. H/10

दक्षिणकालिका सपर्य्याविधि:

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—142. size—12.4"×1.3". Character—Nāgirī. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—badly worm eaten. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री गणेशाय नमः । श्री दक्षिणकालिकायै नमः ।

प्रणम्य जगदीशानं सर्वविद्याधिपं शिवं ।
लिख्यते कालिकादेव्याः सपर्य्यापद्धतिर्मया ॥

There are some folios containing कालीकवच and कालिकास्तोत्र towards the end of the manuscript.

No colophon.

62

Catalogue No. T/29 (b)

दक्षिणकालिका सहस्रनाम

by आदिनाथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—21. size—12.2"×1.3", Character—

Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Conditon— some folios are moth eaten. 5 lines to a page. Findspot—Gadamanitri, P.S. Khurdha, Dt. Puri.

End— इतिश्री मदादिनाथविरचितायां महाकालसंहितायां कालिकासम्वादे सुन्दरीशक्ति-दानाख्यं मेधासाम्राज्यनामकं कालीस्वरूपं समाप्तम् ।

63

Catalogue No. T/48 (c)

दशमहाविद्या मन्त्रयन्त्रोद्धार:

(According to मन्त्रचिन्तामणि:)

Substance—Palmleaf. No. of folia -4. size—14.1"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition good. 6 lines to a page. Findspot—Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री शङ्कर उवाच—

मन्त्रोद्धारमहंवक्ष्ये शृणुदेवि समाहिता ।
यस्यस्मरण मात्रेण ब्रह्महापि शुचिर्भवेत् ॥

End— इतिश्री मन्त्रचिन्तामणौ सर्वतन्त्रसम्मते दशमहाविद्या मन्त्रयन्त्रोद्धार: समाप्त: ।

No colophon.

64

Catalogue No. Sms/37

दीक्षाविधि:

(according to परमानन्दतन्त्रम्)

Substance—Paper. No. of pages—34. size—12.7"×7.8". Character—Modern Nāgiri. Incomplete. Condition—good. About 42 lines to a page. Findspot—Oriental Manuscripts Library, Madras.

Beginning— श्री गणेशाय नम: । श्री गुरुभ्यो नम: । हरि: ॐ

श्री पार्वत्युवाच—

देवेश सर्वसर्वेश नीलकण्ठ नमोऽस्तुते ।
पूर्णदीक्षाविधिः सम्यग्रहस्यं वक्तु मर्हसि ॥

श्रीशिवः—

अथवक्ष्ये महादेवि पूर्णदीक्षाविधिः शृणु ।
पूर्णदीक्षाकरो लोके दुर्लभा गुरुपुङ्गवः ॥
अहमेव कुलेशानि गुरुरूपं समाश्रितः ।
षोड़शद्वय दीक्षाभिः पुत्रः परमधार्मिकः ॥
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं कुण्डली द्वयमाश्रितः ।
तं शिष्यमानयद्देवि मोक्षयिष्याशु जन्मतः ॥

X X X

पूर्णदीक्षाविधिः सम्यग् मया किञ्चित् प्रकाशिता ।
समासेन वरारोहे: किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्रीमत् परमानन्दतन्त्रे सपा (?) पूर्णदीक्षाक्रमो नाम षोड़शोद्रेकः ।

X X X

श्रीपादुकाभ्यास विधिः कथितं परमेश्वरी ।
कथयामि तवस्नेहात् किं पुनः श्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्री परमानन्दतन्त्रे सपा (?) मन्त्रखण्डे द्वितीयपादे पादुकाभ्यासविधिक्रमो नाम सप्तदशोद्रेकः ।

X X X

इतः परं न वक्तव्यं मन्त्रतन्त्रक्रियादिकम ।
निर्वकल्पसमाधिस्थौ पूर्णोऽहमिति भावयेत ॥

इतिश्री परमानन्दतन्त्रे सपादलक्षग्रन्थे मन्त्रखण्डे द्वितीयपादे श्रीशिवाशिवरहस्ये चरणोपदेशक्रमो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥

End— ततः संदर्शयेन्मुद्रादशकं परमेश्वरी ।
योनिलिङ्गं च सुरभिहेतिमुद्रा चतुष्टयम् ॥

वनमाला महामुद्रा ज्ञानमुद्रा इतिक्रमात् ।
यथाशक्ति जपेन्मन्मू मन्त्रं श्री गुरुपादुकाम् ।
मूर्द्धि नसंचिन्तयेद्देवीं श्रीगुरुं शिवरूपिणम् ।

मनुः— हसौं हसौं—श्री परा परा प्रासादाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यांनमः । श्रीपरदेवतार्पण मस्तु ॥

No colophon.

65

Catalogue No. T/5

दुर्गायजनदीपिका

by जगन्नाथ आचार्य्य

Substance—Palmleaf. No. of folia—130. Size—15.4"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—8th Amka year of the Gajapati King Divyasimha Deva I. Name of scribe—Magun rāyaguru Mahāpātra. Complete. Condition good 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

दक्षिणामूर्त्तिनादेन ततो विष्णुश्चमूर्त्तिना ।
शिवेन विन्दुनामूर्त्ति दुर्गायामुक्तये स्तुवः । (?)
देशेशे उत्कले चास्ते क्षेत्रेशे पुरुषोत्तमे ।
तीर्थेशस्योदधेस्तीरे देवेशो जगदीश्वरः ।
तत्रास्ते देवदेवेशी कर्वीनां जननीपुरा ।
तस्याः पुत्रेनरेशेषोर्वन्द्यो धर्माद्यवर्द्धनः (?) ॥
वत्सगोत्रे समुत्पन्नो भवान्या भृत्यवंशजः ।
तत्राचार्य्यो जगन्नाथ आरत्ते यजनावलिम् ॥
पूजावाक्यं गुरुकल्पं वर्णनं वाचनं तथा ।
दुर्गापूजाङ्ग देवांश्च दुर्गामन्ताधिकारिणः ॥
प्रणवस्य विधिं चैव मन्त्राणां च निरूपणं ॥

X X X

आगमेभ्यः पुराणेभ्यः श्रुतिभ्यः स्मृतिमार्गतः ।
कथ्यते सार मुद्धृत्य दुर्गायजनदीपिका ॥

X X X

इतिश्री दुर्गायजनदीपिकायां प्रथमः पटलः ।

× × ×

End— इतिश्री दुर्गायजनदीपिकायां सप्तविंशतिः पटलः समाप्तः ।
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

Colophon— ग्रन्थकर्त्तास्वयं व्यासो लेखकस्तु विनायकः ।
तयोर्विचलिता बुद्धिर्मनुष्याणां च का कथा ॥

मागुणिराएगुरु महापात्रेण लिखितमिदं पुस्तकम् । दिव्यसिंह देवङ्क ८ अङ्के इदं पुस्तकम् । श्री श्री ।

The following authorities are quoted in the Durgāyajana Dipikā.

1—अश्वारूढकल्प, 2—आपदुद्धारकल्प, 3—आथर्वणश्रुति, 4—आदित्यपुराण, 5—ईशानसंहिता, 6—कल्पप्रकाश, 7—कालिकापुराण, 8—कालीतन्त्र 9—कालोत्तर, 10—कुक्कुटकल्प, 11—कुमारीकल्प, 12—कूर्मपुराण, 13—कृत्यकल्पतरु, 14—गणपतिकल्प, 15—गणेश्वरपद्धति, 16—गृह्यसूत्र, 17—तत्पुरुषसिद्धान्त, 18—तत्त्वसागर, 19—तत्त्वसारसंहिता, 20—तन्त्ररत्नाकर, 21—त्रिदशडामरतन्त्र 22—त्रैलोक्यविजयकल्प, 23—दुर्गाकल्प 24—दुर्गातमोहनकल्प, 25—देवीपुराण, 26—नयोत्तर, 27—नारदस्मृति, 28 नारदीयपञ्चरात्र, 29—नारायणसर्वज्ञ, 30—पञ्चमीकल्प, 31—पद्मपुराण, 32—पद्मावतीकल्प, 33—पद्मोत्तर, 34—परमेश्वरीकल्प, 35—पराशरस्मृति, 36-पारायणतन्त्र, 37—पुरश्चरणदीपिका, 38—पूजारत्न, 39—प्रपञ्चसारतन्त्र, 40—प्रासाददीपिका, 41—प्रासादरत्नाकर, 42—वराहपुराण, 43—ब्रह्मपुराण, 44—ब्रह्मसंहिता, 45—बाधुल, 46-भगवतीपुराण, 47- भविष्योत्तर, 48- भैरवप्रस्थान, 49—भैरवीतन्त्र, 50—महाभारत, 51—मन्त्रदेवसंहिता, 52—मन्त्रमुक्तावली, 53—मन्त्रवरसंहिता, 54—मन्त्ररत्नाकर, 55—मन्त्रसंहिता, 56—मार्कण्डेय पुराण, 57—मालिनीविजयतन्त्र, 58—माहेश्वरतन्त्र, 59—योगीश्वर, 60—योगीयाज्ञवल्क्य, 61—रामार्च्चनचन्द्रिका, 62—रामार्च्चनदीपिका,

63—रुद्रयामल, 64 - लिङ्गपुराण, 65—वामकेश्वर, 66 वारणतन्त्र 67 वाराहीतन्त्र, 68 - विमलातन्त्र, 69- विष्णुधर्मोत्तर 70 शवरीकल्प, 71— शाम्भवीतन्त्र, 72—शाम्भवीय, 73—शारदातन्त्र, 74- शारदातीलक, 75 शिवसमुच्चय, 76—सुदर्शन-रात्र, 77—शैवसिद्धान्त, 78—श्रीपञ्चरात्र, 79- श्रीमद्भागवत, 80 सनत्कुमारसंहिता 81—सम्वत्सरप्रदीप, 82—सम्मोहनकल्प, 83—सुप्रभेदतन्त्र, 84- सौरामृत, 85—सौम्यकल्प, 86—स्कन्धपुराण, 87—स्कन्धावतार, 88- क्षपणकदुर्गाकल्प 89—ज्ञानार्णवतन्त्र Etc.

Topics of the work :—

1—प्रणवविधिः, 2—मन्त्रनिरूपणं, 3—कर्मभेदे मन्त्रभेदः, 4—दीक्षालक्षणं, 5—आसननिरूपणं, 6—जपमालानिरूपणं, 7—करणनिरूपणं, 8—कुण्डलक्षणं, 9—दभलक्षणं, 10—शुचिशुचयोर्लक्षणं, 11—अङ्गुलिमाणं, 12—आज्यस्थालीप्रमाणं, 13—चरुस्थालीप्रमाणं, 14—नानाविधपात्रलक्षणं, 15 मासादिन फल 16—मृन्मय कलशलक्षणं, 17—आसादनं, 18—कूर्चानांविष्टराणांच विवरणं 19—वर्तनकमण्डलु विवरणं, 20—सर्वतोभद्रमण्डलविवरणं, 21—अग्निसंस्कारः, 22—शक्त्याकारलक्षणं, 23—होमद्रव्यप्रमाणं, 24—पूर्णाहूतिविधिः, 25—तर्पणविधि. 26—देवतादोषकथन, 27—पूजामार्गक्रमं, 28—चतुःकालार्चन, 29—पशूनांदोषगुणकथनं, 30 - पञ्चोपचार-पूजा, 31—महाष्टमीप्रकारं, 32—महास्नानविधिः, 33—त्रिविधपुष्पलक्षणं, 34—देव्या-मर्दनविधिः, 35—मूर्त्तिविवरणं, 36—राष्ट्रशान्तिः, 37—प्रायश्चित्तविधिः, 38—सहस्र-कुम्भाभिषेकविधिः, 39—मातृकान्यासः, 40—सोढान्यास, 41—गणेशपूजा, 42- सूर्य्यपूजा, 43—उत्पातशान्तिकथनं, 44—आगमानां प्रमाण, 45—नानायन्त्रविधिः, 46—दुर्गासेवाफलं, 47—दुर्गायाः प्रीतिदानस्यफलं, 48- नानाविध अङ्गपूजाविवरणम्।

66

Catalogue No. T/51

दुर्गोत्सवचन्द्रिका

by भारतीभूषण वर्द्धनाचार्य्य महापात्र

Substance—Palmleaf. No. of folia- 139. Size—14.4" 1.2". Character- Oriya. Date of scribe—18th century. Name of scribe- Śrī Bhima.

Complete Condition some folios are totally broken. 3 to 4 lines to a page. Findspot – Jagatsimhapur area, Dt. Cuttack.

The author Bhārati Bhushan Varddhanāchārya Mahāpātra dedicated the work in the name of his patron the, Gajapati King Rāmachandra Deva I, who ruled Khurdha from 1568 1607 A.D.

यावज्ज्या वन्धभूयं विदधति मधुराः कार्मुक शम्बरारे
र्यावत्तद्वैरिकण्ठे सभवतु भगवान् भूषणं पन्नगेशः ॥
यावत्तत्तल्पशायी विहरति रमया स्वैरमायानुगूढ़-
स्तावच्छ्रीरामचन्द्रक्षितिपतिरचिता निर्मितः प्रीतिदास्ताम् ॥

End— इति श्री भारतीभूषण वर्द्धनाचार्य्य महापात्र विरचिता दुर्गोत्सव चन्द्रिका संपूर्णा।

The author Varddhana Mahāpātra had written the following verses describing the glory of his patron, but unfortunately the particular folios are totally moth eaten, so the complete verses cannot be restored.

उद्ग्रीवः सततं विभावसुरसौ भास्वान् भृशलीयते।
नित्यं वारिधिवारिविद्युतिजगज्ज्योत्स्नैवसोत्कम्पतां ॥
श्रीरामक्षितिपप्रताप म.....

X X X

.....वसनयुगलं पीतमतुलम् ॥

X X X

शीतांशुभुषां X X वयम.पशितैर्भूषण कुलै
विराजितं श्वेतं पवनजवमारुह्य नृपतिः ।
गृहीत्वाशीर्वादं द्विजवरमुखाम्भोजगलितं ।
पुरोदुर्गां कृत्वा व्रजतु मुदिताचार्य्यसहितः ॥
विजयिनि निज शस्त्रे चिन्तयित्वा.....
नृपतिरिह दशम्यां प्रेक्ष्यदुष्टारिसेनां ।
.....किञ्चिद्विदुरं
रचयतु भवरङ्गैः सङ्गतो जैत्रयात्राम् ॥

नागानां वरबृंहितै रुपहितैरुल्लासितै भैषितै
रश्वानां पटुपत्तिसट्ट हसितै.....
... ...
.....धरणीं वेलासु लेलीयते ।
निराजनामन्त्रविधाय देव्या-
विलोकयन् लक्ष्यभिदः पदातीन् ।

X X X

Colophon— अव्यक्ताक्षरदोषतः खलु मया.....
.....मथवा क्रोधान्धबुद्धिभ्रमात् ।
मोहाद्वा यदशुद्धमत्र लिखितं.....
... .हितज्ञै र्बुधैः ॥
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

.....वीरकेशरीभूपस्य.....तुलागतरवौ क्षितिजस्यवासरे श्रीभीम.....
चंनकर्मपाठ मालेखिपुस्तक..... ।

There are 50 folios containing Kapila Samhitā upto 21st chapter at the beginning of the manuscript.

इतिश्री कपिलसंहितायां नीलकण्ठनन्दिकेश्वरसम्वादे एकविंशोऽध्यायः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

67

Catalogue No. T.81

दुर्गोत्सवचन्द्रिका

by—वर्द्धनमहापात्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—158 size 12.2"×1 2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Sakshigopāl, Dt. Puri.

Beginning — श्री दुर्गायै नमः ।

अम्भोदान् चिकुरच्छलेन तपनं सिन्दूरविन्दु ... ... ।
पीयूषद्युतिविम्बमाननमिषा ज्योत्स्नां स्मितच्छद्मना ।

शैलेन्द्र कुचकैतवावलिकुलव्याजाद्वहन्त्यैनदी (?)
रर्द्धाङ्गाय शिवस्य विश्वनिधये स्थूलप्रकृत्यै नमः ।

सकलागमतत्त्वसारवेत्ता
स कलावानिव सर्वतोऽनवद्यः ।
तनुते भुविरामचन्द्रदेव
श्चरणाम्भोरुहभक्तिरम्बिकायाः ॥

यस्योदेतियशोविधुस्त्रिजगतामानन्दमापादयन्
तारामिः परिपन्थिसार्थरमणीगण्डैमहापाण्डुरः ।
का चिन्ता लवणाऽम्बुधौ वलयता मप्यागतेऽस्याभितः
क्षीराम्भोधिरखण्डमण्डल परिवेशाय नेशायते ॥
कर्णेः कर्णेपथं न याति सततं वैरोचनी रोचते ।
मोघाः कामदुघा वभूवुरनघा नीचो दधीचिः स्वयम् ॥
अल्पः कल्पतरुः परेषु गणना कानाम कामस्पृशां
यस्मिन् दानविधानमानवसमाधानव्रते जाग्रति ॥

वदान्यमनुगुञ्जने जनो य मनुशंसति ।
अयं सूकायते (?) नूनं वदान्य मनुगच्छति ॥

श्वेतद्वीपं शिशिर शिखरी लक्ष्यते पक्षयुग्मं
सन्ध्ये गादौ ? वहति कनकक्ष्माधरश्चञ्चु शोभाम् ।
तारास्तारापतिरपितनूद्भूतपत्रानुकारा
यस्याः स्वैरं स्फुरति भुवने यस्य सा कीर्त्तिहंसी ॥

भीतेव प्रथमं विरोधिवसुधा यद् वाजिराजिच्छुर-
क्षोभोद्भूतरजश्छलेन रिपुभिःसाकं द्युलोकं गता ।
श्रुत्वा यस्यधरानुपालनयशः स्वर्वारनारीगणैः
गीतं निर्भयता मुपागतवती भूयः परावर्त्तते ॥

स निशम्यनिखिलागमोदितं
विबुधैर्विचिन्त्य बहुधाऽनुमोदितः ।
शरदुत्सवं गिरिभुवः समर्च्चन—
क्रमचन्द्रिकां दिशति सम्मतां सताम् ॥

× × ×

संग्रामे तनुते जयं भयमपि व्याधादितो वारयेद्
दत्ते कामकला विलास कुतुकं हन्त्याशु चिन्तापदम ।
कीर्त्तिं नर्त्तयते जगत्यविरतं किम्बा बहु ब्रूमहे
लोकानामिह कामकल्पलतिकाविद्येयमुद्योतते ॥

X X X

ईशानसंहितादौ यदीक्षितं कालिका पुराणादौ ।
यदवोधि रुद्रयामलसम्मोहनपरमुखोक्तेषु ॥
यदलम्बित तत्त्वसागरसारस्वततन्त्रमन्त्रवरवाक्यैः
अन्यासुसंहितासुच तन्त्रेष्वथवा पुराणेषु ॥
तत्तद्विषय निबन्धे यदिदं विषये विलोकितं किमपि ।
दुर्गायाः शरदुत्सवे विषये तत्तन्निबध्नीमः ॥

No colophon.

68

Catalogue No. T/74

देवीपूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—167. size—10.4″ × 1.2″. Character—Oriya. Date of scribe— 11th Aṁka year of Rāmachandra Deva III, the king of Puri on 1935. Name of scribe— Govindachandra Ratha of Sarakiyā Vīrakeśarīpur. Complete. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्रीष्टदेवत यै नमः ।

नवदुर्गा प्रमाणम्— वनदुर्गा महादुर्गा गिरिदुर्गा ततः परं ।
जयदुर्गा शूलिदुर्गा दुर्गा महिषमर्द्दिनी ॥
शक्तिदुर्गा घोरदुर्गा चण्डदुर्गाततः क्रमात् ।
इति सम्मोहनतन्त्र दुर्गाभेदा नवोदिताः ॥

वनदुर्गाध्यानम्— ध्यायत् सुवर्णवर्णाभां त्रिनेत्रां चारुहासिनीं ।
सर्वलक्षणसम्पन्ना मर्द्धेन्दुकृतशेखराम् ॥

चतुर्भुजां शङ्खचक्रधरां बालास्वरूपिणीं
उद्यत् त्रिशूलनिर्भिन्नां महिषासिंहवाहिनीम् ॥
मुक्तादामलसत्कण्ठां मुनिभिः स्तुतिपाठकैः ।
सिद्धैर्देवगणैर्जुष्टां कुमारीभिश्च सेवितां
सर्वकामप्रदां दुर्गां वरदां भक्तवत्सलाम् ॥

End— त्वदीयबलतो मयानगणितं महेन्द्रादिकं ।
सुरारिचरणार्च्चनं मनसि नैव सम्भावितम् ॥
न तीर्थगणनाकृता व्रतकथाऽपि दूरीकृता
जगज्जननि केवलं मम बलं तवानुग्रहः ॥

विधेरज्ञानेन द्रविण विरहे सालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्याच्युतिरभूत् !
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि पतितोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता नभवति ॥
मातोग्रतारा च पितोग्रतारा
स्वउग्रतारा सुहृदोग्रतारा ।
प्रत्युग्रतारा त्विहचोग्रतारा
व्रजामि यं यं तत उग्रतारा ॥

Colophon— सन १६३५ मसिहा रामचन्द्रदेव महाराजाङ्क अ ११ ङ्करे गोविन्दचन्द्र रथे ए पुस्तक लेखिले । एहा मागकरि रखिले वंशरे केहि रहिबे नाहिँ । सरकिया वीरकेशरीपुर ।

69

Catalogue No. T 24

देवीमाहात्म्यम्

and other stotras.

Substance – Palmleaf. No. of folia—86. Size—12.″3×1.3″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Condition— badly worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot— Baripada Museum, Dt. Mayurbhanja.

No colophon.

70

Catalogue No. T/29 (c)

निरुत्तरतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—11. Size—12.2"×1.3". Character—Oriya Date of copy— C. 18th century. Incomplete. 3 to 5 lines to a page. Condition—some folios are moth eaten. Findspot—Gadamāṇitri, P.S. Khurda. Dt. Puri.

Beginning— श्रीमदिष्टदेवतायै नमः

देव्युवाच— सिद्धविद्या पुराप्रोक्ता तन्त्रमन्त्रादिकानिच ।
नानाभावप्रबोधेन संशयोजायते प्रभो !
भावभेदेन कथय लोकनिस्तारकारक !
सर्वेषां तन्त्रमन्त्रश्च सिद्धान्तं विष्णुसम्मतम् ॥

(सर्वेषां शरणं तन्त्रसिद्धान्तं विष्णुसम्मतम्)
(in the published book)

आसामाराधना केन भावेन परिजायते
आसां वा प्रकृतिकापि तस्या वा कीदृशीक्रिया ।
तत्प्रकाशय शीघ्रं मे येन यामि निरुत्तरम् ॥

श्रीशिव उवाच—

सर्वार्थसिद्धिविद्यानां प्रकृतिर्दक्षिणा प्रिये ।
(सर्वासां in the published book)
दिव्यैर्वीरैश्च देवेशि कालीकुलं विचिन्तयेत् ।
(दिव्यभावैश्च वीरैश्च in the published book)

इतिश्री निरुत्तरतन्त्रे (पार्वतीश्वर सम्वादे) प्रथमः पटलः ।

देव देव महादेव सृष्टिस्थितिलयात्मक !
कीदृशीदक्षिणाकाली तस्या मन्त्रश्च कीदृशः ॥

X X X

The manuscript contains only four Patalas out of fifteen patalas which are found in the printed book edited by Umācharana Tarkaratna and Tārāpada Nyāyaratna and published by Niradā Charana Vandhopādhyāya in Bengali character.

End— पुरश्चरणकाले च कुलं न स्मरते यदि ।
शक्तीनां च कुमाराणां द्विजानां कुलपालिनाम् ।
तोषणं कुलद्रव्येण भोजयेच्च पुनः पुनः ।
सम्प्रदायविदो विद्यां दक्षिणा गुरवे ददेत (?)
(सम्प्रदायविदे विद्वान् दद्यात्तु गुरुदक्षिणां)
(in the printed book)
वस्त्रालङ्कारभूषाद्यैर्भूषयेत् कुलगुरुं प्रिये ।
तत्सुतं तत्सुतांवापि तत्पत्नीं वा कुलेश्वरि !
पूजयेत् परया भक्त्या मन्त्रसिद्धिर्भवेद् यतः ॥
इतिश्री निरुत्तरतन्त्रे चतुर्थः पटलः ॥

No colophon.

71

Catalogue No. T/35 (c)

निरुत्तरतन्त्रम्

Substance - Palmleaf. No. of folia—8. Size—18"×1.4" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—some folios are worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

Text is same as in Catalogue No. T/29(c).

No colophon.

72

Catalogue No. T/57 (b)

निरुत्तरतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—27. Size—14.8"×1.4". Character—

Oriya. Date of copy—C. 11th century. 5 lines to a page. Incomplete. Condition—badly worm eaten. Findspot—Gaḍamānitri, P.S. Khurdha, Dt. Puri.

The text is same as in the printed book edited by Umācharana Tarkaratna & Tārāpada Nyāyaratna and published by Nīradā Charan Bandhopādhyāya, 14 Grey Street, Hatibagan, Calcutta.

No colophon.

73

Catalogue No. T/44 (d)

नीलसूक्तम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—4. Size—14.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 19th century. 4 lines to a page. Complete. Condition—good. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री नमः शिवाय ।

कैलासशिखरे रम्ये गौरीपृच्छति शङ्करं ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा वचनं चेदमब्रवीत् ॥

End— इतिश्री यजुर्वेदविधाने नीलसूक्तप्रयोगः ।

No colophon.

74

Catalogue No. Sms/38

पाशुपततन्त्रम्

Substance—Paper. No. of pages—148. Size—12.7"×7.5". Character—Nāgarī, Incomplete. Some pages are lost at the beginning of the manuscript. 21 lines to a page. Findspot—Oriental Manuscripts Library, Madras.

Beginning— पाशुपततन्त्रम् ॥

X X X X
X X नारदादयः ।

उत्पादितेषु तन्त्रेषु भूयो देवमुखाम्बुजात् ॥
सर्वतन्त्रार्थसयुक्तं चतुष्पाद सम ... त ।
तन्त्रं पाशुपतं नाम क्रियाज्ञममभून्मुने ॥
ततिदानीं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व वदतस्तुतम् ॥
सर्वार्था...न तन्यन्ते त्रायन्ते च भयाज्जनाः ॥

X X X

अत स्त्ववेदिनानैव कारयेत् कर्म दैविकम् ।
सिद्धान्तैश्चोदितं ह्येतन्मन्त्ररूपेण भावयेत् ॥

इतिश्री पाशुपते द्वितीयः पटलः ॥

X X X

मन्त्रैर्वर्णैः पदैर्बीजैरङ्गान्य...दितेनयेत् ॥

इतिश्री पाशुपते तृतीयः पटलः ॥

X X X

एवं यः पूजयेद्देवं भक्त्या च परमेश्वरं ।
इहकामानवाप्यान्ते याति शम्भोः परं पदम् ॥

इतिश्री पाशुपते चतुर्थः पटलः ॥
पूजाकाण्डं समाप्तम् ।

X X X

भक्तयेन्नैव निर्माल्यं नित्यमग्नौतु होमयेत् ।
न बुद्धिभेदं जनयेद् भक्तानां भगवत्पदे ॥

इतिश्री पाशुपते पञ्चमः पटलः ।
आचार्य्यकाण्डं समाप्तम ।

X X X

कृत्वायागं निर्गच्छेच्छ्रीलाभार्थं प्रागुदङ्मुखाः ॥

इतिश्री पाशुपते षष्ठः पटलः ।

X X X

पुष्करस्य त्रिभागेन दण्डं च पशुपुच्छवत् ।
ऋषभं दण्डमूलेऽयः पद्मं वा स्रुगितीरिता ॥
इतिश्री पाशुपते लक्षणपटलः सप्तमः ।

X X X

यवशालि निशाचूर्णंस्वर्णगोधूमरुद्गयुक् ।
चूर्णमुद्वर्त्तने प्रोक्तं गन्धमष्टाङ्गमुच्यते ।
इतिश्री पाशुपतेऽष्टमः पटलः ॥

X X X

स्थभस्य पृष्ठे विन्यस्य फलक परिदेशिकः ।
मौहूर्त्तिको पादिष्टेतुमुहूर्त्ते स्थापयेच्छिवम ॥
इतिश्री पाशुपते नवमः पटलः ।

X X X

मूले तु द्वादशाब्दं तु विभोः सङ्कोचमिच्छति ।
तदूर्द्ध्वं सर्वगं ध्यायेदशक्तः कर्त्तुमञ्जसा ॥
इतिश्री पाशुपते दशमः पटलः ।

× × ×

दक्षिणागुरवे कार्य्या मूर्त्तिपेभ्यः (?) पृथक् पृथक् ।
आचण्डालान्त मन्नाद्यं सार्वजन्यं च कारयेत ॥
इतिश्री पाशुपते एकादशः पटलः

X X X

गृहं प्रदक्षिणी कृत्य मूलं विम्बे नियोजयेत ।
तद्दिने कलशैः स्नाप्य संपूज्य विकिरेद्बलिम् ॥
इतिश्री पाशुपते द्वादशः पटलः ॥

× × ×

एवं यः कारयेत् पूजां भक्त्या देवस्य शूलिनः ।
सोऽपि रुद्रपदं प्राप्य मोदते रुद्रवच्चिरम ॥
इतिश्री पाशुपते नन्दिप्रोक्ते त्रयोदशः पटलः ।

X X X

End— गुप्तं हि स्थापयेत् सर्वमगुप्तं नाशयेत्तरं ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोप्यमेतत् सदान्नृणाम् ॥

इतिश्री पाशुपते नन्दिप्रोक्ते योगकाण्डावसानिके चतुर्दशमः पटलः ॥

Colophon— श्री····· म्बुकेचैव·····चोदितम् ॥
हरिःओम्

75

Catalogue No. T.31

पुरश्चरणदीपिका

by चन्द्रशेखर

Substance – Palmleaf. No. of folia – 111. Size – 11.6″×1.4″. Character – Oriya Date of copy – C. 18th century. Complete upto 4th Prakāśa. Condition— Some folios are worm eaten. 3 to 4 lines to a page. Findspot—Bhawanipātanā, Dt. Kalāhāndi.

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

गुरुभ्यो नमः ।

इन्दिवरनीभं श्यामं पुण्डरीकदलेक्षणं ।
गोपीनां हृदयानन्दं तं वन्दे यदुनन्दनम् ॥
श्रीचन्द्रशेखरो विप्रः संप्रदाय क्रमान्वितः ।
नानागुरुमतं ज्ञात्वा सद्गुरुणां मत शुभम् ॥
तनोतु सर्वमन्त्रिणां पुरश्चरणदीपिका ।
सर्वतन्त्रानुसारेण मन्त्रिणांहितकाम्यया ॥

अथ पुरश्चरणलक्षणम्—

X X X

संपूर्णायां प्रतिज्ञायां तर्पणानि तथाचरेत् ।
अथ पुरश्चरणदीपिकायां प्रथमः प्रकाशः ॥

X X X

जपेदयुतसंख्यं हि सर्वकामार्थसिद्धये ।
जपेदेकाकी विजने केवलं तिमिरालये ॥

इतिश्री पुरश्चरणदीपिकायां द्वितीयः प्रकाशः ।

X X X

महाविद्या विषयेतु जपं लक्षप्रमाणकं ।
सर्वत्र सर्वतन्त्रेषु कथितं पद्मयोनिना ॥

इतिश्री पुरश्चरणदीपिकायां तृतीयः प्रकाशः ॥

X X X

इतिश्री पुरश्चरणदीपिकायां चतुर्थः प्रकाशः ॥

The following authorities are quoted in the Puraścharaṇa Dīpikā.

1—अगस्त्यसंहिता. 2—आगमकल्पद्रुम, 3—आथर्वणश्रुति, 4—एकवीरातन्त्र, 5—कालिकापुराण, 6—कालिकाकुलतत्त्वसार, 7—कालीतन्त्र, 8—कुलचूड़ामणि, 9—कुलसार, 10—कुलार्णव, 11—क्रमदीपिका, 12—गौतमीय, 13—तन्त्रचूड़ामणि, 14—ताराकल्प, 15—नारदीय, 16—नीलतन्त्र, 17—पुरश्चरणदीपिका, 18—वायव्य-संहिता, 19—वृहन्नारदीय, 20—ब्रह्मपुराण, 21—ब्रह्मवैवर्भपुराण. 22—भगवद्गीता, 23—भावचूड़ामणि, 24—मन्त्रतन्त्रप्रकाश, 25—मन्त्रदेवप्रकाशिका, 26—मुण्डमालातन्त्र, 27—योगिनीहृदय, 28—रामार्च्चनचन्द्रिका, 29—वाराहीतन्त्र, 30—विशुद्धेश्वरतन्त्र, 31—विश्वसारतन्त्र, 32—वैशम्पायनसंहिता, 33—शक्तियामल, 34—शारदातीलक, 35—श्रीक्रम, 36—सनतकुमारतन्त्र, 37—सारसमुच्चय, 38—ज्ञानार्णवतन्त्र Etc.

Topics पुरश्चरणलक्षणं, पुरश्चरणस्थाननिरूपणं, शक्तिमन्त्रविशेषः, भक्ष्यनिरूपणं, आचारनिरूपणं, जपादौकालनिरूपणं, शय्यानिरूपणं, स्नाननिरूपणं, पुरश्चरण-काले द्वादशधर्मानाह, गुरुनिरूपणं, शिष्यनिरूपणं, जपविधिनिरूपणं, तर्पण-विचारः, जपमालाविधानं, आसननियमः, पूजाप्रकरणं, वलिप्रयोगः, जपनियमः, नैमित्तिकपुरश्चरणं, ग्रहणपुरश्चरणं, साधनविधिः, श्मशाने वीरसाधनविधिः etc.

No colophon.

76

Catalogue No. H/9

प्रत्यङ्गिरसकल्पः

by मान्त्रिकप्रवर भूसुर

Substance –Palmleaf. No. of folia –192. Size—16″×1.5″. Character—Devanāgarī. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—badly worm eaten. 5 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः । अविघ्नमस्तु ।

देवानामादिसम्भूतं कर्त्तारं जगत गुरुं ।
ब्रह्माणं पितरं प्राह पुत्रोऽथवा कदाचन (?)
चतुर्थवेदमाहात्म्यं ब्रूहि कौतुहलं मम ।
ज्येष्ठपुत्रवचःश्रुत्वा सर्वलोकपितामहः ।

X X X

वेदानां सारभूतोऽयं चतुर्थवेद उच्यते ।
अश्वत्थसर्ववृक्षाणां मनुष्याणां नराधिपः ।
तथाय वेदराजस्यात् सर्वलोकोपकारकः ॥
नानाविधानि कर्माणि शुभानि कल्पितानि च ।
शान्तिकं पौष्टिकं चैव वश्यं स्तम्भनमोहने ॥
द्वेषणोच्चाटनेचैव मारणकर्षणे तथा ।
विद्रावणमितीमानि दशकर्माण्यथर्वणाम् ॥

X X X

तदासर्वमिदं प्राज्ञं सदैव परिपूजयेत् ।
यस्य भूमिपतेर्देशे अथर्वा निवसन्त्यसौ ॥
वर्द्धते तस्य राष्ट्रं च सर्वतो निरुपद्रवम् ।

इति अथर्ववेदमाहात्म्यम् ॥

X X X

इत्याङ्गिरसकल्पे कार्य्याकार्य्यविवेकः ।

पिप्पलाद उवाच—

अथकाम यदासिद्धयै आरब्धं नैवसिद्ध्यति ।
आरब्धं च यदासिद्ध्ये न्नैवकाम्यं च सिद्ध्यति ॥

X X X

इत्याङ्गिरसकल्पे कर्मविरोधः ॥
अथ प्रवक्ष्यतेऽस्माभिः पराविद्यानिवारणम् ।
परकर्मफलस्तम्भः क्रियते येन कर्मणा ॥

X X X

इत्याङ्गिरसे शत्रुवशम् ।
इत्याङ्गिरसे शत्रुवशविधानम् ॥
अथातो वशचिह्नानि प्रवक्ष्यामि महामुने ।
दृष्ट्वा प्रसन्नोभवति वाक्यं गृह्णाति चादरात् ॥

X X X

इत्याङ्गिरसे वशचिह्नानि ॥
पप्रच्छाङ्गिरसं प्राज्ञं पिप्पलादः कृताञ्जलिः ।
ब्रूहि मे मुनिशार्दूल क्षिप्रमाकर्षणं रिपोः ॥

X X X

इत्याङ्गिरसे सपत्न्याकर्षणम् ॥
इत्याङ्गिरसे शत्रुस्तम्भनम् ।

X X X

इत्याङ्गिरसे शत्रुभयोत्पादनम् ॥ इत्याङ्गिरसे मोहनं, इत्याङ्गिरसे विद्वेषणं, इत्याङ्गिरसे शत्रूच्चाटनं, इत्याङ्गिरसे मन्त्रार्थः, इत्याङ्गिरसे विद्रावणं, इत्याङ्गिरसे मन्त्रभेदः, इत्याङ्गिरसे आसुरीमन्त्रोद्धारः, इत्याङ्गिरसे कुण्डलक्षणं, इत्याङ्गिरसे इष्टकर्मध्यानविशेषः । इत्याङ्गिरसे प्रतिकृतिविधिः, X X X इत्याङ्गिरसे जपः, इत्याङ्गिरसे आत्मपूजा, इत्याङ्गिरसे आसुरीपूजा, इत्याङ्गिरसे आसुरीमाहात्म्यं, इत्याङ्गिरसे ब्राह्मणसंस्था, इत्याङ्गिरसे आसुरीध्यानं, इति नृसिंहवश्यः, नृसिंहपूजा, होमसामान्यविधिः, अञ्जनषट्कं, होमकालनिर्णयः, मुखनिर्णयः, X X कुण्डविधिः, आसुरीस्वरूपकथनं आसुरीयन्त्रं, कर्मसिद्धिर्नाम

आसुरी यन्त्र, शत्रुवशः, स्तम्भनं इत्याङ्गिरसे आसुरीकल्पं समाप्तम ॥ परविद्यानिवारणं कालिकामन्त्रविधानं, धनुर्मन्त्रणविधिः, शरमन्त्रविधिः, महाकालबलिविधिः, प्राणप्रतिष्ठा, इतियमदग्निनोक्तः **बृहद्राक्षसकल्पः** (?), इति प्रपन्चसारे त्रयोत्रिंशः पटलः इति शारदातीलके लवणमन्त्रविधानं, लवणस्वरूपविधानं, चिटिमन्त्रः (?), लवणभाष्यं, प्रतिकृतिछन्दः, इति कर्मसमुच्चये षट्कर्माध्याये लवणमन्त्रविधानं, दूतीप्रेरणं, इत्याङ्गिरसकल्पे लवणमन्त्रविधानं, कर्मसिद्धिप्रकारः, कर्मवन्नप्रतिकारः, इत्याङ्गिरसे चिटिमन्त्रकल्पः, कुण्डेऽग्निस्थापनविधिः, सर्वतोभद्रमण्डलविधिः, इतिश्री ऋग्वधाने जातवेदकल्पं समाप्तं, ग्रहणविधिः, विज्ञानभैरवविधिः, कृत्याप्रतिसारयुक्तिः, कृत्याचिह्नानि, अमर्त्यमन्त्रविधः (?), X X X सर्वकामभैरवविधिः, रक्तारिघातविधिः, एकाक्षरभैरवविधिः, त्रिपुरभैरवविधिः, महाकृत्याहोमविधि, महाकृत्याविधानं, मृत्युलाङ्गलविधिः, इति कर्मसमुच्चये षट्कर्माध्याये **भूधरकृतासुरी दीपिका**, कर्मसमुच्चये अरिजपः, महाबीजप्रशंसा, भद्रकाली मन्त्रविधिः, इति प्रत्यङ्गिरसकल्पः समाप्तः, इति प्रत्यङ्गिरसकल्पस्य भाष्यं समाप्तं, इति चण्डोग्रशूलपाणिवक्त्रविनिर्गत प्रत्यङ्गिरासिद्धिमन्त्रोद्धारस्तोत्रं समाप्तं । इति प्रत्यङ्गिराहृदये दशयन्त्रं समाप्तं, इति ब्रह्मसहितायां वशिष्ठभागवसम्वादे, प्रत्यङ्गिरासङ्कल्पं समाप्तं, प्रत्यङ्गिराहृदये विद्वेषणयन्त्रं, प्रत्यङ्गिराहृदये उच्चाटनयन्त्रं, प्रत्यङ्गिराहृदये षट्कर्मयन्त्रं, प्रत्यङ्गिराहृदये पूजायन्त्रं, उत्तरफाल्गुनियन्त्रं, X X निऋतियन्त्रं, X X X उत्तराभाद्रपदलक्षणं, प्रत्यङ्गिराहृदये सप्तविंशतिऋक्षाणां यन्त्रं, कौवेरयन्त्रं इति ब्रह्मसंहितायां प्रत्यङ्गिरसहृदये प्रतिसरयन्त्रंसमाप्तं, इति प्रत्यङ्गिराहृदये अथवणवेदोक्ततृतीयखण्डे माध्यन्दिनवरभेदे एकचत्वारिंश ऋचालक्षणं समाप्तं, ब्रह्मसंहितायां दीक्षाविधिः, X X X ब्रह्मसंहितायां ऋषिछन्दोदेवताविशेषः, ब्रह्मसंहितायां यन्त्रमुद्रालक्षणं, ब्रह्मसंहितायां विद्वेषणविशेषः, ब्रह्मसहितायां आसनशुद्ध्यादयः, नक्षत्राणां विपक्षाः समाप्ताः, इति मन्त्रदेवप्रकाशिकायां चिन्तामणिमन्त्रः, प्रत्यङ्गिरसमन्त्राणां ऋषिछन्दोदेवताः समाप्ताः ।

End— इतिश्री मान्त्रिकप्रवरभूसुरविरचितं प्रत्यङ्गिरसकल्पसाङ्गोपाङ्गं सम्पूर्णम् ।
समाप्तोऽयं ग्रन्थः । श्री नृसिंहायनमः ।

No colophon.

77

Catalogue No. T/77

प्रपञ्चसारतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—135. size—16.5″×1.2″. Character—

Oriya. Date of scribe— 37th Amka year of Mukunda Deva the Gajapati King of Khurdha dynasty. Complete up to 35th chapter. Condition — worm eaten, some folios are partly damaged. 4 to 5 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— ॐ नमः नृसिंहाय । निर्विघ्नमस्तु ।

अकचटतपाद्यैः सप्तभिर्वर्णवर्गैः
विरचितमुखबाहा पादमध्याख्यहृत्का ।
सकलजगदधीशा शाश्वताविश्वयोनि—
र्वितरतु परिशुद्धिं चेतसः शारदा वः ॥

अथाऽभवन् ब्रह्महरीश्वराख्याः
पुराप्रधानात् प्रलयावसाने ।
गुणप्रभिन्ना जगतोस्य सृष्टि-
स्थिति क्षयस्पष्टनिविष्टचेष्टा ॥

The texts upto 20th chapter are same as in the Prapanchasāratantram edited by Arthur Avalon and published by Āgamānusandhāna Samiti in 1935.

सखलु सकलकामान् प्राप्त्य दृष्ट्वान्तरात्मा
जननमृतिवियुक्ता मुक्तमां मुक्तिमेति ।

इतिश्री प्रपञ्चसारे एकविंशतिपटलः ।

× × ×

इतिश्री प्रपञ्चसारे द्वाविंशपटलः ।

X X X

स प्राप्नोत्यखिलमहीसमृद्धीमस्मिन
देहावसान्ते व्रजति हरेः परं पदं तत् ॥

इतिश्री प्रपञ्चसारे त्रयोविंशतिपटलः ।

X X X

द्रव्यैराढ्योद्विजनृपवरैः पूजितः शान्तचेताः
स्यादपान्ते परमपरिशुद्धं परंधाम विष्णोः ॥
इतिश्री प्रपञ्चसारे चतुर्विंशतिः पटलः ॥

X X X

विष्णोस्तु पञ्जरमिदं प्रभजन्त मध्यात्
सात्तादपीन्द्रमपरत्र नरे कथाका ॥
इतिश्री प्रपञ्चसारे पञ्चविंशतिः पटलः ॥

X X X

स नरयुवतीयुतान् प्राप्यलोकैकवन्द्यो
व्रजति पदमनन्तं लोकवन्द्यस्य विष्णोः ॥
इतिश्री प्रपञ्चसारे षड्विंशतिः पटलः ॥

X X X

धनविभव यशः श्रीसम्पदादीर्घजीवी
तनुविपदि च शैवं तत्परं धाम (काम) भूयात् ॥
इतिश्री प्रपञ्चसारे सप्तविंशतिः पटलः ॥

Enā— यदाश्रयावः प्रकृतिप्रभावतो
विभिन्नतारांश समुत्थितौ यशः (?)
जपन्ति पुष्णन्तिरवीन्दु वह्योः- (?)
नमोऽस्तुतस्मै परिपूर्ण तेजसे ॥

इतिश्री प्रपञ्चसारे पन्चत्रिंशत् पटलः ॥

Colophon— ॐ नमः परमात्मने विष्णवे शिवाय ।

शुभमस्तु सर्वजगतां परहितनिरताभवन्तु भूतगणाः ।
मदभीष्टमखिलमास्तां श्रीलिङ्गराज पादाम्बुजप्रेम्णा ॥
वरं शवरवासोऽपि कणैरुदर पूरणं ।
एकाम्रवनसंस्थेशे वीक्षणं चेदनुक्षणम् ॥

श्रीमद्गुरु श्रीचरणं मा मारणम् ।

मुकुन्द देवस्य नृपतेः सप्तत्रिंशाङ्के लिखितमिदं पुस्तकम् ॥

78

Catalogue No. B T/5

प्राणतोषिणीतन्त्रम्

by रामतोषण

Substance—Old paper. Character—Old Bengali. size—18"×6.5". No. of page—307. Printed in the 19th century, date of printing is not available as the cover page of the book is torne out. Condition—good. Incomplete. 13 lines to a page. Findspot - Dharādharapur, P.S. Jagatsimhapur, Dt. Cuttack.

Beginning— ॐ श्री गणेशाय नमः, ॐ नमः परमदेवतायै ।

जडेकाव्यं दात्री द्रुतमुदकविन्दो जलधितां
पयोधौ पाथोणुत्वमपि ननु सर्वैकवशगा ।
गिरौ धूलीलेशत्वमचलवरत्वं रजसिवा
विचित्रे छायेवं जयति जयतारे तवनवा (?) ॥
यत् पादाम्बुजसेवया प्रतिदिनं कर्मक्षणाल्लीलया
ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरप्रभृतयः कुर्वन्ति सृष्ट्यादिकम् ।
यामाराध्य मनुत्वमाप सुरथो ज्ञानं समाधिस्वयं ।
सास्माकं वितनोतु वाञ्छित फलं तस्यैभवान्यै नमः ॥

× × ×

विप्रश्रीयुतरामतोषणकृता श्रीप्राणतोषण्यसौ
सोमक्षेमसरस्वतीमयतयान्यक्कुर्वतीहं त्विषा ।
वाणी श्री प्राणतोषण्यसि सकलगुणा वज्रदग्दीप्तदेहा
नित्यं स्निग्धा नवीना नवरसरुचिरा रोपितारामध्ये ॥

No colophon.

79

Catalogue No. T/48 (d)

भुवनेश्वरीपूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—11. size—14.1"×1.5". Character—

Oriya. Date of copy— C. 19th century. Complete. Condition— good. 6 lines to a page. Findspot— Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

End— इतिश्री भुवनेश्वरीपूजासमाप्ता ।

There are same folios containing 1st Patala of भुवनेश्वरीकल्प, शम्भोर्प्रातः स्तव by शङ्कराचार्य्य, अष्टाक्षर सौरमन्त्र, नवाक्षरीमन्त्र, एकजटामन्त्र; वनदुर्गा-मन्त्र, स्वप्नावतीमन्त्र, शिवपञ्चाक्षरमन्त्र, मृत्युसंजीवनीमन्त्र, दक्षिणामूर्त्तिमन्त्र, दक्षिण-कालिकामन्त्र, अष्टादशाक्षर गोपालमन्त्र, अष्टाक्षर नारायणमन्त्र, वक्रतुण्डमन्त्र, मधुसूदनमन्त्र षड़क्षर वक्रतुण्डमन्त्र, महालक्ष्मीमन्त्र, सरस्वतीमन्त्र, and 2nd Patala of निरुत्तरतन्त्र towards the end of the manuscript.

No colophon.

80

Catalogue No. T/52

भुवनेश्वरीपूजा

(According to तन्त्रसार)

Substance—Palmleaf. No. of folia—64. size—9.1″ × 1.4″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Conditon— some folios are slightly moth eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः । श्री शिवाभ्यां नमः । श्री भुवनेश्वर्य्यै नमः ।

मन्त्री ब्राह्ममुहूर्त्तादुत्थाय देवीं गुरुं स्मरन् नद्यादौ स्नानं विधाय सितसूक्ष्माम्बरधरः श्वेतार्द्धपुण्ड्राङ्कितः कनकमुद्राङ्कितः सन् द्विधा सन्ध्या तर्पणं कृत्वा देवीपादाम्बुजे दत्तचित्तः पूजागारं प्रविश्य सूर्य्यपूजामारभेत ।

End— इतिश्री सम्मोहनतन्त्रोक्त भुवनेश्वरीपूजाविधिः ।

No colophon.

81

Catalogue No. T/9 (f)

भुवनेश्वरीप्रकाशः

by वासुदेव रथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—19. size—14.7"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Incomplete. 4 to 5 lines to a page. Condition—not so good. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री भुवरेश्वर्य्यै नमः, श्री गणेशाय नमः ।

भुवनेशीं नमस्कृत्य तत्प्रसादावलम्बनात् ।
भुवनेशीप्रकाशोऽयं वासुदेवेन रच्यते ॥
यस्याः प्रसादतोऽहं बाल्ये विद्याटवीसिंहः ।
पञ्चाहत पञ्चसमः ख्यातोऽहं वासुदेवाख्य ॥
यस्याः प्रसादलाभात् पित्राद्याः सिद्धमहिमानः ।
धर्मादिवर्गभरिताः कीर्त्यासृष्ट्या विराजन्ते ॥
विष्णवेन्द्ररुद्रदिनकरब्रह्मादिसुरैरुपास्यमानांघ्रि ।
मूलप्रकृतिं जगतो नित्यामाद्यां महामायाम् ॥
शारदहिमकरवदनां विकसितपद्मामलोचनैरूढ्यां ।
दरहसिताननपद्मां पाशाङ्कुशशालिकरयुगलाम् ॥
अभयवरौ करयुगलेदधतीं दुर्गां चतुर्भुजैरूढ्यां ।

No colophon.

82

Catalogue No. T/49

भुवनेश्वरीप्रकाशः

by वासुदेव रथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—44. Size—14.5"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—good. 5 lines to a page. Findspot—Sanakhemindi, Dt. Ganjam.

Beginning — श्री भुवनेश्वर्यै नमः ।

भुवनेशीं नमस्कृत्य तत्प्रसादावलम्बनात् ।
भुवनेशीप्रकाशोऽयं वासुदेवेन उच्यते ॥
यस्याः प्रसादतोऽहं वाल्ये विद्याटवीसिंहः ।
पञ्चाहतपञ्चसमः ख्यातोऽहं वासुदेवाख्यः ॥

X X X

हिमकरकिशोरमौलिमुद्यद्भास्वद्बिराजितद्योतां ।
तुङ्गपयोधरयुगलां समस्त नेपथ्य शोभिसवाङ्गीम् (?) ॥
अरुणकुसुमैकभूषां परिदधतीअरुणमम्बरं नित्यं ।
सर्वाङ्गसुन्दरतरामद्भुतलावण्यवापिकाकाराम् ॥
कटिसूत्रकनककुण्डलकिङ्किणिकाभूषणैराढ्यां ।
रत्नाड़म्बरकाञ्चनमण्डपसिंहासनासीनाम् ॥
अष्टदलपद्मपृष्ठे देवीं पद्मासनासीनां ।
तत्तत्पत्रजयादिकशक्त्यष्टकवेष्टितां महादेवीम् ॥
भक्त्यैकल्पवल्लीं भुवनेशीं तामहं वन्दे ।

X X X

कैलास शिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
नानासत्वसमाकीर्णे नानादेवसमाकुले ॥
प्रणम्य विधिवद्देवं देवीवचनमब्रवीत् ।
प्राप्ते कलियुगे घोरे संसारे बहलावृते ॥
नष्टे धर्मसमाचारे उत्साहबलवर्जिते ।
नृणां सिद्धिं च मुक्तिं च तन्मे ब्रूहि महेश्वर !

X X X

महासम्मोहनं तन्त्रमप्रकाशमनिन्दितं ।
नानासिद्धिसमायुक्त इहैश्वर्य्यफलप्रदम् ॥
हल्लेखा परमाविद्या सद्यः प्रत्यक्षकारिका ।
नानासिद्धियुतादेवी लोकसिद्धानुरञ्जिनी ॥

प्रवक्ष्यामि महातन्त्रं सर्वकामफलप्रदं ।

× × ×

इतिश्री वासुदेवीये भौवनेशप्रकाशके ।
पुरश्चर्य्याविधानाख्यः प्रथमः पटलो गतः ॥
काशीनाथरथो योऽभूत् पावकः पृथिवीतले ।
तस्मात्कुल प्रदीपो यः प्रकाशस्तस्य शोभताम ॥

X X X

इतिश्री वासुदेवीये भौवनेशप्रकाशके ।
तदर्च्चना विधानाख्यो द्वितीयः पटलो गतः ॥

No colophon.

83

Catalogue No. T/8 (a)

मुण्डमालातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—73. Size—14.8″×1.3″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition – good. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्रीकुलदेवतायै नमः ।

मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुं ।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥

X X X

काली तारा महाविद्या शोषणी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च रमा धूमावतीपरा ॥
वगलासिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एकादश महाविद्याः सर्वतन्त्रेषु कीर्त्तिताः (?) ॥

X X X

कमला त्रिविधा प्रोक्ता एकाक्षरतया स्थिता ।
एकाक्षरी महाविद्या सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥

इतिश्री मुण्डमालातन्त्रे प्रथमः पटलः ॥

X X X

जपमाला मयादेवि कथिता भुवि दुर्लभा ।
सदागोप्या प्रयत्नेन यदि त्वं मम वल्लभा ॥

इतिश्री मुण्डमालातन्त्रे द्वितीयः पटलः ॥

X X X

बहुधा कथिता देवि किं तस्य गुणवक्तितं (?)
योनिरूतेण यत्रास्ते स्वयं कोटिगुणात्मिका ॥

इतिश्री मुण्डमालातन्त्रे तृतीयः पटलः ॥

X X X

End— इति ते कथितं देवि कमलाविधिमुत्तमं ।
यस्य विज्ञानमात्रेण महदैश्वर्य्यमाप्नुयात् ॥

इतिश्री मुण्डमालातन्त्रे पञ्चदशः पटलः ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

There are about 24 folios containing Kālī Tantra having 12 patalas, Kumārī Tantra having 9 patalas, and Tārārahasya Vṛtti towards the end of the manuscript.

इतिश्री कालीतन्त्रे महारहस्ये भैरवीभैरवसम्वादे द्वादशः पटलः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

X X X

इतिश्री कुमारीतन्त्रे परमरहस्ये नवमः पटलः ॥

कृताशङ्करेणैषा तारारहस्य वृत्तिका ।

No colophon.

84

Catalogue No T/9 (a)

मुण्डमालातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—34. Size—14.7"×1.3". Character—Oriya. Date of copy - C. 19th century. Complete. Condition— some folios are worm eaten. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Puri town.

Text same as in catalogue No. T/8 (a) discussed previously.

No colophon.

85

Catalogue No. Sms/36

मृड़ानीतन्त्रम्

Substance - Paper. No. of pages—48. Size—12.6"×8". Character—Nagari. Copied in 1959. Condition—good. Complete. About 20 lines to a page. Findspot—Oriental Manuscripts Library, Madras.

Beginning— श्री गणपतये नमः ।

कैलास शिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
एकान्ते देवमासीनं अपृच्छन् मृड़मम्बिका ॥
देवदेव महादेव भवनाशनभैरव ।
भक्तानामनुरक्तानां भवद्योजनसाधनम् ॥
दारिद्र्यनाशनं ब्रूहि रसबन्धं कृपालय ।
साधु साधु त्वया पृष्ट तुष्टोऽस्मि सुभगे तव ॥
× × ×
इति मृड़ानीतन्त्रे रसपाशे प्रथमः पटलः ।

End— गुलिकाधार्य्यते येन सततं मेनकात्मजे ।
सं पूज्यते सुरश्रेष्ठैः लोकपालैश्च सर्वदा ॥
येनास्ये धार्य्यते चैषा गुलिका मेनकात्मजे ।
तस्य देहं परित्यज्य दोषाद्दिव्यत्वमाप्नुयात् ॥
इति समाप्तं शास्त्रम् ।

No colophon.

86

Catalogue No. T/4 (d)

यन्त्रचिन्तामणिः

by शिवयोगीश्वर

Substance—Palmleaf. No. of folia—3. size 14.1"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4 lines to a page. Condition—good. Incomplete. Findspot Harekṛshnapur, Dt. Puri.

इति श्रीशिवयोगीश्वरविरचिते यन्त्रचिन्तामणौ वश्याधिकारे चतुर्थयन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीशिवयोगीश्वरविरचिते यन्त्रचिन्तामणौ वश्याधिकारे सौभाग्यं नाम पञ्चदशयन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीशिवयोगीश्वरविरचिते..... कामराजाख्यं षोड़शयन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीशिवयोगीश्वरविरचिते..... ...वन्ध्यापुत्रवतीनाम कमलाख्यं सप्तदशयन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीशिवयोगीश्वरविरचिते..... मणिभद्राख्यं अष्टादशयन्त्रम् ।

No colophon.

87

Catalogue No. T/20 (d)

यन्त्रचूड़ामणिः

Substance—Palmleaf. No. of folia—34. Size—7.7"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. 4 lines to a page. Incomplete. Condition—good. Findspot—Bāripadā Museum, Dt. Mayurbhanja.

इतिश्री शिवयोगिन्ये विरचित' (?) प्रथम यन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीयन्त्रचूड़ामणौ वश्याधिकारे दुष्टमोहलकं नाम द्वितीययन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीयन्त्रचूड़ामणौ तृतीययन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीयन्त्रचूड़ामणौ वश्याधिकारे हरपार्वती (?) जन वशीकरणं नाम यन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीयन्त्रचूड़ामणौ जगद्वश्यं नामयन्त्रम् ।

X X X

इति श्रीयन्त्रचूड़ामणौ आकर्षणाधिकारे मणिभद्राख्यं नाम यन्त्रम् ।
इति श्री.....वश्याधिकारे वन्ध्यापुत्रवती नाम कमलाख्यं यन्त्रम् ।
इति श्री.....वश्याधिकारे सौभाग्यं नाम यन्त्रम् ॥

No colophon.

88

Catalogue No. T/2 (b)

योगसर्वस्वम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—26. Size—13.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Condition—good. 5 lines to a page. Findspot—Sakshigopāl, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरवे नमः ।

श्रीभगवानुवाच—

उत्तिष्ठोतिष्ठ भद्रं ते गार्गिब्रह्मविदाम्बर (?)
वक्ष्यामि योगसर्वस्वं ब्रह्मणा निर्मितंपुरा ॥

X X X

इतिश्री याज्ञवल्क्यगीतासूपनिषतसु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीभगवान्याज्ञवल्क्य-गार्गिसम्वादे प्रथमोऽध्यायः ।

End— भगवन् सर्वशास्त्रज्ञ सर्वभूतहितेरत !
योगं मोक्षाय योगीन्द्र भवद्भिर्भाषितं च यत् ॥
यमाद्यष्टाङ्गसंयुक्तं योगमुक्तेषु साधनम् ।
तदेतद्विस्मृतं सर्वं सर्वज्ञ तव सन्निधौ ॥
योगं ममोपदिश्याद्य सत्वं संक्षेपरूपतः ।
त्रातुमर्हसि सर्वज्ञ जन्मसंसारसागरात् ॥
इत्युक्तो ब्रह्मवादिन्या ब्रह्मविद्ब्राह्मणस्तदा ।
आलोक्य कृपयादीनां स्थितपूर्वमभाषत ॥

X X X

वक्ष्यामि समासेन योगं संप्रति त्वं शृणु ॥

एकादशोऽध्यायः ।

No colophon.

89

Catalogue No. T/9 (c)

योगिनीतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—9. Size—14.7"×1.3". Character—Oriya Date of copy— C. 19th century. Incomplete. 4 to 5 lines to a page. Condition—some folios are worm eaten. Findspot—Puri town.

Beginning— श्रीष्टदेव्यै नमः ।

कैलासशिखरासीनं देवदेव जगद्गुरुम् ।
सदा स्मेरमुखी दुर्गा पप्रच्छ नगनन्दिनी ॥

पार्वत्युवाच—

चतुषष्टीनि तन्त्राणि कृतानि भवताप्रभो ।
तेषां मध्ये प्रधानानि वद मे करुणानिधे ॥

इति योगिनीतन्त्रे प्रथमः पटलः ।

× × ×

भगलिङ्गे भगाख्यानैर्भगशब्दाभिधियते ।
भगलिङ्गामृतं कुर्य्यान्नैवेद्यं साधकोत्तमः ॥

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे द्वितीयः पटलः ॥

X X X

यत्रयोनिः पूजितव्या नाक्षतां हि प्रपूजयेत् ।
अक्षता पूजनात् देवि सिद्धिर्हानिः पदे पदे ॥

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे तृतीयः पटलः ॥

X X X

इति ते कथितो देवि योनिपूजाविधिर्मया ।
सुगोप्यं यदिदेवेशि तवस्नेहात् प्रकाशितम् ॥

X X X

माधवी सदृशी योनिर्नास्ति योनि महीतले ।
तत्कुचौ कठिनौ दुर्गे योनिस्तस्या सुपीनता ।
तस्या पूजनमात्रेण शिवोऽहं शृणु पार्वति !
राधायोनिं पूजयित्वा कृष्णः कृष्णत्वमागतः ।
श्रीरामो जानकीनाथः सीतायोनिप्रपूजनात् ॥
रावणं सकुलं हत्वा पुनरागत्य ? सुन्दरीं ।
अयोध्यां नगरीं रम्यां वसतिं कृतवान् स्वयम् ॥
समुद्रस्य जगन्नाथो वेलायां वटमूलतः ।
योनितत्त्वस्य माहात्म्यं वसतिं कृतवान् विभुः ।

X X X

वृथा पूजा न कर्त्तव्या योनिपूजां विना प्रिये !
नान्यथा जपमात्रेण विहरेत् क्षितिमण्डले ॥

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे चतुर्थः पटलः ॥

X X X

तिलकं योनिपुष्पेण स्वर्णस्थं धारयेद् यदि ।
सर्ववित्ताधीपो मन्त्री दुर्गालोके महीयते ॥

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे पञ्चमः पटलः ॥

X X X

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे षष्ठः पटलः ।

X X X

पूजाकाले थ देवेशि यदि कोप्यागमिष्यति ।
दर्शयेद्वैष्णवीं मुद्रां विष्णुन्यासं तथा स्तवम् ॥

इति श्रीयोगिनीतन्त्रे सप्तमः पटलः ॥

No colophon.

90

Catalogue No. T/35 (b)

योनितन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—8. Size—18"×1.4" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—some folios are moth eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— कैलासशिखरारूढं देवदेवं जगद्गुरुं ।
सदा स्मेरमुखी दुर्गा पप्रच्छ नगनन्दिनी ॥
चतुषष्ठीनि तन्त्राणि कृतानि भवता प्रभो ।
तेषां मध्ये प्रधानानि वद मे करुणानिधे ॥

श्री महादेव उवाच—

शृणु पार्वति चार्वाङ्गि अतिगुह्यमिमं प्रिये ।
कोटिवारं वारितास्मि तथापि श्रोतुमिच्छसि ॥

× × ×

मन्त्रपीठं यन्त्रपीठं योनिपीठं च पार्वति ।
योनिपीठं प्रधानं हि तवस्नेहात् प्रकाश्यते ॥
हरिहरश्च ये देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारकाः ।
सर्वे वै योनि संभूताः शृणुष्व नगनन्दिनि ॥
शक्तिमन्त्रमुपास्यैव यदि योनिं न पूजयेत् ।
तेषां दीक्षां च मन्त्रं च नरकायोपपद्यते ॥

X X X

इति श्रीयोनितन्त्रे प्रथमः पटलः ॥

धर्मलिङ्गामृतं कुर्य्यान्नैवेद्यं सावकोत्तमः ॥

इति श्रीयोनितन्त्रे द्वितीयः पटलः ॥

× × ×

योनिदर्शनमात्रेण कुलकोटिं समुद्धरेत् ।
चन्द्रसूर्य्योपरागे च यदि योनिं प्रपूजयेत् ॥
तर्पणं योनितत्त्वेन न पुनर्जायेते भुवि ।

X X X

पञ्चतत्त्वं विना दुर्गे यत्किञ्चित् कुरुते नरः ।
तत्सर्वं निष्फलं देवि अन्ते च नरकं व्रजेत् ॥

X X X

योनिमध्ये प्रधाना च चाण्डाली गण-नायिका ।
तस्याः पूजनमात्रेण मम तुल्यो न संशयः ॥

X X X

इति श्रीयोनितन्त्रे तृतीयः पटलः ॥

X X X

वृथापूजा नकर्त्तव्या योनिपूजां विना प्रिये ।
अन्यथा जपमात्रेण विहरेत् क्षितिमण्डले ॥
इति श्रीयोनितन्त्रे चतुर्थः पटलः ।

X X X

इति श्रीयोनितन्त्रे पञ्चमः पटलः ।

X X X

End — जिह्वा योनिर्मनोयोनि र्योनिःश्रोत्रे च चक्षुषी ।
सर्वत्रापि महेशानि योनिचक्रं विभावयेत् ॥
इतिश्री योनितन्त्रेऽष्टमः पटलः ।

No colophon.

91

Catalogue No. T/34

रसरत्नाकरः

by पार्वतीपुत्र नित्यनाथ

Substance—Palmleaf. No, of folia--57. Size—18 3″ × 1.3″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—badly worm eaten. 4 lines to a page. Findspot— Khurdha area, Dt. Puri.

Beginning — ॐ नमो गणेशाय ।
अथार्वणे महादेवे सर्पके वारुतेऽपिच ।
इत्येवमागमोक्तंच वक्त्रा वक्त्रेण (?) च यत् श्रुतम् ॥
X X X
साधकानां हितार्थाय मन्त्रखण्डमिहोच्यते ।
वश्यमाकर्षणं स्तम्भं मोहमुच्चाटमारणम् ॥

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते सिद्धखण्डे मन्त्रसारे मन्त्रसाधनं नाम प्रथमोपदेशः ।

X X X

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते रसरत्नाकरे मन्त्रखण्डे सर्वलोकवशीकरणं नाम द्वितीयोपदेशः ।

X X X

इतिश्री.....राजवश्यादि व्याघ्रनिवारणादि नाम तृतीयोपदेशः ।

X X X

इति श्री..... ·स्त्रीवशादिद्रावणान्तं नाम चतुर्थोपदेशः ।

X X X

इति श्री.....आकर्षणादिनाम पञ्चमोपदेशः ।

X X X

इति श्री.....आकर्षणादि स्तम्भनं नाम षष्ठोपदेशः ।

इति श्री.....उच्चाटनं नाम सप्तमोपदेशः ।

इति श्री..... ...मारणं नामाष्टमोपदेश ।

इति श्री.....व्याधिकरणं नाम नवमोपदेशः ।

इति श्री.....गृहे क्लेशनिवारणं नाम दशमोपदेशः ।

इति श्री.....कौतूहलं नाम एकादशोपदेशः ।

इति श्री.....यक्षिणी साधनं नाम द्वादशोपदेशः ।

इति श्री.....अञ्जनादि पादुकासाधनं नाम त्रयोदशोपदेशः ।

No colophon.

92

Catalogue No. T/48 (e)

वक्रतुण्डमहाकल्पः

(according to अङ्गिरसकल्पः)

Substance—Palmleaf. No. of folia—8. size—14.1" × 1.5". Character—Oriya. Date of scribe—19th century. 5 to 6 lines to a page. Complete. Condition— good. Findspot— Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

पाशङ्कुशाभयवरान् वरदं दधान-
मुद्भिन्न शोणमणिसन्निभ चारुकान्तिम् ।
वक्षोजसंपूटगतं गणनाथमेव ।
ध्यायेत् प्रसन्न मरुणाम्बर मिन्दिरायै ॥ (?)
पप्रच्छाङ्गिरसं प्राज्ञं पिप्पलादः कृताञ्जलिः ।
ब्रूहि काम्यानि कर्माणि वक्रतुण्डमहामनो ॥

End— इतिश्री X X X X वक्रतुण्ड महाकल्पः ॥

There are some folios containing Gaṇeśa Vigraha Kavacha according to Śāmbhavī Tantra and Gaṇeśa Stavarāja according to Brahma Vaivarta Purāṇa towards the end of the manuscript.

इति श्रीशाम्भवीतन्त्रे देवदेवीसम्वादे गणेशप्रकरणोपाख्याने श्रीगणेशविग्रहकवचं सम्पूर्णम् ॥

X X X

इति श्रीब्रह्मवैवर्त्ते श्रीगणेशस्तवराजः समाप्तः ।

No colophon.

93

Catalogue No. T/60

वन्दिमोक्षणस्तोत्रम्

and others.

(According to सनत्कुमार तन्त्रम्)

Substance – Palmleaf. No. of folia –119. Size—7.5"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition— good. 4 to 5 lines to a page. Findspot— Sakshigopal area, Dt. Puri.

इति श्रीसनत्कुमारतन्त्रे वन्दिमोक्षणस्तोत्रं संपूर्णम् ।

X X X

इति श्रीशङ्कराचार्य्यविरचिता मानसिकपूजा समाप्ता ॥ इति श्रीशङ्कराचार्य्य विरचितानन्दलहरी समाप्ता ॥ इति श्रीदुर्गापूजा समाप्ता । इति श्रीदक्षिणकालिका पूजा समाप्ता ।

No colophon.

94

Catalogue No. T/30

विद्यापद्धितिः

by कृष्णमिश्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—40. size—12.4"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—very badly worm eaten. 4 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

ज्ञानार्णवमतेनैव कौलिकानां च तुष्टये ।
मिश्रेण कृष्णसंज्ञेन श्रीविद्यापद्धतिः कृता ॥

There are some folios containing Śrī Kavacha, according to Kumāra Pravodha Tantra and Āpaduddhāraśataka according to Visvasāra Tantra and other stotras towards the end of the manuscript.

No colophon.

95

Catalogue No. T/48 (f)

विनायकमहामन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—6. size—14.1"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century Condition—good. 6 lines to a page. Findspot—Kapileswar, P.S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

वक्ष्यामि परमं गुह्यं कलौ सिद्धिकरं नृणाम् ।
वैनायकमहामन्त्रं यथा व्यासाच्छ्रुतं मया ॥

No colophon.

96

Catalogue No. T/4 (b)

शल्यतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—33. size—14.1"×1.3". Character—

Oriya. Date of copy—C. 19th century. Condition—good. Incomplete. 4 lines to a page. Findspot—Harekṛshnapur, Dt. Puri.

इति श्रीशल्यतन्त्रे गोरखभाषितं पादुकासिद्धिर्लक्षणम् ।

X X X

इति श्री ··· ··· ··· ·· गुलिकासिद्धिः ।

इति श्री ··· ··· ··· ··· तारकासिद्धिः ।

इति श्री ··· ··· ·· ··· पुटकसिद्धिः ।

इति श्री ··· ··· ··· ··· नानाप्रकारप्रयोगप्रकरणम् ।

इति श्री ·· ··· ··· ··· नक्षत्रप्रकरणम् ।

इति श्रीशल्यतन्त्रे गोरखभाषितं जगद्वशीकरणं नाम एकोनत्रिंशतिः यन्त्रः समाप्तः ।

No colophon.

97

Catalogue No. T/11

शारदातिलकम्

by लक्ष्मणदेशिक

with मन्त्रयन्त्र प्रकाशिका टीका

by शिरपाणि

Substance—Palmleaf. No. of folia—123. size—15 5″ × 1.5″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Conditon—good. 6 to 7 lines to a page. Findspot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— ॐ नमो रामचन्द्राय ।

नित्यानन्दवपुर्निरन्तरगलत् पञ्चाशवर्णैः क्रमात् ।
व्याप्तं येन चराचरात्मकमिदं शब्दार्थरूपं जगत् ॥
शब्दब्रह्मयदूचिरे सुकृतिन श्चैतन्यमन्तर्गतं ।
तद्वोऽव्यादनिशं शशाङ्कसदनं वाचामधीशं महः ॥
अन्ता स्मितोल्लसितमिन्दुकलावतंस-
मिन्दीवरोदरसहोदर-नेत्रशोभि ।

हेतुस्त्रिलोकविभवस्य नवेन्दुमौले-
रन्तःपुरं दिशतु मङ्गलमादरादवः ॥

End— दिक्कालादि विवर्जिते परशिवे चैतन्यमात्रात्मके ।
शून्ये कारणपञ्चकस्य विलयं नीते निरालम्बने ॥
आत्मानं विनिवेश्य निश्चलधिया निर्लीनसर्वेन्द्रियो ।
योगी योगफलं प्रयातिसुलभं नित्योदितं निष्क्रियम् ॥

महावनाय प्रणतोऽस्मि तस्मै
सम्बिल्लतालिङ्गन शीतलाय ॥
येनार्पितं मुक्तिफलं विपक्व-
माम्राय शाखाभिरुपाश्रितेभ्यः ॥[1]

तन्नन्दनोदेशिक देशिकोऽभू-
च्छ्रीकृष्ण इत्यभ्युदितप्रभावः ।
यत्पादकारुण्य सु ाभिषेका-
ल्लक्ष्मीं परामश्नुवते कृतार्थाः ।[2]

तस्मादभूदखिलदेशिकवारणेन्द्रः
षट्कर्मसागरविहारविनोदशीलः ॥
यस्यत्रिलोकविदितं विजयाभिधान
माचार्य्यपण्डित इति प्रथयन्ति सन्तः ॥
आचार्य्यविद्याप्रभवस्य तस्य जातः प्रभोलक्ष्मणदेशिकेन्द्रः
विद्यास्वशेषासु कलासु सर्वास्वपि प्रथां यो महतीं प्रपेदे ।
आदायसारमखिलं निखिलागमेभ्यः
श्रीशारदातिलकनाम चकार तन्त्रम् ॥

प्राज्ञः स एष पटलैरिह तत्त्वसख्येः
प्रीतिप्रदानविधये विदुषां चिराय ॥

---

1. महावलाय in the published book, edited by Arthor Avalon as Tantrik texts, Vol. XVII.
2. This particular verse is found after तस्माद्भूदखिलदेशिकवारणेन्द्र in the published book.

The following two verses which are found in the published book edited by Arthor Avalon are not found in the manuscript preserved in the manuscripts library of the Orissa State Museum.

अनाद्यन्तात् शम्भोर्वपुषि कलितार्द्धेन वपुषा ।
जगद्रूपं शश्वत् सृजति महनीया मपिगिरम् ॥
सदर्था शब्दार्थस्तनभरनता शङ्करवधू-
र्भवद्भूत्यै भूयाद्भवजनितदुःखौघशमनी ॥

सुखदा दातृसुभगा शङ्करार्द्धशरीरिणी ।
ग्रन्थपुष्पोपाहारेण प्रीताः नः पार्वतीसदा ॥

Tikā of the Śāradā tilaka :—

Beginning— नमो रामचन्द्राय—

हयाननहरिंनत्वा मन्त्रयन्त्रप्रकाशिका ।
शारदातिलके यत्नात्क्रियते शीरपाणिना ॥

End— इतिश्री शारदातिलके मन्त्रयन्त्रप्रकाशिकायां तृतीयः पटलः ।

No colophon.

98

Catalogue No. T/14

शारदातिलकम

by लक्ष्मणदेशिक

Substance—Palmleaf. No. of folia—163. Size—12.9"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—65th Amka year of Rāmachandra Deva III of the Bhoi dynasty of Khurdhā or 19th century. Name of scribe—Divyasimha Miśra. Comprete. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

Text same as in catalogue no. T/11.

Colophon— चण्डीकान्तस्य चरणं शरणं मम केवलम् ।
यच्चिन्तयित्वा परमं पदं यान्ति मनीषिणः ॥

श्रीशुभमस्तु सर्वजगताम् ।

दिव्यसिंहेन महता शारदातिलकं शुभम् ।
सर्वलोकहितार्थाय संग्रहं क्रियतेमया ॥

श्रीरामदेवङ्क अ ३५ ङ्क कन्य ५ दिने आशुन्य कृष्ण द्वितीया बुधवारे कटिल (कण्टिलो) श्रीनीलमाधवसेवक दिव्यसिंह मिश्र लेखि संपूर्ण्ण कले । श्री नीलमाधव त्राहिमाम् ।

99

Catalogue No. T/62

शारदातिलकम्

by लक्ष्मणदेशिक

Substance—Palmleaf. No. of folia—170. Size—15.3"×1 5". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th Amka year of Rāmachandra Deva III of the Bhoi dynasty of Khurdha or 1832. Complete. Condition— good. 5 lines to a page. Findspot— Khallikote, Dt. Ganjam.

Text same as in catalogue no. T 11, discussed previously.

Colophon— तलेरूपं धातु स्त्रीगुणमयि वृष्ठे मुररिपो
र्नखाग्रे शम्भुना मितिचरणपद्मद्वयमपि ॥
भजन्त्येते सर्वे भजनलवमात्रं मुहुरहो
पिनाकी जानीते हृदियदभिधत्ते शव इव ॥ (१)

नृपते रामचन्द्रस्य प्यङ्कोनविंशतिस्मृतः (१)
वेदवाणनगश्चन्द्र शकाब्द भोगभोगतः ॥

There are two folios containing Durgā Yajana Dīpikā towards the end of the manuscript.

100

Catalogue No. T/13

शारदाशरदर्च्चन पद्धतिः

by गोदावर महापात्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—83. Size—13.4"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition good. 5 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्रीदुर्गायै नमः।

गुरुं गणपतिं नत्वा संहिताद्युक्त सक्रमात् ।
क्रियते शारदायाश्च शरदर्च्चनपद्धतिः ॥
देवालिमौलिनीलाश्मरश्मिभृङ्गकुलाकुले ।
देवि त्वच्चरणाम्भोजे रमणं मामकं मनः ॥

राजत् कौत्ससवंशभूषणमणिं नानागुणिग्रामणीं
कुज्ञानाण्णवतारणैकतरणिं शिष्यौघचिन्तामणिम् ।
सद्विद्याविपणीं सुबोधसरणीं विप्राग्रणीं नौम्यहं
तातं श्रीवलभद्रसंज्ञममलां तांच्चन्नपूर्णां प्रसूम् ॥

आलोक्य वाक्यानि सदादृतानि
तत्तत्पुराणप्रतिपादितानि ॥
गोदावरो मन्त्रिवरस्तनोति
क्रमं शिवायाः शरदर्च्चनस्य ॥

End— नानापुराणवचनानि मिथो विरुद्धा-
न्यानीय तानि गुणमुख्यतया विचार्य्य ।
निर्माय शिष्टमतसंस्कृतपद्धतिं तु
गोदावरोऽर्पयति पादतले शिवायाः ॥

इतिश्री गोदावरमहापात्रविरचिता दुर्गाशरद्दुर्गोत्सवपूजाकर्मसंस्कृतपद्धतिः समाप्ता।

The author Mantrivara Godāvara Mahāpātra quoted the following authorities in his work.

ईशानसंहिता, कालिकापुराण, दुर्गाकल्प, दुर्गोत्सव, पारस्करगुह्यसूत्र. बृहत्कल्प, बृहद्दीपिका, भविष्योत्तर, शाश्वतसंहिता etc.

The author described the following topics in his work.

शयनपूजा, आचार्य्यवरण, कलशपूजा, पार्श्वपरिवर्त्तन, देव्यावोधन, सहस्रकुम्भस्नानविधि, अष्टमीपूजा, आचार्य्यलक्षण, संकल्पविधि, सामान्यार्घ-विधि, नवग्रहपूजा, पञ्चदेवतापूजा, द्वारपालपूजा, आसनशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, मातृकान्यास, ऋष्यादिन्यास, श्रीकण्ठादिन्यास, कलान्यास, वनदुर्गापूजा, षट्पदन्यास, सृष्टिन्यास, संहारन्यास, स्थितिन्यास, पदन्यास, षट्कोणन्यास, प्रत्यक्षरन्यास, उत्थानपूजा, सामान्यार्घ्यसंस्कार, पात्रसंस्कार, देहपीठपूजा, षोड़शोपचारपूजा, राजोपचार-पूजा, मन्त्रशुद्धि, देवताशुद्धि, वाह्यपीठपूजा, दिक्पालपूजा, आवरणपूजा, घण्टासंस्कार, मुद्रालक्षण, नैवेद्यसंस्कार, वलिमन्त्र, वलिविधि, आरात्रिक, जपविधि, होमविधि, अग्नेः पञ्चोपचारपूजा, पार्वत्याग्निसस्कार, तर्पणविधि, पञ्चानां अश्वानां गजानां च सामान्यत पूजा, पशुच्छेदनमन्त्र, मद्यनिवेदन, मद्यदानफल, वाह्यवलिदान, वाह्यभूतवलि, रात्रिविहितकर्म, रथप्रतिष्ठाविधि, शस्त्रादिपूजा, पताकामन्त्र, खड्गमन्त्र, फलकमन्त्र, कवचमन्त्र, दुन्दुभिमन्त्र, चापमन्त्र, इषुधिमन्त्र, सायकमन्त्र, शङ्खमन्त्र, कुन्तमन्त्र, शल्यमन्त्र, चामरमन्त्र, छुरिकामन्त्र, कट्टारकमन्त्र, हेमदण्डमन्त्र, सिंहासन-मन्त्र, रेवन्तमन्त्र, (?) काष्ठदेवीपूजा, पूर्णाहुत्यङ्गपशुपूजाविधि, अपराजिताविधि, पुष्पाञ्जलि, छत्रमन्त्र, अश्वमन्त्र, ध्वजमन्त्र, गजमन्त्र, पताकामन्त्र, दुन्दुभिमन्त्र, शल्यमन्त्र Etc.

There are some folios containing कामना विशेषेण सहस्रनामपठन प्रकार, सहस्रकुम्भविधि, पिण्डश्राद्धपद्धति, कल्पश्राद्धपद्धति towards the end of the manuscript.

No colophon.

101

Catalogue No. T/27

शारदाशरदर्च्चनपद्धतिः

by गोदावर महापात्र

Substance—Palmleaf. No. of folia— 81. Size— 16″×1.3″. Character—

Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—badly worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Raṇapur area, Dt. Puri.

Text same as in catalogue No. T/13 discussed previously accept the first Mangalā Charaṇa verse (गुरुं गणपतिं नत्वा) which is not found in the manuscript.

No colophon.

102

Catalogue No. T/36

शारदाशरदर्च्चनपद्धतिः

by गोदावर महापात्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—71. Size—13.9"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—Sana 1330 sāla. Name of scribe— Govinda Rathaśarmā. Complete. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Raṇapur area, Dt. Puri.

Text same as in Catalogue No. T/27. There are some folios containing Sāvitrī Pūjā and Aparājitā Pūjā towards the end of the manuscript.

Colophon— सन् १३३० साल बिछा कृष्णपक्ष द्वादशी बेल सायाह्न नक्तसमयरे बुधबारे ए पोरतक समाप्त हेले । गोविन्दरथशर्म्मा ब्राह्मण लिखितं पुस्तकम् ।

103

Catalogue No. T/4 (c)

शावरोत्तरम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—4. size—14.1"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Incomplete. Conditon—good. 4 lines to a page. Findspot—Harekṛshṇapur, Dt. Puri.

इति श्रीशावरोत्तरे सभास्तम्भनं नाम प्रथमः यन्त्रः ।
इति श्रीशावरोत्तरे मुखस्तम्भनं नाम द्वितीयः यन्त्रः ।
इति श्री शावरोत्तरे दाता अदाता स्तम्भनं नाम तृतीयः यन्त्रः ।
इति श्री शावरोत्तरे वशीकरणं नाम चतुर्थः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... वशीकरणं नाम पञ्चमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... राजवशीकरणं नाम षष्ठः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... स्त्रीपुरुषवशीकरण नाम सप्तमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... सर्वलोक वशीकरणं नाम अष्टमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... शत्रुनाशकरं नाम नवमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... सर्वपुरुषवशीकरणं नाम दशमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... स्त्रीवशपुरुषवशीकरणं नाम एकादशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... स्त्रीपुंसवशीकरणं नाम द्वादशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... स्त्रीवशीकरणं नाम त्रयोदशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... X X X × चतुर्दशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... भूतप्रेतादि वशीकरणं नाम पञ्चदशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... जगद्वशीकरणं नाम षोडशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... राजवशीकरणं शत्रूक्षयकरं नाम सप्तदशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... मृतवत्सायंत्रं नामाष्टादशः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... हस्तिवशीकरणं नाम एकोनविंशतितमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... राजशत्रुवशीकरणं नाम विंशतितमः यन्त्रः ।
इति श्री ... ... राजवशीकरणं नाम एकविंशतितमः यन्त्रः ।

No colophon.

104

Catalogue No. T/59

श्यामाअगलम्

and others.

According to भैरवीकल्प and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia –136. size—7.4"×1.3". Character—

Oriya. Date of copy—C. 19th century. Condition—good. Complete. 4 to 6 lines to a page. Findspot—Sākhigopāl area, Dt. Puri.

इति श्रीभैरवीकल्पे दक्षिणकालिकाया अर्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।
इति श्रीकालीकुलसर्वस्वे श्रीमहाकालभैरवेणोक्तं कालिकायाः कीलकं संपूर्णम् ।
इति श्रीकालीतन्त्रे एकाक्षरकवचं सम्पूर्णम् ।
इति श्रीकालीतन्त्रे कालीकर्पूरस्तोत्रं संपूर्णम् ।
इति श्रीमहाकालमुखविनिगतं श्रीमहाकालीस्तोत्रं संपूर्णम् ।
इति श्रीकाण्वसंहितायां पुरुषसूक्ते पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।
इति श्रीपञ्चमुखहनुमत्कवचं संपूर्णम् ॥
इति श्रीरुद्रयामलोक्तहरगौरीसम्वादे श्रीसङ्कटतारिणीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।
इति श्रीफेत्कारिणी तन्त्रे ताराकर्पूरं समाप्तम् ।
इति श्रीनीलतन्त्रोक्तं श्रीनीलसरस्वत्यष्टकं सम्पूर्णम् ।
इति श्रीभैरवीविरचिते श्यामाभुजङ्गः समाप्तः ।
इति श्रीशिवपरशुरामसम्वादे कालिकास्तवराजः समाप्तः ।
इति श्रीकुब्जिकातन्त्रे भैरवभैरवीसम्वादे त्रैलोक्यविजयं नामकवचं संपूर्णम् ।
इति श्रीसाम्बपुराणे सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

No colophon.

105

Catalogue No. T/10

श्यामार्च्चन पद्धतिः

by वासुदेव रथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—136. Size—13.4″×1.4″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Paralakhemindi, Dt. Ganjam.

Beginning— श्री दक्षिणकालिकायै नमः । श्री मदिष्टदेवतायै नमः ।

कौलार्च्चनविधिं वक्ष्ये कौलवृन्दार्च्चनं सदा ।
सर्वतन्त्रानुसारेण वेदवाक्यानुसारतः ॥

End— तन्त्राणां सारमुद्धृत्य वासुदेवेन धीमता ।
क्रियते शिष्यबोधाय श्रीश्यामार्च्चनपद्धतिम् ॥

X X X

इति श्रीसर्वतन्त्रसम्मता वासुदेवरथपट्टयोपविरचिता श्रीमदक्षिणकालिकापञ्चतत्त्व पूजाविधिपद्धतिः समाप्ता ।

The author Vāsudeva Ratha has mentioned the names of some Gurus in the chapter of 'Gurupūjā' are given below.

"महादेवानन्दनाथ, त्रिपुरानन्दनाथ, भैरवानन्दनाथ, ब्रह्मानन्दनाथ, पूर्णदेवानन्दनाथ, चलचित्तानन्दनाथ, चलाचलानन्दनाथ, कुमारानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, वरदानन्दनाथ, स्मरदीपानन्दनाथ, मायानन्दनाथ, मायावत्यानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ, कुशलानन्दनाथ, भीमसेनानन्दनाथ, मीनानन्दनाथ, गोरक्षकानन्दनाथ, भोजदेवानन्दनाथ, प्रजापत्यानन्द नाथ, मूलदेवानन्दनाथ, रन्तिदेवानन्दनाथ, विघ्नेश्वरानन्दनाथ, हुताशनानन्दनाथ, समयानन्दनाथ, सन्तुष्टानन्दनाथ" ।

There are some folios containing शिवावलि, शान्तिस्तोत्र and मद्यपानविधि towards the end of the manuscript.

No colophon.

106

Catalogue No. T/9 (d)

श्यामातन्त्रम् or असितातन्त्रम् or कालीतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—15. size—14.7" × 1.3". Character—Oriya. Date of scribe—C. 19th century. Complete, upto 12th chapter. Condition— good. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री असितायै नमः ।

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।
उवाच पार्वतीदेवी भैरवं परमेश्वरम् ॥

देव्युवाच—

देवदेव महादेव सृष्टिस्थितिलयात्मक ।
किंतद् ब्रह्ममयं धाम श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥
कालिकाया महाविद्यां समस्त भेदसंयुतां ।
सपर्य्यां भेदसहितां चतुर्वर्गफलप्रदाम् ॥

X X X

इत्यसितातन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे प्रथमः पटलः ।

X X X

इत्यसितातन्त्रे.....पुरश्चरणं नाम द्वितीयः पटलः ।

X X X

इत्यसितातन्त्रे.....काम्यविधिर्नाम चतुर्थः पटलः ।

X X X

इत्यसितातन्त्रे..... सिद्धविद्यानाम पञ्चमः पटलः ।

X X X

इत्यसितातन्त्रे.....नीलसाधनं नाम षष्ठः पटलः ।

X X X

इत्यसितातन्त्रे..... .....पुरश्चरणविधिर्नाम सप्तमः पटलः ।

X X X

इति श्रीश्यामातन्त्रे महारहस्ये भैरवभैरवीसम्वादे आचारनिर्णयं नामाष्टमः पटलः ।

X X X

इति श्रीश्यामातन्त्रे महारहस्ये विद्यामाहात्म्यं नाम नवमः पटलः ।

X X X

इति श्रीकालीतन्त्रे महारहस्ये X X X दशमः पटलः ।

× × ×

इति श्री कालीतन्त्रे महारहस्ये X X X एकादशः पटलः ।

X X X

इति श्री कालीतन्त्रे महारहस्ये सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे सिद्धिकथनं नाम द्वादशः पटलः ।

No colophon.

107

Catalogue No. T/28

श्यामार्च्चनतरङ्गिणी

by विश्वेश्वर सोमयाजी

Substance—Palmleaf. No. of folia—70. size—13.5"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C.19th century. Condition—some folios are worm eaten. Complete, upto 8th Vīchi. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Raṇapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

श्रीशांघ्रिकमलामन्दमाकन्दलवलाभत ।
निचिता (?) विश्वनाथेन श्यामार्च्चन तरङ्गिणी ॥
सर्वतन्त्राम्बुधेः सारभागमाहृत्य शम्भुना ।
आज्ञप्ता शाम्भवीतृप्त्यै निचितालीव निर्मला ॥
तस्या विविधकर्माणि विविक्तानि यथाक्रमं ।
कथ्यन्ते तान्यहोरात्रविहितानि गुरोः कृपात् (?) ॥

X X X

इति श्रीश्यामार्च्चनतरङ्गिण्यां ब्राह्ममुहूर्त्तावर्त्ते प्रथमा वीचिः निरूपिता ।

इत्यद्वैतपथिपथिकविश्वेश्वर सोमयाजिना विरचितायां श्यामार्च्चनतरङ्गिण्यां प्रातःस्नानविधिविवेचनी द्वितीयावीचिः निरूपिता ॥

X X X

इति श्री.....स्थानशुद्धयन्तरद्वारपालार्च्चनक्रमविवेचनी
तृतीया वीचिः निरूपिता ।

X X X

इति श्री.....अवरोह संहारारोह (?) रूपिणी भूतशुद्धि प्राणायाम
विवेचनी चतुर्थीवीचिः निरूपिता ।

X X X

इति श्री.....न्यासजालावर्त्ते (?) पञ्चमीवीचिः निरूपिता ।

X X X

इति श्री.....अन्तर्यजनावर्त्ते षष्ठी वीचिः निरूपिता ।

X X X

इति श्री.....मधुदानविधिनिषेधवाध्यवाधकत्वविवेचनावृत्तेः
सप्तमी वीचिः निरूपिता ॥

X X X

इति श्री.....घटस्थापनावर्त्ते द्रव्यशुद्धिविवेचनी अष्टमी वीचिः निरूपिता ॥

No colophon.

108

Catalogue No. T/18

श्यामार्च्चनतरङ्गिणी

by विश्वेश्वर सोमयाजी

Substance—Palmleaf. No. of folia—158. Size—15.7"×1.6". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Condition— good, only four folios are damaged towards the end of the manuscript. 6 to 7 lines to a page. Findspot— Paralakhemindi, Dt. Ganjam.

The text upto chapter (वीचि) 8 is same as in Catalogue No. 28.

इति श्री अद्वैतपथिपथिकेन विश्वेश्वरसोमयाजिना विरचितायां श्यामार्च्चनतरङ्गिण्यां
पूजाक्रमविवेचनी नवमी वीचिः निरूपिता ।

× × ×

इति श्री.....यजनावर्त्ते होमकर्मविवेचनी दशमी वीचिः निरूपिता।

X X X

इति श्री.....होमावर्त्ते कुण्डस्याष्टादशसंस्कार विवेचनी एकादशीवीचिः निरूपिता।

× × ×

इति श्री.....होमावर्त्ते होमप्रकारविवेचनी द्वादशी वीचिः निरूपिता।

X X X

इति श्री.....वलिदानावर्त्ते पशुप्रोक्षणविधिः त्रयोदशी वीचिः निरूपिता।

There are some folios containing a portion of स्वरोदय towards the end of the manuscript.

The contents of the work as written by the scribe at the beginning of the manuscript are given below.

ब्राह्ममुहूर्त्तकथन, कुलवृक्षवर्णन, मलापकर्षण, आसनप्रकरण, गुरुपादुकामन्त्र, भूतशुद्धिविधान, तीर्थस्नानफल, दन्तकाष्ठलक्षण, मृत्तिकाग्रहण, निषिद्धमृत्तिकालक्षण, स्नानप्रकरण, तिलकविधान, वर्णभेदतिलकग्रहण, रुद्राक्षमालाधारण, तान्त्रिकसंध्या, तर्पण, सूर्य्यार्घ्यविधि, देहशुद्धि, स्थानशुद्धि, पूजाप्रकरण भूतशुद्धौ भेदनिर्णय, द्वारपालपूजा, निषिद्धकथन, कूर्मचक्र, प्रकारान्तरे भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, प्राणायाम, अन्तर्मातृका, वाह्यमातृका, न्यासमुद्रा, प्रणवपुटितामातृका, ॐकारपूर्वमातृका, नमोन्तः विन्दुयुक्तमातृका, केवलविन्दुविसर्गप्रणवशून्यमातृका, लज्जापूर्व मातृकान्यासः, लज्जापुटितमातृकान्यास, श्रीवीजादि मातृकान्यास, श्रीपुटितमातृकान्यास, विन्दुविसर्गान्वित मातृकान्यास, कूर्चादि मातृकान्यास, श्रीकण्ठादि मातृकान्यास, कलान्यास, प्रणवोत्थित मातृकान्यास, अष्टवाग्देवतान्यास, षोढ़ान्यास, महाषोढ़ान्यास, मन्त्रषोढ़ा, मन्त्रगुप्तषोढ़ा, षोढ़ाफल, मन्त्रन्यास, अन्तर्यजन, हृदययन्त्रभावना, वहिर्याग, अष्टगन्धविवरण. कुलद्रव्य-विवरण पञ्चमकार द्रव्याणि, सन्न्यासी लक्षण, ब्रह्मचारीभेद, नैष्ठिकलक्षण, वानप्रस्थलक्षण, अवधूतलक्षण, यतीलक्षण, सामान्यार्घ्यविधि, मण्डलप्रकरण, कलशलक्षण, ब्रह्मशापमोचन, कृष्णशापविमोचन, रुद्रशापमोचन, परमहंस-मन्त्रकथन, द्रव्यशुद्धि, पञ्चद्रव्याणि.

पात्रादिक्रम, मण्डलकथन, मण्डले देवतापूजाक्रम, मांसादिद्रव्यशुद्धिकथन, भैरवदशपात्रसंस्कार, पञ्चकलान्यास, विशेषार्घ्यविधि, मांसानांफलाफलकथन, मीनशुद्धि, पञ्चमाषकथन, शक्तिलक्षण, स्वयम्भुकुसुमद्विविधकथन, मुद्रालक्षणकथन, पञ्चविधभक्षण-कथन, नीराजनकथन, कराङ्गाननशुद्धि, महाकालभैरवमन्त्र, अष्टशक्तिपूजन, अष्टभैरव कथन, गुरुतर्पणकथन, कर्मभेदे कुण्डभेद, कुण्डविशेषे फलविशेष, कुण्डानां योनिलक्षण, होमसम्भारे पात्रासादन, कुण्डानां नाभिलक्षण, स्थण्डिललक्षण, कुण्डाधृशक्तिलक्षण, अग्निजिह्वाकथन, कर्मविशेषे जिह्वाकथन, वक्त्रादिफल, स्रुवलक्षण, स्रुवधारणलक्षण, होमे प्रशस्तमुद्राकथन, कर्मभेदे नामभेद, वह्निधूमयोः शुभाशुभज्ञान, श्रीष्टदेवताहोम, वह्नेः साङ्गेष्ट-देवताहोम, देवतावलिमुद्राकथन, वलिमण्डलविधि, वटुकवलिलक्षण, क्षेत्रपालवलिविधि, योगिनीवलिविधि, भूतवलिविधि, शिवावलिविधि, महाकालवलिविधि, इष्टदेवतावलिविधि, शोणितवलिविधि, पशुसंस्कारविधि, पशुलक्षणे फलाफलकथन, पशुगायत्री, खड्गमन्त्र, पशुच्छेदन, छेदनेवर्ण्यनिषेध, रुधिरवलिविधि, नृपशुगायत्री, नीराजनानि, कुलदीपनिवेदन; शक्तिलक्षण, पञ्चपात्रनिवेदन, आवरणन्यास, आवरणपूजा, पञ्चबाणन्यास, नवरन्ध्रेषु नवशक्तिन्यास, पद्मद्वयेषोड़शकलान्यास, पञ्चमन्त्राणांन्यास, पूर्णाहूति, शक्तिपूजाफल, पुष्पाञ्जलि, दण्डप्रणामलक्षण, विसर्जन, शान्तिस्तोत्र ।

109

Catalogue No. T/67 (b)

श्यामार्च्चनतरङ्गिणी

by विश्वेश्वर सोमयाजी

Substance—Palmleaf. No, of folia--87. Size—11.1″ × 1.3″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete, upto 14th Vīchi or chapter. Condition— left side of the manuscript is totally broken. 4 to 5 lines to a page. Findspot— Godamānitri, P. S. Khurdha, Dt. Puri.

Text same as in catalogue no. T/28.

No colophon.

110

Catalogue No. T/75

श्यामार्च्चनतरङ्गिणी

by विश्वेश्वर सोमयाजी

Substance—Palmleaf. No. of folia—107. size—15.4"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 16th Vichi or chapter. Condition—· almost all folios are slightly worm eaten. 5 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Text is same upto 13th Vichi as in catalogue no. T/28.

इति श्री अद्वैतपथिपथिकेन विश्वेश्वरसोमयाजिना विरचितायां श्यामार्च्चनतरङ्गिण्यां बलिदानावर्त्ते पशुप्रोक्षणविधिर्नाम चतुर्दशी वीचिः निरूपिता।

X X X

इति श्री·····दूतीयजनावर्त्ते पञ्चदशी वीचिः निरूपिता॥

× × ×

इत्यद्वैतपथिपथिकेन विश्वेश्वरसोमयाजिना विरचितायां श्रीश्यामार्च्चनतरङ्गिण्यां पूजावर्त्ते दूतीयागे प्रसादग्रहणे षोड़शी वीचिः निरूपिता॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

Colophon— भीमस्यापि रणेभङ्गो मुनेरपि मतिभ्रमः।
यतिशुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न विद्यते॥

111

Catalogue No. T/9 (g)

श्यामारहस्यम्

by परमहंसपूर्णानन्दगिरि

Substance—Palmleaf. No. of folia—59. Size—14.7"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Incomplete, from 5th Parichheda to 21st Parichheda or chapter. Condition— Fair. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीपूर्णानन्दपरमहंसविरचिते श्यामारहस्ये पुरश्चरणविधिर्नाम पञ्चमः परिच्छेदः ।

इति श्री.....मन्त्रभेदविवरणं नाम षष्ठः परिच्छेदः ।

इति श्री.....विद्यामाहात्म्यं नाम सप्तमः परिच्छेदः ।

इति श्री..... पुरुषार्थसाधनं नामाष्टमः परिच्छेदः ।

इति श्री..... X X X नवमः परिच्छेदः ।

X X X

इति श्री परमहंसपूर्णानन्दगिरिविरचिते श्यामारहस्ये एकविंशतितमः परिच्छेदः ।

No colophon.

112

Catalogue No. T/44 (a)

श्यामारहस्यम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—12. Size—14.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. 7 to 8 lines to a page. Incomplete. Condition—good. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

इति शिवश्यामारहस्ये काम्यहोमकुण्डनिर्माणादिविवरणं नाम षष्ठः परिच्छेदः ।

No colophon.

113

Catalogue No. T/54 (a)

श्यामारहस्यम्

by परमहंस पूर्णानन्द यती

Substance—Palmleaf. No. of folia—85. size—15 5"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete, upto 17th Parichhcda or chapter. Condition—good. 6 lines to a page. Findspot—Khurdha area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

देवीं दानवदैत्यवर्ग निवहानुन्मूलयन्तीं शिवां ।
ब्रह्मानन्तमहेशमौलिमणिभिः संशोभितांघ्रि द्वयाम् ॥
नत्वा श्रीगुरुपादपद्मपरमानन्दामृतप्लावितः ।
पूर्णानन्दयति स्तनोति विमलां श्यामारहस्याभिधाम् ॥
स्वतन्त्रं परतन्त्रं च फेत्कारीतन्त्रमेवच ।
कालिकाकुलसर्वस्वं कालीतन्त्रं च यामलम् ॥
कुलचूड़ामणिं चैव कुमारीतन्त्रमेवच ।
कुलार्णवं तथा कालीकल्पं भैरवतन्त्रकम् ॥
कालिकाकुलसद्भावं तथा चोत्तरतन्त्रकं ।
गुरुणां च मतं ज्ञात्वा साधकानां मतं तथा ॥
शुद्धबुद्धिस्वभावार्थं वक्ष्यामि मोक्षकारिणीं ।
दक्षिणां कालिकां देवीं सर्वसिद्धिप्रदायिनीम् ॥

X X X

इति श्रीपूर्णानन्दपरमहंसपरिव्राजकाचार्य्यविरचिते श्यामारहस्ये न्यासविवरणं नाम प्रथमः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... अन्तर्यजनविवरणं नाम द्वितीयः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... सपर्य्याविधिर्नाम तृतीयः परिच्छेदः ।

इति श्रीमहामहोपाध्यायपरमहंस श्रीपूर्णानन्दगिरिविरचिते श्रीश्यामारहस्ये स्तोत्रादिकथनं नाम चतुर्थः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... पुरश्चरणविधिर्नाम पञ्चमः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... मन्त्रभेदप्रकरणं नाम षष्ठः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... विद्यामाहात्म्यकथनं नाम सप्तमः परिच्छेद. ।

इति श्री ... ... पुरुषार्थसाधनविवरणं नाम अष्टमः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... कुण्डगोलादुत्पादको नाम (?) नवमः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... सामान्यसाधनविवरणं नाम दशमः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... पुरश्चरणसिद्ध्युपायः नाम एकादशः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... काम्यप्रयोगविवरण नाम द्वादशः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... X X X त्रयोदशः परिच्छेदः ।

इति श्री ... ... प्रकारान्तरसाधनविवरणं नाम पञ्चदशः परिच्छेदः ।
इति श्री ... ... काम्यहोमकुण्डादि विवरणं नाम षोड़शः परिच्छेदः ।
इति श्री ... ... वेतालसिद्धिविवरणं नाम सप्तदशः परिच्छेदः ।

No colophon.

114

Catalogue No. T/57 (a)

श्यामारहस्यम्

by पूर्णानन्दपरमहंस

Substance— Palmleaf. No. of folia—111. Size—14.8"×1.4" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. 5 lines to a page. Complete, upto 14th Parichheda or chapter. Condition— moth eaten. Findspot— Gaḍamānitri, P.S. Khurdha, Dt. Puri.

Text same as in catalogue no. T/54 (a)

No colophon.

115

Catalogue No. T 63

श्यामारहस्यम्

by पूर्णानन्दपरमहंस

Substance—Palmleaf. No. of folia—94. Size—15.8" × 1.3". Character—Oriya. Date of scribe—38th Amka year of Mukunda Deva, the Gajapati King of Khurūha dynasty or C. 17th century. Name of scribe—Kṛshna Miśra. Complete upto 18th Parichheda or chapter. Condition—one edge of the manuscript is badly worm eaten. 5 lines to a page. Findspot—Jagatsimhapur area, Dt. Cuttack.

Text same as in Catalogue No. T 54 (a) except the 18th chapter.

इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्रीपूर्णानन्दगिरिविरचिते श्यामारहस्ये फलप्रकार-कथनं नाम अष्टादशः परिच्छेदः ।

Colophon— समस्त मुकुन्ददेवङ्क अठतिरिश अङ्क चैत्र कृष्णत्रयोदशी रविवारे नृसिंहपुर शासनर महाजन कृष्णमिश्रेण लिखितं इदं पुस्तकं समाप्तम् । श्रीअर्द्धनारीश्वर शरणं मम ।

116

Catalogue No. T/73

श्यामारहस्यम्

by पूर्णानन्दगिरि

Substance—Palmleaf. No. of folia—138. size—15.8" × 1.3". Character—Oriya. Date of scribe—C. 19th century. Complete, upto 18th Parichheda or chapter. Condition— good. 4 lines to a page. Findspot—Ranapur area, Dt. Puri.

Text same as in Catalogue No. T/63.

There are some folios containing पूजाधसाने भगवत्याःक्रमः towards the end of the manuscript.

No colophon.

117

Catalogue No. T/8 (c)

सनत्कुमारसंहिता

Substance—Palmleaf. No. of folia—15. size—14.8" × 1.3". Char cter—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 21st chapter, Conditon—good. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

देवदेव महादेव त्रिपुरघ्न सुरान्तक ।
अतिगुप्ततरं रूपं कथयस्व ममप्रभो !

X X X

इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां अतिरहस्ये द्वितीयखण्डे कलञ्जमाहात्म्यं नाम प्रथम अध्यायः।

X X X

End— इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां अतिरहस्ये द्वितीयखण्डे एकविंशोऽध्यायः।

No colophon.

118

Catalogue No. T/61

सांख्यायनतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—33. Size—15.9″×1.4″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete, upto 18th Chapter or Patala. Condition— good. 4 lines to a page. Findspot— Sāna Khemindi, Dt. Ganjam.

Beginning — ॐ नमः पीताम्बरायै।

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी—
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥

क्रौञ्चभेदनोवाच—

कैलासशिखरासीनं गौरीवामाङ्कसंस्थितं ।
भारतीपतिवाल्मीकिशेषसंयुतमीश्वरम् ।
अष्टदिक्पालकेशिष्टविन्धेशाष्टकसोवितं
भैरवाष्टयुतं देवं मातृमण्डलवेष्टितम् ।
महापाशुपतं क्रान्तं प्रमथैः प्रवृत्तं प्रभुं
नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च इदं वचनमब्रवीत ॥

X X X

नानामायाविनश्चैव जेतुमिच्छामि राक्षसान् ।
तस्योपायं च तद्विद्यां वद मे करुणाकर ॥
पुत्रोऽहं तवशिष्योऽहं ब्रूयाः पात्रोहमेवच ।

X X X

इति श्री षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे प्रथमः पटलः ।

X X X

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगकङ्कण !
वद दीक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनादिभिः ।

इति श्री षड़विद्यागमे सांख्यायनत·त्रे द्वितीयः पटलः ॥

X X X

पूजाधारणयन्त्रज्ञ सर्वमन्त्रविशारद !
अभिषेकविधिं तात वद मे करुणाकर ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे तृतीयः पटलः ।

X X X

गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गौरीपते नमोनमः ।
ब्रह्मास्त्रमन्त्रं सन्ध्यां च वद मे करुणाकर ॥

इति श्री.....सांख्ययनतन्त्रे चतुर्थः पटलः ।

X X X

नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ भस्मोद्धूलितविग्रह !
एकाक्षरी महामन्त्रं वगलाख्यं महाप्रभो ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे पञ्चमः पटलः ।

X X X

एकाक्षरमहामन्त्रप्रयोगं वद शङ्कर !

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे षष्ठः पटलः ॥

X X X

षट्त्रिंशदक्षरीविद्यावगलायाश्च मे वद ॥

इति श्री..... ...सांख्यायनतन्त्रे सप्तमः पटलः ॥

X X X

नमः कौलगमाचार्य्य वेदवेदाङ्गपारग ।
वगलामन्त्रराजस्य प्रयोगं वद शङ्कर ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे अष्टमः पटलः ॥

X X X

एतन्मनोयन्त्रसखण्डितेषु प्रयोगमूलं वद चन्द्रचूड़ ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे नवमः पटलः ॥

× × ×

वद प्रयोगंमन्त्रस्य लेपनक्रममादरात् ।
इति श्री .....सांख्यायनतन्त्रे दशमः पटलः ।

X X X

तर्पणं च प्रयोगं च वद मे करुणाकर ।
इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे एकादशः पटलः ॥

X X X

गायत्रीं वगजाख्यां च वद मे करुणाकर ।
इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे द्वादशः पटलः ।

× × ×

शान्तं वरदं मे पूजां वगलायाश्च शङ्कर ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे त्रयोदशः पटलः ॥

X X X

वगलाया विधिं चैव वद मे करुणाकर ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे चतुर्दशः पटलः ॥

X X X

पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तम्भनाख्यान् च पावनान् ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे पञ्चदशः पटलः ॥

X X X

अधुना चास्त्रविस्तारं वद मे करुणाकर ।

इति श्री ..... सांख्यायनतन्त्रे षोड़शः पटलः ।

X X X

शताक्षरमहामन्त्रं वगलायाश्च मे वद ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे सप्तदशः पटलः ।

X X X

End— चन्द्रचूड़ नमस्तेऽस्तु प्रयोगं वद मे प्रभो ।

इति श्री षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टादशः पटलः ।

No colophon.

119

Catalogue No. T/78

सांख्यायनतन्त्रम्

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—199. size—7.5"×1.5". Character—Oriya. Date of copy— Sana 1326 Sāla. Name of scribe— Gopīnātha Miśra. Incomplete. Condition—worm eaten. 4to 6 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Text upto 18th patala is same as in Catalogue No. T/61 except the following chapters which are described below.

प्रयोगं चोपसंहारं वद मे सर्वमङ्गल !

इति श्री षट्त्रिंशद्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे एकोनविंशतितमपटलः ।

X X X

पराविद्यादि भेदं च वगलायाश्च मे वद ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे विंशतिमपटलः ॥

X X X

पराविद्याकर्षणं च प्रयोगं वद शङ्कर ॥

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे एकविंशतितमपटलः ।

X X X

वगलास्त्रं वदस्माकं मयि स्वल्पं च गौरवात् (?)

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे द्वाविंशपटलः ॥

X X X

महामन्त्रैः वगलास्त्रं प्रयोगान् वद शङ्कर ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे त्रयोविंशपटलः ।

× × ×

सुगमं स्तम्भविद्यायाः प्रयोगं वद शङ्कर !

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे चतुर्विंशपटलः ।

X X X

लक्षणं वद मे देव वगलामन्त्रमालिका ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे पञ्चविंशपटलः ।

X X X

वगला चतुरर्क्षयः (?) प्रयोगं वद शङ्कर ।

इति श्री.....सांख्यायनतन्त्रे षड्विंशतितमपटलः ।

X X X

वक्ष्ये होमविधिं सम्यक् सावधानेन श्रूयतां ।

इति श्री..... सांख्यायनतन्त्रे सप्तविंशपटलः ।

X X X

End— इति श्रीषट्त्रिंशविद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टविंशपटलः ।

There are some folios containing Tantra sāra by Kṛshṇānanda Āgamavāgīśa and Vagalā Pūjā prayoga towards the end of the manuscript.

Colophon— सन् १३२६ साल ककड़ा दि २२ न श्रावण शुक्लदशमी वुधवार ठारु स्वामीङ्क पुस्तककु पहराजे लेखिले। गोपीनाथ मिश्रे दवार ..... सप्तमी दिन।

120

Catalogue No. T/8 (b)

सारोद्धारः

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—20. Size—14.8"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete, upto 5th Patala. Condition— good. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीकुलार्णवेमहारहस्ये सारोद्धारे प्रथमः पटलः ।

X X X

इति श्रीकुलार्णवमहारहस्ये सारोद्धारे द्रव्यसंस्कारकथनं नाम द्वितीयः पटलः।

X X X

इति श्रीकुलार्णवमहारहस्ये सारोद्धारे पूजाविधानकथनं नाम तृतीयः पटलः ।

× × ×

इति श्री.....कुलाचारविधिर्नाम चतुर्थः पटलः।

X X X

इति श्री..... ...कुलाचारविधिर्नाम पञ्चमः पटलः ॥

There are some folios containing Kālasāra samgraha according to Somabhujangāvali towards the end of the manuscript.

No colophon.

121

Catalogue No. T/2 (a)

हठप्रदीपिका

by स्वात्मारामयोगी

Substance—Palmleaf. No. of folia—51. Size—13.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—good. 3 to 5 lines to a page. Findspot—Sākshigopāl, Dt. Puri.

इति श्रीस्वात्मारामयोगिविरचितायां हठप्रदीपिकायां प्रथमोपदेशः ।

X X X

इति श्रीस्वात्मारामयोगिविरचितायां हठप्रदीपिकायां चतुर्थोपदेशः ।

There are some folios containing Maheśa Samhitā and Brahmānda Nirnaya at the beginning of the manuscript.

No colophon.

122

Catalogue No. T/80

ज्ञानवल्लीतन्त्रम्

by लक्ष्मेश्वर

S/o गङ्गाधर विप्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—142. size—15.9"×1.5". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Condition—slightly worm eaten. 6 to 8 lines to a page. Findspot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्रीमत् परमदेवताभ्यो नमः ।

सर्वविघ्नविनाशाय ग्रन्थारम्भे विशेषतः ।
पार्वतीहृदयानन्दं तं वन्दे शिवनन्दनम् ॥

श्रीनाथचरणाम्भोजं तं वन्दे करुणालयं ।
भक्तानां जड़वुद्धीना मज्ञानारुणसारथिम् ॥
कुलदेवीं रथीख्वीना (?) मोड़देशनिवासिनीं ।
जगतः कारिणीं मायां वन्दे तां भुवनेश्वरीम् ॥

X X X

श्रीदीक्षागुरुपादपद्मयुगलाभ्यासागमाह्लादितो
ग्रन्थं चागमसम्भवां वरमतिः क्षिप्रं करोति क्षितौ ।
यस्मात् श्रीभुवनेश्वरी मनुधरो नाम्नापि लक्ष्मेश्वरः
श्रीगङ्गाधरनामविप्रतनयः श्रीज्ञानवल्लीं नृणाम् ॥

X X X

इति श्रीज्ञानवल्यां ... ... प्रथमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां गुरुलक्षणं नाम द्वितीय प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां दीक्षाप्रसङ्गे सिद्धादिचक्रविचारस्तृतीयः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां दीक्षाप्रसङ्गे मासादिनिर्णयश्चतुर्थः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां कुण्डमण्डपविधिर्नाम पञ्चमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां होमपद्धतिर्नाम षष्ठ प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पुरश्चरणकाले स्थाननियमं नाम सप्तमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पुरश्चरणकाले भक्षाभक्षनिर्णयोनामाष्टमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां मालालक्षणं नाम नवमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां मालालक्षणं नाम दशमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां कूर्मचक्रनिर्णयो नाम एकादशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पुरश्चरणप्रयोगविधिर्नाम द्वादशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पुरश्चरणो नाम त्रयोदशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां सपर्य्यावाक्यविधिर्नाम चतुर्दशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पुष्पनियमो नाम पञ्चदशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां X X X X षोड़शः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां मन्त्रोद्धारवाक्यसंग्रहः सप्तदशः प्रकाशः ।

X X X

इति श्रीज्ञानवल्यां स्तुतिनिरूपणो नाम विंशतितमः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां वालामन्त्रोद्धारो नाम एकविंशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां वालापूजा प्रकरणं नाम द्वाविंशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पञ्चसुन्दरीप्रकरणं नाम त्रयोविंशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां वालाकवचस्तुतिनिरूपणं नाम चतुर्विंशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां पराविद्यायाः मन्त्रोद्धारो नाम पञ्चविंशः प्रकाशः ।
इति श्रीज्ञानवल्यां X X X षडविंशः प्रकाशः ।

The author has quoted the following authorities in his work.

1—अगस्तिसंहिता, 2—आगमसार, 3—आगमकल्पद्रुम, 4—आग्नेयसंहिता, 5—इतिहास समुच्चय, 6—एकवीराकल्प 7—कालिकापुराण, 8—कालीकल्प, 9—कालीक्रम, 10—कालीतन्त्र, 11—कालीहृदय, 12—क्रियासार, 13—कुमारीतन्त्र, 14—कुलचूड़ामणि, 15—कुलामृत, 16—कुलार्णव, 17—कुलोड्डीशतन्त्र, 18—गन्धर्वतन्त्र, 19—गवाक्षतन्त्र, 20—गोविन्द वृन्दावन, 21—गौतमीय, 22—चामुण्डाकल्प, 23—छिन्नमस्ताकल्प, 24—तत्त्वबोध, 25—तन्त्रचूड़ामणि, 26—तन्त्ररत्न, 27—तन्त्ररत्नावली, 28—तन्त्रराजतन्त्र, 29—तन्त्रसार, 30—ताराकल्प, 31—ताराप्रदीप, 32—तारारहस्य, 33—तारा श्रीविद्याविषय, 34—तारार्णव, 35—त्रिपुरारत्नाकर, 36—दक्षिणामूर्त्तिसंहिता, 37—देवीयामल, 38—नारदीयकल्प, 39—नारायणीय, 40—नीलसारस्वततन्त्र, 41—नृसिंहतापनीय, 42- पुरश्चरणचन्द्रिका, 43—फेत्कारिणीतन्त्र, 44—ब्रह्मयामल, 45—ब्रह्माण्डपुराण, 46—भावचूड़ामणि, 47—भावार्णव 48—भैरवतन्त्र, 49 भैरवीतन्त्र, 50—मङ्गलातन्त्र, 51—मत्स्यसूक्त, 52—मन्त्रतन्त्रप्रकाश, 53—मन्त्रदेवप्रकाशिका, 54—मन्त्रमुक्तावली, 55—मन्त्रवरसंहिता, 56—मानसोल्लासतन्त्र, 57—मायातन्त्र, 58—मार्कण्डेयपुराण, 59—मालिनीविजयतन्त्र, 60—मुण्डमालातन्त्र, 61—याज्ञवल्क्य, 62—योगरत्नावली, 63—योगिनीजालसम्बर, 64—योगितीतन्त्र, 65—योगिनीहृदय, 66—राघवभट्ट, 67-राजमार्त्तण्ड, 68—रामार्चनचन्द्रिका, 69—रुद्रयामल, 70—वनदुर्गाकल्प, 71—वशिष्ठ, 72 वायवीयसंहिता, 73 वाराहीतन्त्र, 74—विशुद्धेश्वरतन्त्र, 75—विश्वसार, 76—विष्णुपुराण, 77—विष्णुयामल, 78—विष्णुहृदय, 79—वीरतन्त्र, 80—बृहद्गौतमीय, 81—बृहत्क्रम, 82—शक्तियामल, 83—शारदातिलक, 84—शिवचिन्तामणि, 85—शिवपुराण, 86—श्रीक्रम, 87—श्रीमद्भगवद्गीता. 88—श्रीमद्भागवत, 89—सनत्कुमारतन्त्र, 90—सनत्कुमारसंहिता, 91—समयातन्त्र,

92—सम्मोहनतन्त्र, 93—स्वच्छन्दमाहेश्वरतन्त्र, 94—स्वतन्त्रतन्त्र, 95—स्कन्धपुराण, 96—सारसंग्रह, 97—सिद्धान्तशेखर, 98—सिद्धेश्वरीतन्त्र, 99—हयशीर्ष, 100—हरिवंश, 101—ज्ञानार्णव।

There are some folios containing Chakroddhāra Vidhi towards the end of the manuscript.

No colophon.

123

Catalogue No. H/12

ज्ञानार्णवतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—91. size—15.3" × 1.4", Character—Devanāgari. Date of copy—C. 18th century. Upto 23rd chapter. Conditon—badly worm eaten. 4 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीज्ञानार्णवनित्यातन्त्रे X X X प्रथमः पटलः।

X X X

इति श्रीज्ञानार्णवनित्यातन्त्रे वालार्च्चनविधि श्चतुर्थः पटलः।

X X X

इति श्री.....तिपुरेश्वरीवालायजनविधिः पञ्चमः पटलः।
इति श्री..... .....पूर्वसिंहासनविधिः षष्ठः पटलः।
इति श्री.... .....रुद्रभैरवीविधिः सप्तमः पटलः।
इति श्री.....तृतीयसिंहासनविधिः अष्टमः पटलः।

End— इति श्रीज्ञानार्णवनित्यातन्त्रे दमनारोपण विधिः त्रयोविंशः पटलः।

No colophon.

There are 72 folios containing Tatva Chintāmaṇi by Purṇṇānanda Paramahamsa towards the end of the manuscript.

इति श्रीपूर्णानन्दपरमहंसविरचिते श्रीतत्त्वचिन्तामणौ दशमः प्रकाशः ।

अथातः कीर्त्तितां विद्यां
शान्तां परम दुर्ल्लभाम् ।
ऊर्द्ध्वाम्नाये महातन्त्रे
शिवेन परकीर्त्तिताम् ॥

No colophon.

Supplement*

1

Catalogue No. B.S./68

आनन्दपटलः

Substance—Old paper. No. of pages—50. size—15.3" × 4". Character—old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—good. 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

Beginning— ॐ नमः परदेवतायै ।

श्री देव्युवाच—

देव देव महादेव रुद्रकारुणिक प्रभो !
इदानीं श्रोतुमिच्छामि आनन्दपटलं महत् ॥

End— इत्यानन्दपटले हरगौरीसम्वादे कुलाभिषेकं नाम नवमः पटलः समाप्तः ।

Colophon— लिखितं श्रीहाराधन त्रिवेदिना, ज्येष्ठस्य सप्तमदिनमिति ।

2

Catalogue No. B.S./57

आनन्दलहरी

by शङ्कराचार्य्य

Substance—Old paper. No. of pages—27. size—12.9"×3.7". Character—Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition—good. 6 lines to a page. Findspot—West Bengal.

---

* The manuscripts which have been acquired recently after the compilation of this catalogue have been noticed in this supplement in order to make this volume as far as possible up-to-date and more informative.

End— इतिश्री शङ्कराचार्य्यविरचितं आनन्दलहरीस्तोत्रं समाप्तम् ।

Colophon— ॐ नमः परदेवतायै, ॐ गुरवे नमः ।

3

Catalogue No. T/111 (a)

उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—25. Size—15 2" × 1.3". Character—Oriya. Date of copy— 64th Aṁka year of Virakeśarī Deva I or 18th century. Complete upto 10th Paṭala. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot— Pātapur Śāsana, Dt. Puri.

End— इत्युड्डामरेश्वरमहातन्त्रे हरपार्वतीसम्वादे दशमः पटलः ।

There are two folios containing Dākinī Damana & Yakshiṇī Sādhana towards the end of the manuscript.

Colophon— श्री वीरकेशरी देवङ्क अ ६४ ङ्क मकर दि ८ ने लेखा आरम्भ हेला माघ कृष्ण तृतीया शुक्रवारे ।

4

Catalogue No. T/84

उड्डीशतन्त्रम्

or

उड्डामरेश्वर महातन्त्रम्

Substance— Palmleaf. No. of folia—46. Size—14."6×1.2" Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition— some folios are broken. 5 lines to a page. Findspot— Village/P.O. Gadamānitri, Dt. Puri.

No colophon.

5

Catalogue No. B.S./73

उत्तरतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—22. Size—15.4"×3.5". Character—Old Bengali. Date of copy— C. 19th century. Condition— good. Complete up to 10th Patala. 6 lines to a page. Findspot— West-Bengal.

इत्युत्तरतन्त्रे हरगौरीसम्वादे दशमः पटलः । ॐ हरये नमः ।

6

Catalogue No. B.S./75

कामधेनु तन्त्रम

Substance—Old paper. No. of pages—132. Size - 16.1"×3.7". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Complete upto 21st Patala. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीकामधेनुतन्त्रे हरपार्वती सम्वादे एकविंशतितमः पटलः ।

No colophon.

7

Catalogue No. T/107 (b)

काम्यरत्नम्

by श्रीनाथ

Substance—Palmleaf. No. of folia—50. Size—13.7"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—not good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीनाथविरचिते काम्यरत्ने काम्यसिद्ध्यादि अनावृष्टिनिवारणं नाम द्वादशः परिच्छेदः ।

No colophon.

8

Catalogue No. B.S./72

कालीतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—24. Size—12.6"×4". Character—Old Bengali. Date of copy—C.18th century. Complete upto 10th Patala. Condition—good. 10 to 12 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्री कालीतन्त्रे सिद्धविद्यापटले दशम: पटल: ।

No colophon.

9

Catalogue No. T/86

कालीसपर्य्याविधिः

Substance—Palmleaf. No. of folia—86. Size—7.4"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Godamanitri, Dt. Puri.

No colophon.

10

Catalogue No. T/102

कालीसपर्य्याविधिः

Substance—Palmleaf. No. of folia—82. Size—12.2"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—slightly moth eaten. 6 lines to a page. Findspot—Patapur Śāsana Dt. Puri.

इति श्री कालिका देव्या: सपर्य्याविधि: ।

There are some folios containing Vivāha Paddhati at the beginning of the manuscript.

No colophon.

11

Catalogue No. B.S./56

कालीस्वरूप सहस्रनाम

by आदिनाथ

Substance—Old paper No. of pages—36. Size—16.3" × 3.5". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Name of scribe— Śiva Chandra Śarmā. Complete. Condition— good. 6 to 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीमदादिनाथविरचितायां महाकालसंहितायां कालीकुलसम्बादे सुन्दरी-शक्तिदानाख्यं कालीस्वरूपसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

Colophon— ॐ तत् सत् मस्तु । ॐ महाकालसहितं महाकाल्यै नमः । लिखितं श्रीशिवचन्द्र शर्म्मा । दासोऽहं शरणागतः ।

12

Catalogue No. T/107 (b)

कौतुकचिन्तामणिः

Substance—Palmleaf. No. of folia –61. Size—13.7"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—Fair. 4 lines to a page. Findspot Puri town,

इति श्री कौतुकचिन्तामणौ कौतुककथनं समाप्तम् ।

No colophon.

13

Catalogue No. B.S./71

गुप्तसाधनतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—18. Size—15"×3 9". Character—Old Bengali. Date of copy—C 19th century. Complete upto 9th Patala. Condition—good. 7 to 10 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे नवमः पटलः ।

श्री गुरुदेव पादपद्म भरसा ।

No colophon.

14

Catalogue No. T/109 (a)

गुप्तसाधनतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—36 Size - 12.7"×1.1". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Complete upto 9th Patala. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

No colophon.

15

Catalogue No. B.S./59

गोपालपूजाप्रयोग विधानम्

According to सनत्कुमारतन्त्र

Substance—Old paper. No. of pages—22. Size—17.4"×4.4". Character—Old Bengali. Date of copy – C. 19th century. Name of scribe— Rādhākānta. Complete upto 11th Patala. Condition– good. Findspot – West Bengal.

इति श्रीसनत्कुमारीयतन्त्रे सनत्कुमारपुलस्त्यसम्वादे श्रीगोपालपूजाप्रयोगविधानं नाम एकादशः पटलः समाप्तः ।

Colophon— सनत्कुमारतन्त्रं श्रीराधाकान्त द्विजो लिखित् ।

16

Catalogue No. B.S./69

ग्रहपुरश्चरणविधिः

According to साधुसङ्कलिनीतन्त्र

Substance—Old paper. No. of pages—20. Size—15.8"×4". Character—

Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Condition—Fair. 6 to 7 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्री साधुसङ्कुलिनीतन्त्रे ग्रहाणां पुरश्चरणविधिः सम्पूर्णः ।

सूर्य्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ।

No colophon.

17

Catalogue No. B.S./84

तन्त्रदीपिका

by गोपालतर्कपञ्चानन

Substance—Old paper. No. of pages-820. Size—16.6"×3.5". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Condition—good. 6 to 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

Beginning— ॐ नमो गणेशाय—

नित्यं प्रणम्य चिद्रूपं नित्यानन्दं च निर्गुणम् ।
अखण्डं परमानन्दं गुरुं ब्रह्ममयं तथा ॥
विलोक्यागमशास्त्राणि विविधान् संग्रहानपि ।
श्रुतिस्मृतिविविधानि ज्ञानस्य कारणानि च ॥
आगमवागीशपौत्रेण हरिनाथस्य सूनुना ।
श्रीगोपालेन विज्ञेन कृतेयं तन्त्रदीपिका ॥

No colophon.

18

Catalogue No. T/104

तन्त्ररत्नम

by हरिहर मिश्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—28. Size—16.7"×1.4". Character—

Oriya. Date of copy— C. 19th century. Incomplete. Condition good 5 to 8 lines to a page. Findspot—At/P.O. Alasana, Dt Puri.

इति श्रीहरिहरमिश्रविरचिते तन्त्ररत्ने सामान्यखण्डे दीक्षायामावश्यकत्वविधान-कथनं नाम प्रथमोऽङ्कः ।

No colophon.

19

Catalogue No. B. S./79

तन्त्रसारः

by कृष्णानन्द आगमवागीश

Substance—Old paper. No of pages—536. Size –17.3"×6". Character—Old Bengali. Date of copy—Saka 1730 or 1808 A.D. Name of scribe—Kamalā Kānta Tarka Chūdāmaṇi of Bamsavāti, West Bengal. Complete. Condition—good. 8 to 10 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीमहामहोपाध्यायश्रीकृष्णानन्दभट्टाचार्य्यविरचिते तृतीयकाण्डे तन्त्रसार-ग्रन्थोऽयं समाप्तः ।

Colophon— गङ्गार पश्चिमभागे पुण्य क्षेत्रवर ।
वंशवाटी नामे ग्राम ख्याते चराचर ॥
ताहे वास महाशय सर्वगुणे गुणी ।
द्विजेश कमलाकान्त तर्कचूड़ामणि ॥
सारात्सार तर तन्त्रसार ग्रन्थवर ।
आज्ञाकैल लिखिवारे करियाँ आदर ॥

X X X

सकाब्द चतुरङ्क सतर तिरिश ।
माघमासे गतदिने हइलो पचिश ॥

श्रीकृष्णजयति, श्रीदुर्गाजयति ।

20

Catalogue No. T/83

तन्त्रसारः

by कृष्णानन्द

Substance—Palmleaf. No. of folia—157. size—16 2" × 1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Name of scribe—Dayānidhi Sarmā. Complete Conditon—some folios are worm eaten. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीमहामहोपाध्यायश्रीकृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य्यकृतः तन्त्रसारः ।

Colophon— वशिष्ठवंशोभवेन श्रीदयानिधिशर्म्मणा लिखितं पुस्तकमिदम् ।

21

Catalogue No. T/108

तन्त्रसारः

by कृष्णानन्द

Substance— Palmleaf. No. of folia—8. Size—17.2"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—Vikrama Sambat 1969 or 1912 A.D. Name of scribe— Kṛpāsindhu. Incomplete. Condition— worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

Colophon — वेदान्तं सर्वशास्त्रं लिखति च सततं
तन्त्रसारं पुराणम् ।
श्रीमद् वीराग्रपूज्यः द्विजगणतिलकः
श्रीकृपासिन्धुनामा ॥

वैशाख शुक्लाष्टमी बुधवारे समाप्त, विक्रमादित्याब्द--१९६९ ।

22

Catalogue No. T/99

तन्त्रोक्तदेवीपूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—113. Sixe—9.1"×1.3". Character—

Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete Condition—good. 6 to 7 lines to a page. Findspot—Puri town.

There are some folios containing Śrīchandī towards the end of the manuscript.

No colophon.

23

Catalogue No. BS/86

तन्त्रोक्तपूजा

Substance—Old paper No. of pages—26. size—11.2"×4.2". Character—Bengali. Date of copy— C. 20th century. 7 lines to a page. Findspot—West Bengal.

No colophon.

24

Catalogue No. T/96

तारिणीकुलसुधातरङ्गिणी

by रामचन्द्र उद्गाता

Substance—Palmleaf. No. of folia—93. Size—16.1"×1.5". Character—Oriya. Date of copy— 53rd Amka year of the Gajapati King Vīra Keśarī Deva I or 1772 A.D. Name of scribe—Keśava Ratha, S/o Indra Ratha. Complete. Condition— some folios are moth eaten. 5 to 6 lines to a page. Findspot— Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री लिङ्गराजशरणम् ।

नमद्देवराजं सुहृद्राजराजं
शिरोराजराजं सुरेन्द्राधिराजम् ।
समन्ताद् विराजन्नभःसत् समाजं
सदैकाम्रभाजं भजेल्लिङ्गराजम् ॥

X X X

सीधुपान परिजात चञ्चलां मस्तकावलिसुशोभितोज्वलाम् ।
नागपुङ्गवकृतोरुकुण्डलां X X X X ॥

X X X

तन्त्रवृन्दमवलोक्यसादरं तारिणीकुलसुधातरङ्गिणीम्
उच्चगायनकुलोद्भवोद्विजः संननोति भुविरामचन्द्रमाः ॥

X X X

इति श्रीरामचन्द्रोद्गातृकृततारिणीकुलसुधातरङ्गिण्यां प्रातकृत्यादि···प्रथम स्तरङ्गः ।

X X X

इति श्रीरामचन्द्रोद्गातृकृततारिणीकुलसुधातरङ्गिण्यां अन्तर्यजनादिद्रव्यशुद्ध यन्तो-नाम तृतीयस्तरङ्गः ।

End— इति श्रीरामचन्द्रोद्गातृकृततारिणीकुलसुधातरङ्गिण्यां वलिदानमधुदानादिप्रकार कथनं नाम द्वादशस्तरङ्गः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

Colophon— लिखितं पुस्तकश्रेष्ठं विद्यावागीशधीमता ।
प्रीतये लिङ्गराजस्य····· ··· ॥
श्रीवीरकेशरीनृपस्य गुणेपुअङ्के ।
मासाश्विने विधुदिने च महानवस्यां ॥
श्रीतारिणीकुलसुधाधुनिसंज्ञपुस्तं ।
श्रीकेशवाख्यरथशक्रसुतो लिलेख ॥

There are some folios containing Vagalā Prayoga, Sivapurāṇa (only two chapters), Sakala mantra śāstra sāra samgraha (only one patala) and Amara vistara by Maladhara Mishra (only Svargavarga) towards the end of Manuscripts.

25

Catalogue No. B.S./62

तोडलतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—32. Size—14.9"×4". Character—

Old Bengali. Date of copy— Sana 1259 Sāla or 1852/53. Name of scribe—Hārādhana Trivedī. Complete up to 10th Patala. Condition—good. 7 to 8 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीतोड़लतन्त्रे देवीश्वरसम्बादे नवम: पटल: ।

Colophon— लिखितं श्रीहाराधनत्रिवेदी, सन १२५६ X X X तारिख ११ चैत्र ।

26

Catalogue No. T/109 (b)

तोडलतन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—8. Size—12.7"×1.1". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete up to 5th Patala. Condition—good. 5 to 7 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीतोडलतन्त्रे पञ्चम: पटल: ।

No colophon.

27

Catalogue No. T.88

दशमहाविद्यापूजा

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—91. Size—18.1"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—badly worm eaten. 6 to 8 lines to a page. Findspot—Puri town.

There are some folios containing Mantrārtha Dīpikā by Govinda Nyāyavāgīśabhattāchārya, Rāmachandra Mantravivaraṇa and others towards the end of the manuscript.

No colophon.

28

Catalogue No. T/89

दशमहाविद्यामन्त्रयन्त्रोद्धारः

Substance– Palmleaf. No. of folia—92. Size –13."7×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition– both the sides are worm eaten. 3 to 4 lines to a page. Findspot—National Museum, New Delhi.

There are some folios containing Kāmya Ratna & Sudaśā Vrata & others towards the end of the manuscript.

No colophon.

29

Catalogue No. T/112

दत्तात्रेय संहिता

Substance—Palmleaf. No. of folia -26. Size—13 2"× 1.3". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Complete upto 20th Chapter. Condition— badly worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Pātapur Śāsana, Dt. Puri.

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयईश्वरसंवादे प्रथमः पटलः । इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे.....
.....मारणं नाम द्वितीयः पटलः । मोहनं नाम तृतीयः पटलः । स्तम्भनं नाम चतुर्थः पटलः ।
विद्वेषो नाम पञ्चमः पटलः । X X X वशीकरणं नाम सप्तमः पटलः ।

No colophon.

30

Catalogue No. T/91

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—66. Size—8.2"×1.5". Character—Oriya. Date of copy—C 19th century. Complete. Condition—good. 5 to 6 lines to a page. Findspot— Parlakhemindi, Dt. Ganjam.

No colophon.

31

Catalogu . T/115

दक्षिणकालिकापूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—144. Size—13.9"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—some folios are worm eaten. 4 lines to a page. Findspot Gadamanitri, Dt. Puri.

प्रणम्य कालिकायाश्च पादपद्मद्वयं ततः
संलिख्यते मयापूजा भक्तिमार्गप्रदर्शिनी ॥

There is a Gāyatrī Yantra with illustration at the beginning and different stotras at the end of the manuscript.

No colophon.

32

Catalogue No. T/106

दक्षिणकालिकावामाचारपूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—18. Size—11.1"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition— good. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Puri town.

इति श्रीदक्षिणकालिकावामाचारपूजासमाप्ता ।

No colophon.

33

Catalogue No. T/101

दीक्षासारतन्त्रम्

by चन्द्रशेखर

Substance—Palmleaf. No. of folia—32. Size—14.4"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete upto 4th Patala.

Condition—good. 5 lines to a page. Findspot— Sundargram area, Dt. Cuttack.

Beginning— श्रीकृष्णाय नमः ।

अथ दीक्षासारतन्त्रं लिख्यते ।

प्रणम्य सच्चिदानन्दं परिपूर्णं जगद्गुरुम् ।
श्रीचन्द्रशेखरोविप्रः सम्प्रदायान्वितः सुधीः ।
नानातन्त्रं समालोक्य .... ।
मन्त्राणां शोधनार्थाय दीक्षासारः प्रतन्यते ॥

X X X

इति श्रीदीक्षासारे चतुर्थः पटलः ।

34

Catalogue No. T 103

दुर्गापूजाविधिः

Substance—Palmleaf. No. of folia—68. Size—7.5"×1.1". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Incomplete. Condition—good. 3 to 4 lines to a page. Findspot— Village & P.O. Patia, Dt. Cuttack.

There are some folios containing Durgā Mahāśānti stotra according to Skandha purāṇa, Durgā Panjara stotra according to Mārkandeya Purāṇa towards the end of the manuscript

No colophon.

35

Catalogue No. T/117

दुर्गापूजाविधिः

Substance—Palmleaf. No of folia—92. Size—10.7"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—good. 3 to 4 lines to a page. Findspot— Village & P.O. Patia, Dt. Cuttack.

There are some folios containing the illustrations of Ājṇā Chakra, Viśuddha Chakra, Anāhata Chakra, Manipura Chakra, Svādhisthāna Chakra, Ādhāra Chakra and Vanadurgā Yantra towards the end of the manuscript.

No colophon.

36

Catalogue No. T/118

दुर्गापूजाविधिः

Substance—Palmleaf. No. of folia—75. Size—10.2"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition—both the sides are worm eaten. 3 lines to a page. Findspot— Village & P.O. Patia, Dt. Cuttack.

No colophon.

37

Catalogue No. T/82

दुर्गोत्सवचन्द्रिका

and others.

by रामचन्द्र गजपति

Substance—Palmleaf. No. of folia—126. Size—11.6"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 19th century. Complete. Condition – worm eaten. 4 to 6 lines to a page. Findspot— Gadamānitri, Dt Puri.

There are some folios containing Tāriṇī Sahasranāma, Tantra Ratna, Śyāmalā dandaka by Kālī Dash, Mahogratārā Kavacha, Ugratārā Kavacha, Tārā Kavacha and others towards the end of the manuscript.

No colophon.

38

Catalogue No. T/100

दुर्गोत्सवपूजा

Substance—Palmleaf. No. of folia—28. Size- 8.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 19th century. Incomplete. Condition—worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot— Village & P.O. Patia, Dt. Cuttack.

No colophon.

39

Catalogue No. B.S./64

निरुत्तरतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—50. Size—15.8"×4.1". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Name of scribe—Śrīnātha Śarmā. Incomplete. Condition- good. 8 to 9 lines to a page. Findspot — West Bengal.

इति श्रीनिरुत्तरतन्त्रे देवीश्वरसम्बादे पञ्चदशः पटलः ।

Colophon— आनीत बहुयत्नेन लिखितं च सुदुर्ल्लभं ।
निरुत्तरं महातन्त्रं श्रीनाथशर्म्मणापि च ॥

40

Catalogue No. B.S./83

निबन्धतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—492. size—18.6"×5.4". Character—Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Complete upto 33rd Patala. Condition—good. 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीनिबन्धे महातन्त्रे देवीश्वरसम्बादे शाक्तीयं नाम त्रयत्रिंशत पटलः ।

No colophon.

41

Catalogue No. B.S./63

पुरश्चरणरसोल्लासतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—48. Size—15.6"×4.2". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 10th Patala. Condition—good. 6 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीपुरश्चरणरसोल्लासतन्त्रे देवदेवीसम्बादे दशमः पटलः।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः।

42

Catalogue No. B S./61

बृहद्गौतमीयतन्त्रम्

Substance—Old Paper. No. of pages—132. Size—13.1"×3.1". Character—Old Bengali. Date of copy— C. 18th centuri. Complete upto 25th Patala. Condition—good. 5 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीगोविन्दवृन्दावने बृहद्गौतमीये परमरहस्ये पञ्चविंशति पटलः।

No colophon.

34

Catalogue No. B.S./

महानिर्वाणतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—108. size—16.8"×6.3". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 14th Ullāsa. Condition—good. 13 to 16 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीमहानिर्वाणतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमोत्तमे सर्वधर्मनिर्णयसारे श्रीमदाद्यासदाशिव-सम्बादे पूर्वकाण्डे शिवलिङ्गस्थापन·····नाम चतुर्दशोल्लासः।

समाप्तोऽयं पूर्वकाण्डः। गोपीनाथाय नमः।

44

Catalogue No. B.S./67

महानीलतन्त्रम्

Substance—Handmade paper. No. of pages—158. Size—16.1"×5.5". Character Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Complete up to 32nd Patala. Condition— good. 8 tc 9 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीमहानीलतन्त्रे हरगौरीसम्वादे द्वात्रिंशत्तम. पटलः ।

No colophon.

45

Catalogue No. B.S./58

मत्स्यसूक्तम्

by हलायुध

Substance—Handmade paper. No. of pages—201. Size—18"×5.4". Character— Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Complete. Condition— worm eaten. 8 to 10 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीहलायुधकृतं मत्स्यसूक्तं समाप्तम् ।

No colophon.

46

Catalogue No. B.S /65

मायातन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—36. size—13"×4". Character—Old Bengali. Date of copy— Sana 1298 Sāla. Name of scribe—Trilochan Āchārya. Complete upto 13th Patala. Condition—good. 8 to 10 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीमायातन्त्रे त्रयोदशः पटलः ।

Colophon -- इति सन् १२६८ साल तारिख १४ आश्विन । लिपि— त्रिलोचन आचार्य्य, सा : आँटपुरा । कालीपदे ममभक्तिरस्तु ।

47

Catalogue No. T/116

मुण्डमालातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—74. Size—6.5"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— Sana 1318 Sāla. Name of scribe— Madhu Praharāja. Complete. Condition— good. 4 to 6 lines to a page. Findspot— Patia, Dt. Cuttack.

इति श्रीमुण्डमालतन्त्रे कालीविद्यादारभ्य (?) कमलात्मिकायाः साधनशेषपर्य्यन्तं दशमहाविद्यायाः पूजाहोमजपबलिदानादिक्रमं सम्पूर्णम् ।

Colophon— ए पोथि श्री मधु प्रहराजङ्कर स्वहस्तलिपि । सन् १३१८ साल मकर १२ दिन भौमवारे शेषहेला ।

48

Catalogue No. B.S /85

मेरुतन्त्रम्

Substance—Handmade paper. No. of folia—636. Size—18 6"×6". Character— Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Complete upto 25th Prakāśa. Condition— good. 9 to 10 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीमहामायामहाकालानुमते मेरुतन्त्रे शिवप्रणीते दीपविधिः प्रकाशः पञ्चविंशः ।

No colophon.

49

Catalogue No. T/114

यन्त्रचिन्तामणिः

and others.

Substance—Palmleaf. No, of folia -137. Size—12.4" × 1.4". Character—

Oriya. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition— good. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Patpur Śāsana, Dt. Puri.

There are some folios containing Dakshina Kālikārgala, Kālikā kilaka, Jaganmangala Kavacha and Pādukā Panchaka stotra etc. at the beginning of the Manuscripts.

No colophon.

50

Catalogue No. B.S./74

राधातन्त्रम्

Substance— Handmade paper. No. of pages—132 Size—14.2"×5." Character— Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 37th Patala. Condition—good. 8 to 9 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीवासुदेवरहस्ये हरपार्वतीसम्बादे राधातन्त्रे सप्तत्रिंशत्तमः पटलः समाप्तः ।

No colophon.

51

Catalogue No. T 95

रामार्च्चनचन्द्रिका

by आनन्दवन

Substance—Palmleaf. No. of folia—94. Size—15.3"×1.2". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 5th Patala. Condition—good. 4 lines to a page. Findspot—Sundaragrama. Dt. Cuttack.

पटलैः पञ्चभिः प्रोक्ता श्रीरामार्च्चनचन्द्रिका ।
आनन्दवननाम्ना हि यतिना हरितुष्टये ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यं श्रीमन्मुकुन्दवनश्रीचरणशिष्यानन्दवन-विरचितायां श्रीरामार्च्चनचन्द्रिकायां पञ्चमः पटलः ।

No colophon.

52

Catalogue No. B.S./82

रुद्रयामलम्

Substance— Hand made paper. No of pages—494. Size -20.4"×4.5". Character— Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition— good but a few folios are illegible at the end of the manuscript. 7 to 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

No colophon.

53

Catalogue No. T/90

ललितासहस्रनाम

Substance - Palmleaf. No. of folia—50. Size—7.5"×1.5". Character— Oriya. Date of copy -- C. 19th century. Complete. Condition-- good. Name of scribe— Sadāsiva Rath. 5 to 6 lines to a page. Findspot— Paralakhemindi, Dt. Ganjam.

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे हयग्रीवागस्त्यसम्वादे श्रीललितारहस्य नाम साहस्र्यफलनिरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः।

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

Colophon— सदाशिवरथेन लिखितम्।

54

Catalogue No. B.S. 54

लिङ्गार्चनतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—70. Size—16 7"×5". Character— Old Bengali. Date of copy— C. 19th century. Name of scribe— Harischandra Śarmā. Complete upto 18th patala. Condition- good. 7 to 8 lines to a page. Findspot – West Bengal.

इति श्रीलिङ्गार्च्चनतन्त्रे देवीश्वरसम्वादे ज्ञानप्रकाशे अष्टादशः पटलः ।

Colophon— लिखक हरिश्चन्द्रशर्म्मा ।

55

Catalogue No. T/110

वनदुर्गाकल्पम्

Substance— Palmleaf. No. of folia—26. Size—16.4"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 19th century. Complete upto 15th patala. Condition good. 6 lines to a page. Findspot— Patapur Śāsana. Dt Puri.

इति श्रीगुह्यप्रोक्ते मन्त्रवरसंहितायां वनदुर्गाकल्पे पञ्चदशः पटलः ।

There are a few folios containing Mantra mahodathi by Mahidhara at the beginning of the manuscript.

No colophon.

56

Catalogue No. T/97

वनदुर्गापूजा

by रघुनाथदास

Substance—Palmleaf. No. of folia—24. Size—12.4"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition—good. 5 lines to a page. Findspot— Sundargram, Dt. Cuttack.

श्री नृसिंहाय नमः । ॐ नमोदुर्गायै ।

श्रीनृसिंहं नमस्कृत्य तन्त्राण्यालोक्ययत्नतः ।
लिख्यते वनदुर्गायाः पूजापद्धतिरुत्तमा ॥

X X X

इति श्रीरघुनाथदासविरचितायां पूजापद्धत्यां ईशानसंहितोक्तवनदुर्गापूजाविधिः ।

No colophon.

57

Catalogue No. T/111(b)

वनस्पतितन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—22. Size—14″ × 1.4″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 22nd chapter. Condition—good. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Pātapur Śāsana, Dt. Puri.

इति श्रीवनस्पतितन्त्रे प्रणवविनियोगनाम द्वाविंशतिः परिच्छेदः।

No colophon.

58

Catalogue No. B.S./60

वर्णभैरवतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—32. Size—16.2″ × 5.5″. Character—Bengali. Date of copy—Sana 1313 Sāla. Name of scribe—Hariśchandra Śarmā. Complete. Condition— good. 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीरामगोपालत ंपञ्चाननविरचितः वर्णभैरवः समाप्तः।

Colophon— लिखितं श्रीहरिश्चन्द्रशर्म्मणा सन १३१३, ७ पौष।

59

Catalogue No. B.S./78

विश्वसारतन्त्रम्

Substance—Old paper, No. of pages—362. Size—16.8″×5.5″. Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Incomplete. Condition—good. 8 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे भवानीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

No colophon.

60

Catalogue No. B.S /66

वीरतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages-62. Size—15.3"×4.8". Character—Old Bengali. Date of copy—19th century. Complete upto 15th Patala. Condition—good. 7 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीवीरतन्त्रे परमरहस्यसारे मन्त्रकोपव्याधिप्रतिकारनाम पञ्चदशः पटलः ।

No colophon.

61

Catalogue No. T/94

शक्तिप्रतिमाप्रतिष्ठा

and others.

Substance—Palmleaf. No. of folia—193. Size—16.9"×1.4". Character—Oriya. Date of copy—C. 17th century. Complete. Condition—badly worm eaten. 5 lines to a page. Findspot - Puri town.

इति श्रीविद्याकरपद्धत्यनुसारेण शक्तिप्रतिमासंस्कारपद्धतिः समाप्ता ।

There are some folios containing Sāvitrī Kalpa according to Visvāmitra, Gāyatrī Kalpa, Astākshara Brahma Vidyā by Devarshi Nārada, Astākshara māhātmya according to Narasimha Purāṇa, Nārāyaṇa Kavacha, Astākshara Gopāla mantra kalpa according to Sanat Kumāra Samhitā, Nāmatraya Kalpa according to Saura Samhitā, Tryamvaka Kalpa according to Vaśishtha, Dakshiṇāmūrti Kalpa, Tvaritā Kalpa, Bhuvanesvarī Kalpa according to Sammohana Tantra and Gopāla Kalpa according to Nārada, towards the end of the manuscript.

No colophon.

62

Catalogue No. B.S./55 (a)

शक्तिसङ्गमतन्त्रम्

Substance—Handmade paper. No. of pages—322. Size—19 2"×4.2". Character— Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete. Condition—good. 8 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीशक्तिसङ्गमतन्त्रे त्रिषष्ठितमः पटलः।

द्वितीयखण्डेः समाप्तः।

63

Catalogue No. T/93

शारदातिलकम्

with

यन्त्रमन्त्रप्रकाशिकाटीका

by जगद्धर

Substance—Palmleaf. No. of folia—90. Size—16.3"×1.4". Character—Oriya. Date of copy— C. 18th century. Name of scribe— Śankara Miśra. Complete. Condition—good. 5 to 6 lines to a page. Findspot—Sundargrāma, Dt. Cuttack.

इति श्रीमहामहोपाध्यायश्रीधर्म्माधिकारिणिकजगद्धरविरचिता शारदामन्त्रयन्त्रप्रकाशिका समाप्ता।

समाप्तोऽयंग्रन्थः।

Colophon— श्रीकपिलेश्वर त्राहिकर शङ्करमिश्रङ्कु ।

64

Catalogue No. T/92

शारदाशरदर्च्चनपद्धतिः

by गोदावर मिश्र

Substance—Palmleaf. No. of folia—126. Size— 12.6"×1.3". Character—

Oriya. Date of copy— C. 18th century. Complete. Condition— good. 5 lines to a page. Findspot—Gadamanitri, Dt. Puri.

There is a contents of the Śāradāsaradarchana Paddhati at the end of the manuscripts

No colophon.

65

Catalogue No. B.S./80

शाक्तानन्दतरङ्गिणी

Substance—Old paper. No. of pages—296. size—12.9" × 3.8", Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 18th Ullāsa. 7 lines to a page. Findspot— West Bengal.

इति श्रीशाक्तानन्दतरङ्गिण्यां होमनिर्णयोऽष्टादशः उल्लासः । सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः ।

No colophon.

66

Catalogue No. T/98

शीतलापूजा

According to मुण्डमालातन्त्रम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—83. Size—17"×1.2". Character—Oriya. Date of copy— C. 19th century. Complete. Condition— some folios are damaged. 3 lines to a page. Findspot—Kapileswar, Dt. Puri.

No colophon.

67

Catalogue No. T/87

श्यामारहस्यम्

by पूर्णानन्द गिरि

Substance—Palmleaf. No. of folia— 70. Size— 13.7"×1.1". Character—

Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 7th Parichheda. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Gadamanitri, Dt. Puri.

इति श्रीश्यामारहस्ये विद्यामाहात्म्यं नाम सप्तमः परिच्छेदः ।

No colophon.

68

Catalogue No. T./113

श्यामारहस्यम्

by पूर्णानन्दगिरि

Substance—Palmleaf. No. of folia--96. Size—14″ × 1.4″. Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 18th Parichheda. Condition— worm eaten. 5 lines to a page. Findspot—Pātpur Śāsana, Dt. Puri.

इति श्रीपूर्णानन्दपरमहंसगिरिविरचिते श्यामारहस्येऽष्टादशः परिच्छेदः ।

No colophon.

69

Catalogue No. B S./55 (b)

षट्शास्त्ररहस्य

Substance— Old paper. No. of pages—142. Character— Old Bengali. Date of copy— C. 18th century. Incomplete. Condition—good. 8 to 9 lines to a page. Findspot—West Bengal.

No colophon.

70

Catalogue No. B.S./70

सदाशिवतन्त्रम्

Substance—Old paper. No. of pages—30. Size—13.2″ × 3.4″. Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto Aushadha Prakarana. 7 to 8 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीसदाशिवतन्त्रे गौरीकञ्चुलिकायां औषधप्रकरणं समाप्तम् ।

71

Catalogue No. B.S./81

सर्वोल्लासतन्त्रम

by सर्वानन्दनाथ

Substance—Old paper. No. of pages—144. Size—15.3"×5.2". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 19th century. Complete upto 63rd Ullās. Condition—good. Findspot—West Bengal.

इति श्रीशर्वानन्दनाथविरचिते सर्वोल्लासे ब्रह्मज्ञानं नाम त्रिषष्ठ्युल्लासः।

No colophon.

72

Catalogue No. T/85

स्तोत्रकवचम्

Substance—Palmleaf. No. of folia—83. Size—13.5"×1.3". Character—Oriya. Date of copy—C. 18th century. Condition—badly worm eaten. 4 to 5 lines to a page. Findspot—Puri town.

No colophon.

73

Catalogue No. B.S./76

ज्ञानार्णव महारहस्य

Substance—Old paper. No. of pages—158. Size—16.2"×3.8". Character—Old Bengali. Date of copy—C. 18th century. Complete upto 17th Ullāsa. Condition—good. 6 lines to a page. Findspot—West Bengal.

इति श्रीज्ञानार्णवे महारहस्ये सर्वागमोत्तमे X X पञ्चखण्डे गुरुनामवासनादिकथनं नाम सप्तदशोल्लासः।

ॐ तारिणीचरणाम्भोजे मतिरात्मां सदामम।

No colophon

INDEX

A

Abhinava Yajātinagara XVI.
Ahichhatra VII.
Ahimukhī XXV.
Aind ī XXIX.
Alatigiri V.
Almorā VIII.
Amarakuda XL.XLI.
Amarasīṃha XXVIII.
Ambāpaḍā XL,XLI.
Ambikā XXI,XLVII.
Anantavāsudeva XXVI.
AnarghaRāghava nāṭaka XXIII.
Andhaka XVI.
Aṅgeśvara XLII.
Ankalgi IX.
Ankulage IX.
Annapūrṇā VIII,XXIII.
Aparājitā XVII XXV.
Arddhanārīśvara XXVI.
Arkakshetra XXV.
Asaṅga III.
Astaraṅga XXXIX.
Astādaśapītha XIII,XV.
Āchārasāra L.
Āndhra VIII,IX.
Āngirasa XVIII.
Āska V.
Āssam VI.
Āśvīna XX.

B

Bahiraṅgeśvara XXXVI.
Bahirdhvajī XIX.
Balabhadra XXIII,XXIV.
Balabhadra Miśra XLVII.
Baladeva XXI, XXII.
Balāngir XII.
Balarāma XX,XXII,XXVI.
Balasore XXXV.
Bāripadā L.
Baruṇāī XXV.
Bāselī XXV.
Bata Avakāśa XVII,XXV.
Belkhandi XXVII,XXXII,XXXIII.
Bellāry IX.
Bengal VI,XLIX.
Bezwadā XLIX.
Bhadrak IV.
Bhadrakālī IV.
Bhāgavata XXIV.
Bhagavatī XXV.
Bhairava XVIII.
Bhairavī XVIII.

Bhanjas V.
Bhārgavī XI.
Bhattārikā XLI.
Bhaumakara XII, XV, XVI.
Bherāghāt XII,
Bhimakeśarī XXXIV.
Bhimaratha XXXIV.
Bhoi dynasty XLIX.
Bhrāmarī XIX.
Bhubanesī L.
Bhubaneswar IV, XIV, XXV, XXVI, XXVII, XXIX, XXXIII, XXXV, XXXVI, XLVI.
Bhubaneswarī XLIX, LI.
Bhubanesvarī prakāśa L.
Bhubaneswarīpujā pallava XLIX
Binaya tosha Bhattachārya VI.
Bināyaka XLVI.
Bindusarovara XXXV.
Brahmā XIV, XIX, XXII, XXIX.
Brahma-Purāṇa XX, XXII, XXIII.
Brahma Nīlatantra XXVI.
Brahmāṇī XXV XXIX, XXXI, XXXII, XXXV.

C

Ceylon XLIV.
Chachakeī XLII.
Chāchesvarī XXV.
Chālukya XXVIII.
Chakradhara LI.
Chāmundā X, XVI, XXVI, XXIX, XXXI, XXXII, XXXIII, XXXV, XXXVI, XLI, XLII, XLIII.
Chandaghantā XXV, XLII, XLIII.
Chaṇḍī XXXII.
Chaṇḍī Purāṇa XLVIII.
Chaṇḍī temple XXXII.
Chanchikā IV, XXV.
Chaurāśī XXXVI, XLII, XLIII.
Chhāyā XXV.
Chitrakāriṇī XXXVI.
Chittagang VI.
Choḍaganga Deva XXIV.

D

Daksha Kanyā XIX.
Dakshaprajāpati XIX.
Dakshiṇa Chaṇḍī XXVI.
Daśāśvamedha Ghāta XXXII.
Deccan XVII.
Devakī XVII.
Devī Bhāgavata XXXVII.
Devī Durgā XX.
Devī Mahātmya XVI, XXVIII.
Dharma dhātu Vāgiśvara Mandala XXXVII.
Dharmakīrtti III.
Dharmasālā XXVII, XXXV.
Dharmaśāstra L.
Dhenkanal VII, XLVIII.
Divyasimha Deva XLV, XLVII.
Durgā IV, XVI, XVIII, XX, XXI, XXIV, XXVIII, XXXVIII, XXXIX, XL, XLI, XLII, XLV, XLVII, XLVIII, XLIX.
Durgāmādhava XXXVIII.
Durgāpujā XLIX.
Durgāvaraputra XLIX.
Durgāyajana Dipikā XLIV, XLV.

Durgeśvarī XXV.
Durgotsava XLIX.
Durgotsava Chandrikā XLIX.
Durgotsava Viveka XLIX.
Dvāravāsinī XXVI.
Dvija Trilochana XXV.

E

Ekāmra XIV.
Ekāmra Chandrikā XXV.
Ekāmra Kshetra XXXVI, XLVI.
Ekāmra Purāṇa XXV.
Ekānaṃśā XVIII, XIX, XX, XXI, XXII, XXIII, XXVI.
Ekānaṃśā Durgā XXI.
Ekāngā XXI.

G

Gadādhara Rājaguru L.
Gadagadā LI.
Gaja Lakshmī XXXV.
Gajapati IX, XL.
Gajapati Kapileśvara Deva XLVIII.
Gajapati Pratāparudra Deva XLVIII.
Gajapati Puruṣottama Deva XLVII.
Gandharvas XXXI.
Ganeśa XXX, XXXII, XXXIII, XXXV, XLV.
Gangādhāra stone inscription XXVIII.
Gaṅgeśvara LI.
Ganjam V, XI, XL.
Garuḍa XXXII, XXXVI.
Gaurī IV, XXI, XXIX, XXXVI.
Gaurī temple XXVI.
Gautamī XIX.
Gayāḍa Tunga VII.
Gayāsura XV.
Ghoral XXX.
Godāvara XLVIII, XLIX.
Godāvara Miśra XLVII.
Grāmeśvara XLII.
Guhadevapāṭaka XV.
Guheśvara Pāṭaka XV, XVI.

H

H. K. Mahtab XXXIII.
H. P. Śāstrī VI.
Hāḍabāī XXV.
Hadajali taluk IX.
Hāḍimāī XXV.
Halagondi IX.
Harachandī IV.
Harapārvatī XXXV.
Harihara Bhaṭṭāchārya XLVI.
Harihara Chaturaṅga XLVIII.
Hāritī XXIX.
Harivaṃśa XVIII, XX, XXII.
Hemarātri XXV.
Hengulā XXV.
Heruka XVII.
Hevajra Tantra V.
Hirāpur X, XI, XII.

I

Indra XXIX.
Indradyumna XXII.
Indrāṇi XXIX, XXXI, XXXV.
Iśvarā XIX.
Iśvarī XIX.

J

J.N. Banerjee XXXIV,XXXVI.
Jagaddhātrī XXII.
Jagadīśvara XLV.
Jagajjitā XXII.
Jagannātha VIII,XVIII,XXII, XXIII,XXIV,XXV,XXXVII, XLV,XLVIII,XLIX.
Jagannātha Āchārya XLV.
Jagannātha temple XXIV.
Jagatsimhapur XXXIV.
Jāgulāi XXV,XLII,XLIII.
Jāhajapur XIII.
Jājuagar XVI.
Jājapura IV,XIII,XIV,XV,XVI, XVII,XXVII,XXXII,XXXIII, XXXIV,XXXVIII.
Jālandhara VI.
Jālaśaila VI.
Jambukī XXV.
Janamejaya VI.
Jarenī XXV.
Jath taluk IX.
Jayā XIX.
Jayadeva XLVIII.
Jaya Durgā XXXIX,XLVIII.
Jayantī XIX.
Jhankaḍa IV.
Jñānārnava Tantra XIII,XIV,XV,
Jñānavallī tantra LI.

K

K.C. Panigrahi XXIII,XXVI, XXVII.
K.N. Mahapatra XI,XII,XIX,L.
Kābul IV.
Kādambas XVII.
Kaitarī XIX.
Kaitabhā XIX.
Kākatapura IV,XL,XLII.
Kalāhandi X,XXVII,XXXII, XLIII,XLIV.
Kālaghantā XXV.
Kālamukhī XXV.
Kālapati XXV.
Kālaprākāśa L.
Kālarātri X,XXV,XXVIII.
Kālasāra L.
Kālasurī XXV.
Kālī XXV.
Kālijāi XXV.
Kālikā XXV.
Kālikā Purāṇa VI,VII,XII.
Kaliṅga VIII.
Kāliñjarī XIX.
Kāmarūpa VI.
Kamsa XVIII,XX.
Kanakeśvarī XXV.
Kāpālika XXVI.
Kapālinī IV,XXVI.
Kapilasamhitā XV,XVII,XXV.
Kapilendra Deva XLIX.
Kapileśvara Pura XLII.
Karnātaka IX.
Kārtikeya XVII.
Karunāi XXV.
Kāśīnatha Ratha L.
Kathāsarit sāgara XX.
Katyāyani XVI,XX,XXI,XXV,XLII.
Kaumārī XXIX,XXXI,XXXII,XXXV.
Kaumudi Mahotsava XXI,XXII.

Kāverī XIX.
Kavi dindima Jivadevāchārya XLIX.
Keśava XIX.
Khiching IV,XXXVI.
Khila Harivamsa XX.
Kichakeśvarī IV.
Konārka IV.
Konkālī XXV.
Koormāchala VIII.
Kośala XXXVI.
Kotavī XIX.
Kotāma chandī XXV.
Kotheśvarī XXV.
Kṛshna XVIII,XIX.XX,XXI.
Kṛshna Miśra LI.
Kṛshṇā river XLIX.
Kṛshna Vāsudeva XXVI.
Kshetra śakti XVIII.
Kubjikā Tantra XV,XIV.
Kubu XVIII.
Kulārṇava Tantra XII.
Kulluka Bhatta III.
Kumāra Gupta I XXVIII.
Kumaun VIII.
Kundeśvara XXVII.
Kūrma avatāra VII.
Kūrmāchala VIII.
Kūrman VIII.
Kūrma svāmī VII.
Kurukullā XVII.

L

Lakshesvara LI.
Lakshman Sen XIX.
Lakshmī XXI.
Lalitagiri V,XVII.
Latāharaṇa XL,XLII.
Liṅgarāja XXX,XLVI.
Lord Gaurānga XVII.

M

M.M. Ganguli XXX.
M. Levi VI.
Madalā Panji XXIV,XXXIV.
Mādhava XXXVIII.
Mādhavānanda XXXIX.
Madhya Pradesha XII.
Maguni Mahāpatra XLV,XLVI.
Maguni Rajaguru Mahāpatra XLVI.
Mahābhārata XV,XVII,XVIII,XX, XLVIII.
Mahāmāhesvarāchārya Abhinava Gupta XXV.
Mahārāstra IX.
Mahāsāmanta Chāmundārasa IX.
Mahāśiva Gupta XVI.
Mahāvināyaka IV.
Mahāyogeśvara IX.
Māheśvarī XXV,XXIX,XXXI. XXXII,XXXV.
Mahiśāmarddinī XLIII.
Mahiśāmarddinī Durgā XLIII.
Mahiśāsura marddinī XXVI, XXXVIII.
Mahishasura marddinī Durga XL, XLI.
Major General Campbell XI.
Mandāra giri VIII.
Mangalā IV,XXV,XLII,XLIII,XLIV.

Mangalapur XL.
Marakamā XXV.
Mārenī XXV.
Mārichī XLV.
Mārkandeśvara XXVI,XXVII, XXXIII,XXXIV,XXXV.
Mārkandeśvara temple XXVII.
Mārkandeya Chandī XXXII.
Mārkandeya Purāṇa X,XVI,XVIII.
Mārkandeya sarovara XXXIV.
Mātṛkā XXXV.
Māyā XVIII,XXV.
Mayurāksha XVII.
Mayurbhanj XXXVI,XL.
Mohinī IV,XXVI,XXXV,XXXVI.
Mottian XXXVIII,XXXIX,XLII.
Mr. Beglar XXX,XXXII.
Mukteśvara XXXIII.
Murārī XXIII.

N

N.K. Sahoo VI.
Nāvigayā XV.
Nalaputrī XIX.
Nāmalingānuśāsana XXVIII
Nanda gopa XVIII,XX.
Nārasimhī XXIX,XXXV.
Nārāyanī XXXI,XXXII.
Navagraha XXX.
Nialī XL,XLI.
Nialīnuāgan XLII,XLIII.
Nidrā XVIII.
Nīlāchala XXIII.
Nīlatantra XV.
Nirrita XXIX.
Nishpanna yogāvatī XXXVII.

O

Oḍḍavisa XIV.
Oḍḍaisa XIV.
Oḍḍiyāna V,VI,VII,XIII.
Oḍḍiyān Pītha V.
Oḍra VI,VII,XII,LI.
Oḍradeśa LI.
Oḍra visaya VII,XIV.
Orissa XII,XIII,XIV,XXIII, XXVII,XXXII,XXXVII, XXXVIII,XL,XLIV,XLVII, XLVIII,XLIX,LI.
Orissa Historical Research Journal XLIV.

P

P.K. Gode . XLVII.
Pandit Gopināth Rao XXXIX.
Pārlākhimeḍi XV.
Parsurāmesvara XXX,XXXI, XXXVI.
Pārvatī XXXV.
Patna X.
Pateli XXV.
Patiā Killā IV.
Pingalā XXV.
Pītāmbara Mahāpātra LI.
Poona VIII.
Poteśvara Bhaṭṭa XLVIII.
Prāchī XXXVIII,XL,XLIV.
Prāchī Māhātmya XXV,XLII.
Prāchī river LI.

Prāchī valley XXXVI,XXVXIII, XXXIX,XL,XLI.
Prajāpati XIX.
Prajāpati Brahma XX.
Pratāpa Narasimha Deva XLVIII.
Pratāparudra Deva XLVII,XLIX.
Prof G.S. Dash XLIII.
Pṛthvī Mahārāja XV.
Puri IV,VIII,XI,XII,XIV, XVIII,XXII,XXVI,XXXII, XXXIII,XXXIV,XXXV,L.
Pūrṇa Devī VIII.
Pūrṇagiri V,VII,VIII,XIII.
Pūrṇa Koti VIII.
Purṇaśaila VI.
Puruṣottama XIX,XLV.
Puruṣottama Deva XIX,XLIX.
Puruṣottama Jagannātha XXII.
Purusottama Kalyānasūtra XXIV.
Puruṣottama Kshetra XVII,XXIII, XLV.
Puruṣottama Māhātmya XX.
Puruṣottama Rahasya XXI.

R

R.D Banerjee XXXIII,XXXIV.
R.M. Nāth VI.
R.P. Chanda XVI,XXXIII, XXXIV.
Raghunātha Dāsha LI.
Rājaguru Karīdindima Jīvadevāchārya L.
Rājapadar XXXII.
Raktabīja X.
Rāmachandī XXV.
Rāmachandra Deva I XLIX,L.
Rāmanṛpati L.
Rāmāyanī XXVI.
Rāmeśvara XL.
Rāmeśvara Garha XL.
Rānipur Jharial X,XI,XII.
Ratnagiri V,XVII.
Raudrī XXIX.
Rigvedi cage XXVIII.
Rudra XXI.
Rudrayāmala XIII,XXIV,XXV.

S

Sachī XXI.
Sailo LI.
Śākāmbarī XXV.
Śakti IV,XVII,XXI.
Samalāi XXV.
Samaleśvarī IV.
Sambalpur IV.
Sambatsara Pradīpa XLVI.
Sambhunātha Kar XIII.
Sanlapur XXXIV.
Śankarāchārya XIII,XV.
Śāntikara Deva XV.
Sapanachetī XXV.
Saptamātṛka XVII,XXV,XXVI, XXII,XXVIII,XXIX, XXX,XXXI,XXXII,XXXIII, XXXIV,XXXV,XXXVI.
Saptaśati chandī XXVIII.
Sāradāśaradarchana Paddhati XLVII,XLIX.
Sarakamā XXV.
Sāralā IV,XVIII,XXV,XLVIII.

Sāralā Chandī XXV.
Sāralā Dāsa XXV, XLVIII.
Sarpamukhī XXV.
Sarvagā XIX.
Satārā IX.
Satī XIX.
Sāvitrī XXV.
Śergarha XXXV.
Shashthī XIX.
Siddha pītha XV.
Śikharesvara XLVIII.
Sīmāchalam VIII.
Śiśireśvara XXVI.
Śiva IV, V, XII, XVI, XLII, XLV.

T

Tabaquat-i-Nasiri XVI.
Talachera VI, VII.
Tantra Chintāmaṇi XLVIII.
Tantrasāra VIII.
Tantric Buddhism XVII.
Tāpusī XIX.
Tārā XVII.
Tārānātha III
Tāraśunī XXV.
Tareṇī XXV.
Tāreṇīkulasudhātaraṅgiṇī XLIV, XLVI.
Tarikh-i-Firozsahi XVI.
Tel XXXII.
Tel Mahānadī XXXVI.
Tīrtha Chintāmaṇī XXV.
Titlagarha XII, XXVII, XXX.
Trailokya Chāriṇī XIX.
Trikāndaśeṣa XIX.
Tribhuvana Mahādevī XVI.
Tulsīpur XXXVI, XLII.
Tustikara Deva IV.
Truti khaī XXV.

U

Udaya giri V, XVII.
Uddiśā XIV.
Uddiśañāthātmaka VIII.
Uddiyāna VI, VII, VIII, XIII, XIV.
Uddyāna Galabī VII.
Ugrachāmuṇḍā IX.
Ugratārā XVII.
Unmatta Keśarī XV.
Utaī XXXII.
Utkala VI, XIV, XV, XXXII, XLV.
Utkala deśa XLV.
Utkala Khanda XXII, XXIII.
Utpala XXIX.
Uttareśvara XXVI.
Uttaratoṣālī VI, VII.

V

V. Karambelkar X.
Vabhravī XIX.
Vachaspati Miśra XXV.
Vaitaraṇī XIII, XV.
Vaishṇava XXIII.
Vaitāla XXVI.
Vajrayāna XVII, LII.
Vāmana XXVIII.
Vanadurgā XL.
Vanadurgā Pūjā LI.
Varāha XXVIII.

Varāha Purāna XVI.
Vārāhī IV,XXXVII.
Vārālokā XIX.
Vārendra mandala VII.
Varddhana XLV,L.
Varddhana Mahāpātra XLIX.
Vāseli XXV.
Vāsudeva XVIII.
Vāsudeva Ratha L.
Vatsadevi XVI.
Vidyāpaddhati LI.
Vijayā XIX,XXV.
Vikramāditya IX.
Vilankā Rāmāyaṇa XLVIII.
Vimalā IV,XVIII,XXIII, XXIV,XXV.
Vindhyavāsinī Durgā XXI.
Vindusarovara XXVI.
Vīra Harekrushṇapur L.
Virajā IV,XIV,XV,XVI, XVII,XXV,XXXVIII.
Vīrakeśarī Deva XLVII.
Vishṇu IV,VIII,XVIII.
Vishṇu Kṛsbṇa XXI.
Vishṇu Purāṇa XV.
Visva Varmau XVII.
Vrata Prakāśa L.

Y

Yādava XX,XXI.
Yādavī XIX,XX.
Yamagarta mandala VI,VII.
Yamasvasā XIX.
Yāmī XXIX.
Yaśatilaka IX.
Yaśodā XVIII.
Yayāti II XVI.
Yayātinagara XVI.
Yayātinagara of Kosala XVI.
Yogachintāmaṇi XLVII.
Yogamāyā XXI.
Yogesvarī XXIX.
Yoginī IX,X,XI,XII.
Yoginīpītha XIII.
Yuanchawang VI.

W

Winternitz VI.
Wu-tah-ang-na VI.

Printed by :— **Sri P. K. Mahapatra, B. A. (Hons.)**
AT SRI SARADA PRESS,
BHUBANESWAR - 2

SARADA PRESS
BHUBANESWAR